

॥ अथ अष्टाध्यायी प्रारभ्यते ॥

अ० ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीपाणिनीयाय नमः ॥ येनाक्षरसमाधायमधिगम्य महेश्वरात् ॥ कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनेये नमः ॥ १ ॥
येन धोता गिरः पुंसां विमलैः शब्दवारिभिः ॥ तमश्चाज्ञानजमभिन्नन्तस्मै पाणिनेये नमः ॥ २ ॥ योगेन चित्तस्य पदेन वाचाम्मलंशरी
रस्य च वैद्यकेन ॥ योपाकरोतम्प्रवरमुनीनाम्यतश्चुलिम्राञ्जलिरनतोऽस्मि ॥ ३ ॥ अइउण् १। कल्क् २। एओङ् ३। ऐऔ
चू ४। हयवरदा ५। लण् ६। जमडणनम् ७। झभज् ८। घढधष् ९। जवगडदश १०। खफचठथचटतव् ११। कपय् १२।
शषसर १३। हल् १४। इति मस्याहारस्त्राणि ॥ वृद्धिर्देव १। १। १। अदेङ्गुणः १। १। २। इको गुणवृद्धी १। १। ३। नधातुलोप
आर्द्धधातुके १। १। ४। किति च १। १। ५। दीधीवेवीटम् १। १। ६। हलोचनन्तः संयोगः १। १। ७। मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः
१। १। ८। तुल्यास्यप्रयत्नसवर्णम् १। १। ९। दीनाञ्जलौ १। १। १०। ईदूदेदिवचनम्प्रगृह्यम् १। १। ११। अदसोमात् १। १। १२। शो।
१। १। १३। निपातएकाजनाड् १। १। १४। ओत् १। १। १५। सम्बुद्धौ शाकल्पयेतावनार्थे १। १। १६। उजः १। १। १७। ऊं १। १। १८। न
दूतौ च संप्रत्यर्थे १। १। १९। दोधाघदाप् १। १। २०। आद्यन्तवदेकस्मिन् १। १। २१। तरप्प्रमयौ घः १। १। २२। बहुगणवतुडतिर
ङ्गा १। १। २३। णान्तावट् १। १। २४। डति च १। १। २५। कृत्तवत्तनिष्ठा १। १। २६। सर्वादीनि सर्वनामानि १। १। २७। विभाषादिवक्तः
संबहुव्रीहौ १। १। २८। नबहुव्रीहौ १। १। २९। तृतीया समासे १। १। ३०। द्वन्द्वे च १। १। ३१। विभाषाजसि १। १। ३२। प्रथमचरमतया
त्यार्द्धकतिपयनेमाश्च १। १। ३३। पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरायराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम् १। १। ३४। स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् ॥
१। १। ३५। अन्तरंबहिर्योगोपसंख्या नयोः १। १। ३६। स्वरदिनिपातमव्ययम् १। १। ३७। तद्धितश्च सर्वविभक्तिः १। १। ३८। ह

जन्तः। १। १। ३६। क्ता तो सु क सु नः। १। १। ४०। अ व यी भा व श्च। १। १। ४१। शि सर्व नाम स्या न म्। १। १। ४२। सु ड न पुं स क स्य। १। १। ४३। न
वेति वि भा षा। १। १। ४४। दु ग्य णः स म्प्र सा र ण म्। १। १। ४५। आ च नौ ट कि तौ। १। १। ४६। मि द चो न्त्वा त्परः। १। १। ४७। ए च ड् प्र स्वा देशे॥
१। १। ४८। ष ष्टी स्थाने यो गा। १। १। ४९। स्थाने न्तर त मः। १। १। ५०। उ र ण र परः। १। १। ५१। अ लो न्त्स स्य। १। १। ५२। डि च। १। १। ५३। अ
देः पर स्य। १। १। ५४। अ ने का ल शि त्स्व र्ब स्य। १। १। ५५। स्थानि व द्वा देशे न ल्वि धौ। १। १। ५६। अ चः पर स्मि न्पूर्व वि धौ। १। १। ५७। न
दा न्ति र्वच न व रे य लो प स्वर स व ण्ण नु स्वार दी र्घ जश्च वि धिषु। १। १। ५८। द्वि र्वच ने चि। १। १। ५९। अ दर्श ने ले पः। १। १। ६०। म त्
य स्य लु क्त्सु लु पः। १। १। ६१। प्र त्य य लो पे प्र त्य य ल क्ष ण म्। १। १। ६२। न लु म ता ड् स्य। १। १। ६३। अ चो न्त्वा दि टि। १। १। ६४। अ लो
न्त्वा त्पूर्व उ प धा। १। १। ६५। त स्मि न्नि ति नि र्दि ष्टे पूर्व स्य। १। १। ६६। त स्मा दि त्पु त र स्य। १। १। ६७। स्वरूपं शब्द स्या शब्द स न्ज्ञा। १। १।
६८। अ णु दि त्स्व र्ण स्य चा प्र त्य यः। १। १। ६९। त पर स्त त्काल स्य। १। १। ७०। आ दि रन्त्ये न स हे ता। १। १। ७१। ये न वि धि स्त द न्त स्य
। १। १। ७२। वृ द्धि र्भ्य स्या चा मा दि स्त द्द्व म्। १। १। ७३। त्य द्वा दी नि च। १। १। ७४। ए ड् प्रा चा न्देशे। १। १। ७५। वृ द्धि रा च्य न्त व द्द्व यी भा
वः प्र त्य य स्य लु क् पञ्च द श ॥ ॥ इति प्रथ मा ध्या य स्य प्रथ मः पा दः ॥ १॥ ॥ गा ड् कु ल दि भ्यो जि णा डि त् ॥ १। २। १। वि ज ड् ॥
१। २। २। वि भा षो र्णोः। १। २। ३। सार्व धा तु क म पि त्। १। २। ४। अ सं यो गा ल्ति ट्कि त्। १। २। ५। इ न्धि भ व ति भ्या च्च १। २। ६। म ड् म
द गु ध कु ष क्ति श व द व सः त्क्ता। १। २। ७। रु द वि द मु ष ग हि स्व पि प्र च्छः सं श्च। १। २। ८। इ को ष ल्। १। २। ९। ह ल न्ता च्च। १। २। १०। लि ड् सि चा वा
त्म ने प देषु। १। २। ११। उ श्च। १। २। १२। वा ग मः। १। २। १३। ह नः सि च्च। १। २। १४। य मो ग न्ध ने। १। २। १५। वि भा षो प य म ने। १। २। १६। स्था च्चो रि

अ- १।१।२१७॥ नक्कासेट्। १।२।१८। निष्ठाशीङ्। स्विदिमिदिद्विदिधषः। १।२।१९। मषस्ति। तिष्ठायाम्। १।२।२०। उदुपधाद्वादादिकर्मणोरन्यत
२ रस्याम्। १।२।२१। पूङ्। क्काच। १।२।२२। नोपधात्यफान्नाहा। १।२।२३। वञ्चिलुञ्च। तश्च। १।२।२४। त्विमिषिहृषेकाश्वपस्य। १।२।२५।
रलोप्युपधाद्लादेः सञ्च। १।२।२६। ऊकालोज्झस्वदीर्घप्लुतः। १।२।२७। अचञ्च। १।२।२८। उच्चैरुदात्तः। १।२।२९। नीचैरनुदात्तः।
१।२।३०। समाहारः स्वरितः। १।२।३१। तस्यादित उदात्तमर्द्धह्रस्वम्। १।२।३२। एकश्रुतिदूरात्सम्बुद्धौ। १।२।३३। यज्ञकर्मण्यजपन्पू
ङ्गसामस्तु। १।२।३४। उच्चैस्तं वावषङ्कारः। १।२।३५। विभाषा छन्दसि। १।२।३६। नसुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य लृदात्तः। १।२।३७। देव
ब्रह्मणोरनुदात्तः। १।२।३८। स्वरितात्संहितायामनुदात्तानाम्। १।२।३९। उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः। १।२।४०। अष्टक एकाल्प्र
त्ययः। १।२।४१। तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः। १।२।४२। प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्। १।२।४३। एकविभक्तिचापू
र्वनिपाते। १।२।४४। अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रादिपदिकम्। १।२।४५। कृतद्वितसमासाश्च। १।२।४६। ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिक
स्य। १।२।४७। गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य। १।२।४८। लुक्तद्वितलुकि। १।२।४९। इद्गोण्याः। १।२।५०। लुपियुक्तवद्वाक्तिवचने। १।२।५१।
विशेषणानाञ्जाजातेः। १।२।५२। तदशिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात्। १।२।५३। लुब्धो ग्राह्यमानात्। १।२।५४। योगप्रमाणे च तदभावेदर्श
नस्यात्। १।२।५५। प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्यान्यप्रमाणत्वात्। १।२।५६। कालोपसर्जने चतुर्थम्। १।२।५७। जात्याख्यायामेक
स्मिन् बहुवचनमन्यतरस्याम्। १।२।५८। अस्मदो द्वयोश्च। १।२।५९। फलुनी प्रोष्ठपदानाञ्च नक्षत्रे। १।२।६०। छन्दसि पुनर्वसोरेक
वचनम्। १।२।६१। विशाखयोश्च। १।२।६२। तिष्यपुनर्वसोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विवचनं नित्यम्। १।२।६३। सरूपाणामेक

एकविभक्तौ। १।२।६४। वृद्धौ पूनातल्लक्षणश्चेदेवविशेषः। १।२।६५। स्त्रीपुंवच्च। १।२।६६। पुमान्स्त्रिया। १।२।६७। भ्रातृपुत्रौस्वसृ
हितभ्याम्। १।२।६८। नपुंसकमनपुंसकेनैकवचास्यान्यतरस्याम्॥ १।२।६९। पितामात्रा। १।२।७०। श्वशुरः श्वश्रुः। १।२।७१। त्यदा
दीनिसर्वैर्नित्यम्। १।२।७२। ग्राम्यपशुसंघेष्वतरुणेषु स्त्री। १।२।७३। गाढुः टाद्युदुपधादृक् शुन्दसिपुनर्वस्वोस्त्रयोदश॥
॥ इति प्रथमाध्यायस्य द्वितीयपादः॥ २॥ ॥ भूवादयो धातवः। १।३।१। उपदेशेजनुनासिक इत्। १।३।२। हलन्त्यम्। १।३।३।
नविभक्तौ तुस्माः। १।३।४। आदिर्जिदुडवः। १।३।५। षः प्रत्ययस्य। १।३।६। चुट्। १।३।७। लशक्वतद्धिते। १।३।८। ण्यलोपः। १।३।९।
यथासङ्गमनुदेशः समानाम्। १।३।१०। स्वरितेनाधिकारः। १।३।११। अनुदात्तङित आत्मनेपदम्। १।३।१२। भावकर्मणोः
१।३।१३। कर्तरि कर्मव्यतिहारे। १।३।१४। नगतिहिंसार्थेभ्यः। १।३।१५। इतरेतरान्योन्योपदाच्च। १।३।१६। नेर्विशः। १।३।१७। परि
व्येभ्यः क्रियः। १।३।१८। विपरभ्याञ्जेः। १।३।१९। आङोदोनास्यविहरणे। १।३।२०। क्रीडोतुसंपरिभ्यश्च। १।३।२१। समवप्रवि
भ्यःस्थः। १।३।२२। प्रकाशनस्येयाख्ययोश्च। १।३।२३। उदो नृद्धकर्मणि। १।३।२४। उपान्मन्त्रकरणे। १।३।२५। अकर्मकाच्च। १।३।२६।
उद्भिथान्तपः। १।३।२७। आङोयमहनः। १।३।२८। समोगमृच्छिप्रच्छिस्वरत्यतिश्चुविदिभ्यः। १।३।२९। निससुपविभ्योद्धः। १।३।
३०। स्पृह्यामाडः। १।३।३१। गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु क्तञः। १।३।३२। अधेः प्रसहने॥
१।३।३३। वैः शब्दकर्मणः। १।३।३४। अकर्मकाच्च। १।३।३५। संमानोत्संजनाचार्यकरणज्ञानभूतिविगणनच्ययेषु नियः। १।३।३६।
कर्तृस्थेचाशरीरेकर्मणि। १।३।३७। वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः। १।३।३८। उपपराभ्याम्। १।३।३९। आङ उद्गमने। १।३।४०। वैः पादवि

अ० रणे। १। ३। ४१। प्रोपाभ्यां समर्थोभ्याम्। १। ३। ४२। अनुपसर्गद्वा। १। ३। ४३। अपह्रवेजः। १। ३। ४४। अकर्मकाच्च। १। ३। ४५। संप्रतिभ्यामन
३ ध्याने। १। ३। ४६। भासनोपसम्भाषाज्ञानयत्नविमत्सुपमन्त्रणेषुवदः। १। ३। ४७। व्यक्तवाचांसमुच्चारणे। १। ३। ४८। अनोरकर्मकात्
। १। ३। ४९। विभाषाविप्रलापे। १। ३। ५०। अवाहः। १। ३। ५१। समःप्रतिज्ञानो। १। ३। ५२। उदश्चरः सकर्मकात्। १। ३। ५३। समस्तृतीया
युक्तात्। १। ३। ५४। दाणश्चसाचेच्चतुर्थ्यर्थे। १। ३। ५५। उपाद्यमस्वकरणे। १। ३। ५६। ज्ञाश्चस्मृदृशांसनः। १। ३। ५७। नानोर्ज्ञः। १। ३। ५८
प्रत्याङ्भ्यांश्रुवः। १। ३। ५९। शदेःशितः। १। ३। ६०। म्रियतेर्लुङ्-लिङोश्च। १। ३। ६१। पूर्ववत्सनः। १। ३। ६२। आम्प्रत्ययवत्कृजोनुप्रयो
गस्य। १। ३। ६३। प्रोपाभ्यांयुजेरयज्ञयात्रेषु। १। ३। ६४। समःस्त्रुवः। १। ३। ६५। भुजोनवने। १। ३। ६६। णेरणौयत्कर्मणौचेत्सक
र्तानाध्याने। १। ३। ६७। भीस्मोर्हेतुभये। १। ३। ६८। गृधिवज्रयोःप्रलम्भने। १। ३। ६९। लियःसम्माननशालीनीकरणयोश्च। १। ३। ७०।
मिथ्योपपदात्कृजोभ्यासे। १। ३। ७१। स्वरितजितःकर्तृभिर्प्रायेक्रियाफले। १। ३। ७२। अपाह्रदः। १। ३। ७३। णिवश्च। १। ३। ७४। समुद
ङ्भ्योपमोग्रन्थे। १। ३। ७५। अनुपसर्गज्ज्ञः। १। ३। ७६। विभावोपपदेनप्रतीयमाने। १। ३। ७७। शेषात्कर्तरिपरस्मैपदम्। १। ३। ७८।
नुपराभ्याङ्-जः। १। ३। ७९। अभिप्रत्यतिभ्यःक्षिपः। १। ३। ८०। माह्रहः। १। ३। ८१। परेर्मषः। १। ३। ८२। व्याङ्-परिभ्योरमः। १। ३। ८३। उपाने
। १। ३। ८४। विभाषाकर्मकात्। १। ३। ८५। बुधसुधनशजनेङ्-प्रुद्-सुभ्योणेः। १। ३। ८६। निगरणचलनार्थेभ्यश्च। १। ३। ८७। अणावक
र्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्। १। ३। ८८। नपादम्याङ्-माङ्-सपरिसुहरुचिन्तितिवदवसः। १। ३। ८९। वाक्यषः। १। ३। ९०। द्यु-द्यौलुङि-
१। ३। ९१। ह्रस्वस्यसनोः। १। ३। ९२। लुटिचकृपः। १। ३। ९३। भूवादयःक्रीडोनुवेःपादम्रियतेःमाह्रहस्वयोदश ॥ ॥ इतिप्रथमाध

यस्य तृतीयपादः ॥ ३॥ ॥ आकडाएदेकासंज्ञा ॥ १॥ ४॥ १॥ विप्रतिषेधे परं कार्यम् ॥ १॥ ४॥ २॥ पुरस्त्राख्यौ नदी ॥ १॥ ४॥ ३॥ नेयदुःखदुःस्थानाव
स्त्री ॥ १॥ ४॥ ४॥ वामि ॥ १॥ ४॥ ५॥ डिति ह्रस्वश्च ॥ १॥ ४॥ ६॥ शेषो घ्यसखि ॥ १॥ ४॥ ७॥ पतिः समास एव ॥ १॥ ४॥ ८॥ वष्टी युक्तश्चुं दसिवा ॥ १॥ ४॥ ९॥
ह्रस्वं लघु ॥ १॥ ४॥ १०॥ संयोगे गुरु ॥ १॥ ४॥ ११॥ दीर्घञ्च ॥ १॥ ४॥ १२॥ यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादिप्रत्ययेङ्गम् ॥ १॥ ४॥ १३॥ सुप्तिङन्तम्यदम् ॥
१॥ ४॥ १४॥ नः क्ये ॥ १॥ ४॥ १५॥ सिति च ॥ १॥ ४॥ १६॥ स्वादिषसर्वनामस्थाने ॥ १॥ ४॥ १७॥ यचिभम् ॥ १॥ ४॥ १८॥ तसौ मत्वर्थे ॥ १॥ ४॥ १९॥ अय
समादीनि च्छन्द्सि ॥ १॥ ४॥ २०॥ बहुषु बहुवचनम् ॥ १॥ ४॥ २१॥ द्वे कयोर्द्विवचनैकवचने ॥ १॥ ४॥ २२॥ कारके ॥ १॥ ४॥ २३॥ ध्रुवमपाये पाद
नम् ॥ १॥ ४॥ २४॥ भीनार्थानां भयहेतुः ॥ १॥ ४॥ २५॥ परज्जेरसोढः ॥ १॥ ४॥ २६॥ चारणार्थानामीप्सितः ॥ १॥ ४॥ २७॥ अन्तर्द्वयेनादर्शनमिच्छ
ति ॥ १॥ ४॥ २८॥ आख्यातोपयोगे ॥ १॥ ४॥ २९॥ जनिकर्तुः प्रकृतिः ॥ १॥ ४॥ ३०॥ भुवः प्रभवः ॥ १॥ ४॥ ३१॥ कर्मणायमभिप्रेतिससंप्रदानम् ॥ १॥
४॥ ३२॥ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ॥ १॥ ४॥ ३३॥ स्ना घह्रुड्स्याशपां जीप्यमानः ॥ १॥ ४॥ ३४॥ धारेरुत्तमर्णः ॥ १॥ ४॥ ३५॥ स्पृहेरीप्सितः ॥ १॥ ४॥
३६॥ कुधद्रुहेर्ष्यास्यार्थानां यंप्रतिकोपः ॥ १॥ ४॥ ३७॥ कुधद्रुहोरुपस्पृष्टयोः कर्म ॥ १॥ ४॥ ३८॥ एधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः ॥ १॥ ४॥ ३९॥ प्र
त्याङ्भ्यां शुवः पूर्वस्य कर्ता ॥ १॥ ४॥ ४०॥ अनुप्रतिगृणश्च ॥ १॥ ४॥ ४१॥ साधकतमङ्कुरणम् ॥ १॥ ४॥ ४२॥ दिवः कर्म च ॥ १॥ ४॥ ४३॥ परिक्लप
णे संप्रदानमन्यतरस्याम् ॥ १॥ ४॥ ४४॥ आधारेधिकरणम् ॥ १॥ ४॥ ४५॥ अधिशीङ्स्यासाङ्कर्म ॥ १॥ ४॥ ४६॥ अभिनिविशश्च ॥ १॥ ४॥ ४७॥
उपान्वध्याङ्गसः ॥ १॥ ४॥ ४८॥ कर्तुरीप्सिततमङ्कर्म ॥ १॥ ४॥ ४९॥ तथायुक्तञ्चानीप्सितम् ॥ १॥ ४॥ ५०॥ अकथितञ्च ॥ १॥ ४॥ ५१॥ गतिवु
द्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्मकामणिकर्तृसिणौ ॥ १॥ ४॥ ५२॥ ह्रकोरन्यतरस्याम् ॥ १॥ ४॥ ५३॥ स्वतन्त्रः कर्ता ॥ १॥ ४॥ ५४॥ तत्प्र

अ० योजकोहेतुश्च। १।४।५५। प्राप्तीश्वरान्निपाताः। १।४।५६। चादयोसत्त्वो। १।४।५७। प्रादयः। १।४।५८। उपसर्गः क्रियायोगे। १।४।५९। गति
४ श्च। १।४।६०। उर्यादिचिडावश्च। १।४।६१। अनुकरणश्चानितिपरम्। १।४।६२। आदरानादरयोस्सदसती। १।४।६३। भूषणेलम्। १।
४।६४। अन्तरपरिग्रहे। १।४।६५। कणेमनसीश्रद्धाप्रतीघाते। १।४।६६। पुरोऽव्ययम्। १।४।६७। अस्तश्च। १।४।६८। अछगत्यर्थवदे
षु। १।४।६९। अदोऽनुपदेशे। १।४।७०। तिरोन्तर्द्वौ। १।४।७१। विभाषाकृजि। १।४।७२। उपाजेऽन्वाजे। १।४।७३। साक्षात्प्रभृतीनिच। १।
४।७४। अनत्याधानउरसिमनसी। १।४।७५। मध्येपदेनिवचनेच। १।४।७६। नित्यंहस्तेपाणानुपयमने। १।४।७७। प्राध्वंबन्धने। १।
४।७८। जीविकोपनिषदावोपम्ये। १।४।७९। तेप्राग्धातोः। १।४।८०। छन्दसिपरेपि। १।४।८१। व्यवहिताश्च। १।४।८२। कर्मप्रवच
नीयाः। १।४।८३। अनुर्लक्षणे। १।४।८४। तृतीयार्थे। १।४।८५। हीने। १।४।८६। उपोधिकेच। १।४।८७। अपपरीवर्जने। १।४।८८। आ
ङ्ग्योदावचने। १।४।८९। लक्षणेऽथमूलाख्यानभागवीप्सासुप्रतिपर्यन्तवः। १।४।९०। अभिरभागे। १।४।९१। प्रतिःप्रतिनिधिप्र
दानयोः। १।४।९२। अधिपरी अनर्थकौ। १।४।९३। सुःपूजायाम्। १।४।९४। अतिरतिक्रमणेच। १।४।९५। अविःपदार्थसंभाव
त्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु। १।४।९६। अधिरीश्वरे। १।४।९७। विभाषाकृजि। १।४।९८। लःपरस्मैपदम्। १।४।९९। तडानावात्मने
म्। १।४।१००। तिङ् स्त्रीणित्रीणिप्रथममध्यमोत्तमाः। १।४।१०१। तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः। १।४।१०२। सुपः। १।
१०३। विभक्तिश्च। १।४।१०४। युष्मद्युपपदेसमानाधिकरणेऽन्यपिमध्यमः। १।४।१०५। प्रहासेचमन्योपपदेमन्यतेरुत्तमएकव
च। १।४।१०६। अस्मद्युत्तमः। १।४।१०७। शेषेप्रथमः। १।४।१०८। परःसन्निकर्षःसंहिता। १।४।१०९। विरामोवसानम्। १।४।११०।

कडागद्वहुधनुप्रतिगृणऊर्यादिच्छन्दसितिज्ञेदश॥ ॥००॥ ॥इतिप्रथमाध्यायस्यचतुर्थःपादः॥१॥४॥प्रथमोऽध्यायः॥१॥
समर्थःपदविधिः॥२॥१॥१॥सुबामन्त्रितेपराङ्गवत्स्वरे॥२॥१॥२॥प्राक्कृडात्समासः॥२॥१॥३॥सहसुपा॥२॥१॥४॥अव्ययीभावः॥२॥१॥५॥
अव्ययविभक्तिसमीपसमद्विव्यह्यर्थाभावात्स्यासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययोगपक्षसादृश्यसम्प्रतिसाकल्या
न्तवचनेषु॥२॥१॥६॥यथासादृश्ये॥२॥१॥७॥यावदवधारणे॥२॥१॥८॥सुप्रतिनामात्रार्थे॥२॥१॥९॥अक्षशलाकासङ्ख्याःपरिणा॥२॥१॥
१०॥विभाषा॥२॥१॥११॥अपपरिवहिरंचवःपञ्चम्या॥२॥१॥१२॥आङ्गुर्यादाभिविद्ध्याः॥२॥१॥१३॥लक्षणेनाभिप्रतीआभिमुख्ये॥२॥
१॥१४॥अनुर्यत्समया॥२॥१॥१५॥यस्यचायामः॥२॥१॥१६॥तिष्ठद्गुप्रभृतीनिचा॥२॥१॥१७॥पारेमध्येषष्ठ्यावा॥२॥१॥१८॥सङ्ख्यावंश्ये
ना॥२॥१॥१९॥नदीभिश्च॥२॥१॥२०॥अन्यपदार्थेचसंज्ञायाम्॥२॥१॥२१॥तत्पुरुषः॥२॥१॥२२॥द्विगुश्च॥२॥१॥२३॥द्वितीयाश्रितातीतपति
तगतात्यस्यप्राप्तापन्नैः॥२॥१॥२४॥स्वयङ्केना॥२॥१॥२५॥खट्वाक्षेपो॥२॥१॥२६॥सामि॥२॥१॥२७॥कालाः॥२॥१॥२८॥अत्यन्तसंयोगेच
॥२॥१॥२९॥तृतीयातत्कृतार्थेनगुणवचनेन॥२॥१॥३०॥पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णेः॥२॥१॥३१॥कर्तृकरणेकृता
बहुलम्॥२॥१॥३२॥कृतैरधिकार्यवचने॥२॥१॥३३॥अत्रेनव्यञ्जनम्॥२॥१॥३४॥भक्ष्येणमिश्रीकरणम्॥२॥१॥३५॥चतुर्थीतदर्थार्थ
बलिहितसुखरक्षितैः॥२॥१॥३६॥पञ्चमीभयेना॥२॥१॥३७॥अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः॥२॥१॥३८॥स्तोकान्तिकदूरार्थक
च्छ्राणितेन॥२॥१॥३९॥सप्तमीशौण्डेः॥२॥१॥४०॥सिद्धशुक्पक्वबन्धैश्च॥२॥१॥४१॥ध्वांक्षेणक्षेपे॥२॥१॥४२॥कृतैर्ऋणे॥२॥१॥४३॥स
ञ्ज्ञायाम्॥२॥१॥४४॥क्तेनाहोरात्रावयवाः॥२॥१॥४५॥तत्र॥२॥१॥४६॥क्षेपे॥२॥१॥४७॥पात्रेसंमितादयश्च॥२॥१॥४८॥पूर्वकालैकसर्व

अ० जलपुष्पनवकेवलाः समानाधिकरणेन ॥ २१॥ ४८ ॥ दिक्सङ्गो सङ्गायाम् ॥ २१॥ ५० ॥ तद्वितीयोत्तरपदसमाहारे च ॥ २१॥ ५१ ॥ सङ्गापूर्वो
 ५ द्विगुः ॥ २१॥ ५२ ॥ कुत्सितानि कुत्सनैः ॥ २१॥ ५३ ॥ पापाणके कुत्सितैः ॥ २१॥ ५४ ॥ उपमानानि सामान्यवचनैः ॥ २१॥ ५५ ॥ उपमितम्याघ्रा
 दिभिः सामान्याप्रयोगे ॥ २१॥ ५६ ॥ विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ॥ २१॥ ५७ ॥ पूर्वोपरप्रथमचरमजघन्यसमानमध्यमध्यमवीराश्च ॥
 २१॥ ५८ ॥ श्रेण्यादयः कृतादिभिः ॥ २१॥ ५९ ॥ तेन नञ्विशिष्टेनानञ्ज ॥ २१॥ ६० ॥ सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टः पूज्यमानैः ॥ २१॥ ६१ ॥ हन्दा
 रकनागकुक्षरैः पूज्यमानम् ॥ २१॥ ६२ ॥ कतरकतमोजातिपरिप्रश्ने ॥ २१॥ ६३ ॥ किङ्क्षेयो ॥ २१॥ ६४ ॥ पोटापुवतिस्तोककतिपय
 गृष्टिधेनुवशावेहद्वक्त्रणीप्रवक्तुश्चोत्रियाध्यापकधूर्तैर्जातिः ॥ २१॥ ६५ ॥ प्रशंसावचनैश्च ॥ २१॥ ६६ ॥ सुवारखलतिपलित
 चलिनजरतीभिः ॥ २१॥ ६७ ॥ कृत्यतुल्याख्या अजात्या ॥ २१॥ ६८ ॥ वर्णवर्णवर्णेन ॥ २१॥ ६९ ॥ कुमारप्रमणादिभिः ॥ २१॥ ७० ॥ चतुष्पादो
 गर्भिण्या ॥ २१॥ ७१ ॥ मयूरव्यंसकादयश्च ॥ २१॥ ७२ ॥ समर्थोन्यपदार्थे सिद्धशुद्धसन्महद्वादश ॥ ॥ इति द्वितीयाध्यायस्य प्रथ
 मः पादः ॥ १॥ ॥ पूर्वोपरधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे ॥ २२॥ १॥ अर्द्धमपुंसकम् ॥ २२॥ २ ॥ द्वितीयतृतीयचतुर्थतुर्याण्यन्य
 तरस्याम् ॥ २२॥ ३ ॥ प्राप्तापन्ने च द्वितीयया ॥ २२॥ ४ ॥ कालाः परिमाणिना ॥ २२॥ ५ ॥ नञ् ॥ २२॥ ६ ॥ ईषदकृता ॥ २२॥ ७ ॥ षष्ठी ॥ २२॥ ८ ॥ याजका
 दिभिश्च ॥ २२॥ ९ ॥ ननिर्द्धारणे ॥ २२॥ १० ॥ पूरणगुणसुहितार्थसद्व्ययतव्यसमानाधिकरणेन ॥ २२॥ ११ ॥ तेन च पूजायाम् ॥ २२॥ १२ ॥ अ
 धिकरणवाचिना च ॥ २२॥ १३ ॥ कर्मणि च ॥ २२॥ १४ ॥ तज्जकाभ्यां कर्तरि ॥ २२॥ १५ ॥ कर्तरि च ॥ २२॥ १६ ॥ नित्यङ्गीडाजीविकयोः ॥ २२॥ १७ ॥
 कुगतिमादयः ॥ २२॥ १८ ॥ उपपदमतिङ् ॥ २२॥ १९ ॥ अमैवाव्ययेन ॥ २२॥ २० ॥ तृतीयाप्रभृतीन्यन्यतरस्याम् ॥ २२॥ २१ ॥ क्वाच ॥ २२॥ २२ ॥

रा०
 ५

शेषो बहुव्रीहिः ॥ २२२३ ॥ अनेकमन्यपदार्थे ॥ २२२४ ॥ सङ्ख्यायावयवासन्नादृशधिकसङ्ख्याः सङ्ख्ये ॥ २२२५ ॥ दिङ्मान्यन्तराले
॥ २२२६ ॥ तत्र तेनेदमितिसंख्ये ॥ २२२७ ॥ तेन सहेतितुल्ययोगे ॥ २२२८ ॥ चौर्ये द्वन्द्वः ॥ २२२९ ॥ उपसर्जनम्पूर्वम् ॥ २२३० ॥ राज
दन्तादिषु परम् ॥ २२३१ ॥ द्वन्द्वे वि ॥ २२३२ ॥ अजाद्यदन्तं ॥ २२३३ ॥ अल्पाक्षरम् ॥ २२३४ ॥ सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ ॥ २२३५ ॥ नि
ष्टा ॥ २२३६ ॥ वाहिताग्रादिषु ॥ २२३७ ॥ कडाराः कर्मधारये ॥ २२३८ ॥ पूर्वापरधरेतरन्ततीयाप्रभतीन्यष्टादशः ॥ इति द्वितीया ।
ध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥ २२ ॥ अनभिहिते ॥ २३१ ॥ कर्मणि द्वितीया ॥ २३२ ॥ तृतीया च हो म्भून्द्सि ॥ २३३ ॥ अन्तरान्तरेण युक्ते ॥
२३४ ॥ कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ॥ २३५ ॥ अपवर्गे तृतीया ॥ २३६ ॥ सप्तमीपञ्चम्योकारकमध्ये ॥ २३७ ॥ कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वि
तीया ॥ २३८ ॥ ण्यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनन्तत्र सप्तमी ॥ २३९ ॥ षष्ठ्यपाङ्परिभिः ॥ २४० ॥ प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात् ॥ २४१ ॥
गत्यर्थकर्मणि द्वितीया चतुर्थ्ये चैष्टायामनध्वनि ॥ २४२ ॥ चतुर्थीसम्प्रदाने ॥ २४३ ॥ क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः ।
२४४ ॥ तुमर्थाच्चभाववचनात् ॥ २४५ ॥ नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधालं वषड्योगाच्च ॥ २४६ ॥ मन्यकर्मण्यनादरे विभाषा प्राणिषु
॥ २४७ ॥ कर्तृकरणयोस्तृतीया ॥ २४८ ॥ सहयुक्तेऽप्रधाने ॥ २४९ ॥ येनाङ्गविकारः ॥ २५० ॥ इत्यभूतलक्षणे ॥ २५१ ॥
सङ्ज्ञोऽन्यतरस्याङ्कर्मणि ॥ २५२ ॥ हेतौ ॥ २५३ ॥ अकर्तर्युणे पञ्चमी ॥ २५४ ॥ विभाषागुणे स्त्रियाम् ॥ २५५ ॥ षष्ठीहेतु
प्रयोगे ॥ २५६ ॥ सर्वनाम्नस्तृतीया चा ॥ २५७ ॥ अयादाने पञ्चमी ॥ २५८ ॥ अन्यादितरर्ते दिक्शब्दाश्चुतरपदा जाहिषुक्ते
॥ २५९ ॥ षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन ॥ २६० ॥ एनया द्वितीया ॥ २६१ ॥ एयिग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् ॥ २६२ ॥ करणे च

अ० लोकात्मकच्छक्तिपयस्यासत्त्ववचनस्य। २३। ३३। दूरान्तिकार्थः पृथग्यन्यतरस्याम्। २३। ३४। दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीयाच्। २३। ३५।
 सप्तम्यधिकरणेच्। २३। ३६। यस्य च भावेन भावलक्षणम्। २३। ३७। षष्ठीचानादरे। २३। ३८। स्वामीश्वराधिपतिरायादसाक्षिप्र
 तिभूप्रसूतैश्च। २३। ३९। आसुक्तकुशलाभ्याश्चासेवायाम्। २३। ४०। यतश्च निर्द्धारणम्। २३। ४१। पञ्चमीविभक्ते। २३। ४२। साधुनि
 पुणाभ्यामर्चायांसप्तम्यप्रतेः। २३। ४३। प्रसितोत्सुकाभ्यान्तृतीयाच्। २३। ४४। नष्टत्रेचलुपि। २३। ४५। प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरि
 माणवचनमात्रेप्रथमा। २३। ४६। सम्बोधनेच्। २३। ४७। सामन्त्रितम्। २३। ४८। एकवचनमसम्बुद्धिः। २३। ४९। षष्ठीशेषे। २३। ५०।
 ज्ञोविदर्यस्यकरणे। २३। ५१। अधीगर्थदयेषां कर्मणि। २३। ५२। कृजःप्रतियत्ने। २३। ५३। रुजायां नाभाववचनानामञ्चरेः। २३।
 ५४। आशिषिनाथः। २३। ५५। जासिनि क्रमणनाटक्रायपिषां हिंसायाम्। २३। ५६। व्यवहृपणोः समर्थयोः। २३। ५७। दिवस्त
 दर्थस्य। २३। ५८। विभाषोपसर्गे। २३। ५९। द्वितीयात्राह्ये। २३। ६०। प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासम्प्रदाने। २३। ६१। चतुर्थर्थे बहुलं छ
 न्दसि। २३। ६२। यजेत्यकरणे। २३। ६३। कृत्यार्थप्रयोगे कालेधिकरणे। २३। ६४। कर्त्तृकर्मणोः कृति। २३। ६५। उभयमात्रौ क
 र्मेणि। २३। ६६। क्तस्य च वर्तमाने। २३। ६७। अधिकरणवाचिनश्च। २३। ६८। नलोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतनाम्। २३। ६९। अके
 नोर्भविष्यदाधमर्णयोः। २३। ७०। कृत्यानाङ्कूर्तरिवा। २३। ७१। तुल्यार्थे रतुलोपमाभ्यान्तृतीयान्यतरस्याम्। २३। ७२। चतुर्थी।
 चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः। २३। ७३। अनभिहित इत्यंभूतपतश्च प्रेष्यब्रुवोस्त्रयोदश॥ ॥ इति द्वितीयाध्या
 यस्य तृतीयः पादः॥ ३॥ ॥ द्विगुरेकवचनम्। २४। १। द्वन्द्वश्चाणितूर्यसेनाङ्गनाम्। २४। २। अनुवादे चरणानाम्। २४। ३। ॥

रा०
 ६

अध्वर्युः कतुरनपुंसकम् ॥ २४४ ॥ अध्ययनतो विप्रकृष्टाख्यानाम् ॥ २४५ ॥ जातिरप्राणिनाम् ॥ २४६ ॥ विशिष्टलिङ्गेन दीदेशोग्रामाः
॥ २४७ ॥ सुद्रजन्तवः ॥ २४८ ॥ ण्येषाञ्च विरोधः शास्त्रतः ॥ २४९ ॥ श्रद्धाणामनिरवसितानाम् ॥ २५० ॥ गवाश्च प्रभृतीनि च ॥ २५१ ॥
॥ १११ ॥ विभाषा ह्यस्य गतण धान्यव्यञ्जनपशुशकुन्यश्च वडवपूर्वा पराधरोतराणाम् ॥ २५२ ॥ विप्रतिषिद्धञ्चानधिकरणम्
वाचि ॥ २५३ ॥ नदधिपय आदीनि ॥ २५४ ॥ अधिकरणे तावत्वे च ॥ २५५ ॥ विभाषा समीपे ॥ २५६ ॥ सनपुंसकम् ॥ २५७ ॥
अव्ययीभावश्च ॥ २५८ ॥ तत्पुरुषो नञ्कर्मधारयः ॥ २५९ ॥ सञ्ज्ञायाङ् न्योशीनरेषु ॥ २६० ॥ उपज्ञोपक्रमन्त दाद्याचिरव्या
सायाम् ॥ २६१ ॥ छायावाहुल्ये ॥ २६२ ॥ सभाएजामनुष्यपूर्वा ॥ २६३ ॥ अशलाच ॥ २६४ ॥ विभाषा सेनासुरच्छायाशालानि
शानाम् ॥ २६५ ॥ परवल्लिङ्गद्वन्द्वतत्पुरुषयोः ॥ २६६ ॥ पूर्ववदश्च वडवौ ॥ २६७ ॥ हेमन्तशिशिरवहोरात्रे च चन्द्रसि ॥ २६८ ॥
॥ २६९ ॥ राजानाहाहाः पुंसि ॥ २७० ॥ अपश्यन् पुंसकम् ॥ २७१ ॥ अर्द्धर्चाः पुंसि च ॥ २७२ ॥ इदमोन्वादेशः शानुदात्तस्मृतीयादौ ॥ २७३ ॥
॥ २७४ ॥ एतदस्त्रतसोस्त्रतसौ चानुदात्तौ ॥ २७५ ॥ द्वितीयादौ स्वेन ॥ २७६ ॥ आर्द्धधातुके ॥ २७७ ॥ अदोजगिधर्त्यपि किति ॥ २७८ ॥
॥ २७९ ॥ लुङ् सनोर्घस्त्र ॥ २८० ॥ घञयोश्च ॥ २८१ ॥ बहुलञ्चन्द्रसि ॥ २८२ ॥ लिट्यन्यतरस्याम् ॥ २८३ ॥ वेभोवयि ॥ २८४ ॥
॥ २८५ ॥ हनोवधलिङि ॥ २८६ ॥ लुङि च ॥ २८७ ॥ आत्मनेपदैश्चन्यतरस्याम् ॥ २८८ ॥ इणोगालुङि ॥ २८९ ॥ णोगमिरवोधने ॥
॥ २९० ॥ सनि च ॥ २९१ ॥ इडञ्च ॥ २९२ ॥ गङ् लिटि ॥ २९३ ॥ विभाषा लुङ् लङ्गे ॥ २९४ ॥ णौ च सञ्चङ्गे ॥ २९५ ॥ अस्ते
भूः ॥ २९६ ॥ प्रवोवचि ॥ २९७ ॥ चक्षिडः खान् ॥ २९८ ॥ वालिटि ॥ २९९ ॥ अजेर्व्यघञयोः ॥ ३०० ॥ वायौ ॥ ३०१ ॥

अ० ण्यष्टात्रियार्षजितोपूनीलुगणिजोः। २।४।५। पूर्णपैलादिभ्यश्च। २।४।५। इजः प्राचाम्। २।४।६। नतौल्वलिभ्यः। २।४।६। तद्राजस्यबहु
 पुतेनैवास्त्रियाम्। २।४।६। यस्कादिभ्योगोत्रे। २।४।६। यजजोश्च। २।४।६। अत्रिभ्युकुत्स वसिष्ठगोतमाङ्गिरोभ्यश्च। २।४।६।
 बह्वचइजः प्राच्यभरतेषु। २।४।६। नगोपवनादिभ्यः। २।४।६। तिककितवादिभ्योहंदे। २।४।६। उपकादिभ्योन्यतरस्यामहंदे॥
 २।४।६। आगस्त्यकौंडिन्योरगस्तिकुण्डिनच। २।४।७। सुपोधातुप्रातिपदिकयोः। २।४।७। अदिप्रभृतिभ्यः शपः। २।४।७। व
 हुलञ्छन्दसि। २।४।७। यडोविचा। २।४।७। जुहोत्यादिभ्यः श्रुः। २।४।७। बहुलञ्छन्दसि। २।४।७। गातिस्थाद्युपाभूभ्यः सिचः पर
 स्मैपदेषु। २।४।७। विभाषाघ्राधेदृशाच्छासः। २।४।७। तनादिभ्यस्तथासोः। २।४।७। मंत्रेघसक्हरणशहदहा ह्वृक्कगमिज
 निभ्योलेः। २।४।७। आमः। २।४।७। अव्ययादाप्सुपः। २।४।७। नाच्यमीभावादतोम्वपञ्चम्याः। २।४।७। तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्
 । २।४।७। लुटः प्रथमस्यडासोः। २।४।७। द्विगुरूपज्ञोपक्रमंवेजोवयिर्नतौल्वलिभ्य आमः पञ्च॥ ॥ इति द्वितीयाध्यायस्य चतु
 र्थः पादः॥ ४॥ ॥ इति द्वितीयाध्यायः॥ २॥ ॥ प्रत्ययः। ३।१।१। परश्च। ३।१।२। आद्युदात्तश्च। ३।१।३। अनुदात्तौ सुप्पितौ। ३।१।४। ॥ ४
 गुप्तिचिभ्यः सन्। ३।१।५। मान्वधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य। ३।१।६। धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायांवा। ३।१।७। सुपआ
 त्मनः क्यच्। ३।१।८। काम्यच्। ३।१।९। उपमानादाचारो। ३।१।१०। कर्तुः क्यङ् सलोपश्च। ३।१।११। भृशादिभ्योभुव्यच्चेर्लोपश्चहलः
 । ३।१।१२। लोहितादिडाज्यः क्यप्। ३।१।१३। कष्टायक्रमणे। ३।१।१४। कर्मणोरोमन्यतयोभ्यांवर्तिचरोः। ३।१।१५। वाष्योभभ्यामु
 ह्मनो। ३।१।१६। शब्दैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे। ३।१।१७। सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम्। ३।१।१८। नमोवरिवश्चित्रडः क्य

रा०
 ७

चु। ३। १। १८। पुच्छभाण्डचीवरणिङ्। ३। १। २०। मुण्डमिष्वलक्षणलवणव्रतवस्त्रहलकलकृततूलेभ्योणिचु। ३। १। २१। धातोरेकाचो
हलादेः क्रियासमभिहारेयङ्। ३। १। २२। नित्यङ्गेटिल्येगतौ। ३। १। २३। लुपसदचरजपजभदहदशगृभ्योभावगर्हीयाम्। ३। १। २४। सत्याप।
पाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्योणिचु। ३। १। २५। हेतुमतिच। ३। १। २६। कंडादिभ्योयक्। ३। १। २७। गुपू
धूपविच्छिपणिपनिभ्यआयः। ३। १। २८। कृतेरीयङ्। ३। १। २९। कमेर्णिङ्। ३। १। ३०। आयादयआर्हधातुकेवा। ३। १। ३१। सनाद्यनाधा
तवः। ३। १। ३२। स्यतासील्लुटोः। ३। १। ३३। सिबहुलंलेटि। ३। १। ३४। कास्मत्सयादाममन्त्रेलिटि। ३। १। ३५। इजादेश्वगुरुमतोन्च्छः। ३।
१। ३६। दयायासश्च। ३। १। ३७। उपविद्जागृभ्योन्त्यतरस्याम्। ३। १। ३८। श्रीहीभ्रुवांश्लुवच्च। ३। १। ३९। कञ्चानुप्रयुज्यतेलिटि। ३। १। ४०।
विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम्। ३। १। ४१। अभ्युत्सादयाम्प्रजनयाञ्चिकयारमयामकःपावयाङ्। याहिदामकनितिच्छन्दसि ३। १। ४२।
ज्जिल्लुङि। ३। १। ४३। च्तेःसिचु। ३। १। ४४। शलङ्गुपधादनिटक्लः। ३। १। ४५। श्लिषआलिङ्गने। ३। १। ४६। नदशः। ३। १। ४७। णिश्चिद्रु
ल्लुभ्यःकर्तरिचङ्। ३। १। ४८। विभाषाघेदृश्याः। ३। १। ४९। गुपेच्छन्दसि। ३। १। ५०। नोनयतिध्वनयत्ये — लयत्यर्देयतिभ्यः। ३। १। ५१।
अस्यतिवक्तिरव्यातिभ्योङ्। ३। १। ५२। लिपिसिचिह्रश्च। ३। १। ५३। आत्मनेपदेघन्यतरस्याम्। ३। १। ५४। पुषादिद्युताद्यनृदितःपरस्मै
पदेषु। ३। १। ५५। सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च। ३। १। ५६। इरितोवा। ३। १। ५७। जस्तम्भुमुचुल्लुचुगुचुल्लुचुश्चिभ्यश्च। ३। १। ५८। कर्मह
रुहिभ्यश्चुन्दसि। ३। १। ५९। चिण्तेपदः। ३। १। ६०। दीपजनबुधपूरितापिप्यापिभ्योऽन्यतरस्याम्। ३। १। ६१। अचःकर्मकर्तरि। ३। १। ६२।
दुहश्च। ३। १। ६३। नरुधः। ३। १। ६४। तपोऽनुतापेच। ३। १। ६५। चिण्भावकर्मणोः। ३। १। ६६। सार्वधातुकेयक्। ३। १। ६७। कर्तरिशप्॥

अ० ॥ ३११॥ ईषादिवादिभ्यः श्यन् ॥ ३११॥ ईषीवाभ्राशभ्राशभ्रमुक्त्रमुक्त्रमुत्रसिन्नुटिलषः ॥ ३११॥ ७०॥ यसोऽनुपसर्गात् ॥ ३११॥ ७१॥ संयसश्च ॥ ३११॥
 ७२॥ स्वादिभ्यः श्रुः ॥ ३११॥ ७३॥ श्रुवः श्रुच ॥ ३११॥ ७४॥ अक्षोऽन्यतरस्याम् ॥ ३११॥ ७५॥ तनूकरणे तसः ॥ ३११॥ ७६॥ तुदादिभ्यः शः ॥ ३११॥ ७७॥ रुधा
 दिभ्यः श्रम् ॥ ३११॥ ७८॥ तनादिक्लृप्पः ॥ ३११॥ ७९॥ धिन्विक्लृप्पेवार्च ॥ ३११॥ ८०॥ त्रयादिभ्यः श्रा ॥ ३११॥ ८१॥ स्तमुस्तुमुस्तुमुस्तुमुस्तुमुस्तु
 भ्यश्च ॥ ३११॥ ८२॥ हलश्चः शानज्झौ ॥ ३११॥ ८३॥ छन्दसि शायजपि ॥ ३११॥ ८४॥ व्यत्ययो बहुलम् ॥ ३११॥ ८५॥ लिङ्गाशिष्यङ् ॥ ३११॥ ८६॥
 कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः ॥ ३११॥ ८७॥ तपस्तपः कर्मकस्यैव ॥ ३११॥ ८८॥ नदुहस्तुनमांयक्विणौ ॥ ३११॥ ८९॥ कुषिरजोः प्राचांश्चन्यस्मै
 पदञ्च ॥ ३११॥ ९०॥ धातोः ॥ ३११॥ ९१॥ तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ॥ ३११॥ ९२॥ कृदतिङ् ॥ ३११॥ ९३॥ वासरूपोस्त्रियाम् ॥ ३११॥ ९४॥ कृत्याः प्राङ् ॥ ३११॥ ९५॥
 तव्यतव्यानीपरः ॥ ३११॥ ९६॥ अचोयत् ॥ ३११॥ ९७॥ पोरदुपधात् ॥ ३११॥ ९८॥ शकिसहोश्च ॥ ३११॥ ९९॥ गदमदचरयमश्चाऽनुप
 सर्गो ॥ ३११॥ १००॥ अवद्यपण्यवर्षागर्हपणितव्यानिरेधेषु ॥ ३११॥ १०१॥ वल्यङ् ॥ ३११॥ १०२॥ अर्यः स्वामिवैश्ययोः ॥ ३११॥ १०३॥ उय
 स्याकाल्याप्रजने ॥ ३११॥ १०४॥ अजय्यसिद्धन्तम् ॥ ३११॥ १०५॥ वदः सुपिक्यप्च ॥ ३११॥ १०६॥ भुवोभावे ॥ ३११॥ १०७॥ हनस्तच् ॥ ३११॥ १०८॥
 एतिस्तुशास्त्रहजुषः क्यप् ॥ ३११॥ १०९॥ कदुपधाच्चाक्कुपिचतेः ॥ ३११॥ ११०॥ ईचखनः ॥ ३११॥ १११॥ भ्रजोऽसञ्ज्ञायाम् ॥ ३११॥ ११२॥ मजे
 विभाषा ॥ ३११॥ ११३॥ राजसूयसूर्यमषोद्यरुच्यकुप्यष्टपच्यव्यथाः ॥ ३११॥ ११४॥ भिद्योद्यौनदे ॥ ३११॥ ११५॥ पुष्यसिद्धौनदने ॥ ३११॥ ११६॥
 विपूयविनीयजित्यामुञ्जकल्कहलिषु ॥ ३११॥ ११७॥ मत्पिभ्याङ् ॥ ३११॥ ११८॥ पदास्वैरिवाह्यापक्ष्यपुच ॥ ३११॥ ११९॥
 विभाषाकृदृषोः ॥ ३११॥ १२०॥ पुग्यञ्चपत्रे ॥ ३११॥ १२१॥ अमावस्यदन्यतरस्याम् ॥ ३११॥ १२२॥ छन्दसिनिष्टक्यदेवहूयमणी

रा०
 ८

योन्तीयोच्छिष्यमर्थस्तर्थाध्वर्यवन्त्यवान्यदेवयज्याष्टच्छप्रतिषीवब्रह्मवाद्यभाव्यस्तावोपचाय्यपट्टानि।३।१।१२३।त्रहलो
 र्ण्यतः।३।१।१२४।ओरावश्यके।३।१।१२५।आसुसुवपिरपिलपित्रपिचमश्च।३।१।१२६।आनायोनित्ये।३।१।१२७।प्रणायोसम्प
 तो।३।१।१२८।पाय्यसान्ताय्यनिकाय्यधाय्यमानहविर्निवाससामिधेनीषु।३।१।१२९।क्तौकुण्डपाय्यसञ्चाय्यौ।३।१।१३०।
 अग्नौपरिचाय्योपचाय्यसमूह्याः।३।१।३१।चित्साग्नितित्येच।३।१।१३२।एबुल्लत्तचौ।३।१।१३३।नन्दिग्रहिपचादिभ्योत्पुणित्यचः
 ।३।१।१३४।द्वगुपधज्ञाप्रीकिरःकः।३।१।१३५।आतश्चोपसर्गे।३।१।३६।पाघ्राध्राधेट्टदशःशः।३।१।१३७।अनुपसर्गाह्निम्य।
 विन्दधारिपारिवेद्युदेजितेति सातिसाहिभ्यश्च।३।१।१३८।ददातिदधात्योर्विभाषा।३।१।१३९।ज्वलितिकसन्तेभ्योणः।३।१।१४०
 प्र्याद्यधास्तुसंस्त्रतीणवसावहिलिहस्त्रिषश्चसश्च।३।१।१४१।दुन्योरनुपसर्गे।३।१।१४२।विभाषाग्रहः।३।१।१४३।गेहेकः।
 ३।१।१४४।शिल्पिनिष्ठुनः।३।१।१४५।गस्यकनः।३।१।१४६।प्युङ्ङ।३।१।१४७।हश्चात्रीहिकालयोः।३।१।१४८।पुसुल्वःसम।
 मिहारेवुनः।३।१।१४९॥॥आशिषिच।३।१।१५०।प्रत्ययोमुण्डविदां दीपजनक्र्यादिभ्योवद्यसुग्यंश्याद्यधादश॥॥इतितृती
 याध्यापस्यप्रथमःपादः॥१॥॥कर्मण्यण्।३।२।१।ह्रावामश्च।३।२।२।आतोनुपसर्गेकः।३।२।३।सुपिस्थः।३।२।४।तुन्दशोकयोः
 परिभजापनुदोः।३।२।५।प्रेदाज्ञः।३।२।६।समिरज्यः।३।२।७।गापोष्टकः।३।२।८।हरतेरनुद्यमने च।३।२।९।वयसिच।३।२।१०।आ
 डिताच्छीत्ये।३।२।११।अर्हः।३।२।१२।स्तम्बकर्णयोरमिजपोः।३।२।१३।शमिधातोःसञ्ज्ञायाम्।३।२।१४।अधिकरणेशेतेः॥
 ३।२।१५।चरेष्टः।३।२।१६।मिष्ठासेनादायेषुच।३।२।१७।पुरेग्रतोयेषुसर्तेः।३।२।१८।पूर्वेकर्तरि।३।२।१९।कृजोहेतुताच्छील्यानु

अ० लोमेषु। ३।२।२०। दिवा विभानि शप्रभाभास्कारन्तानन्तादिबहुनां दीकिं लिपिलिबिबलिभक्तिकर्तृचित्रक्षेत्रसंख्याजङ्गवाहूह।
 ६ र्यतद्वनुररुषु। ३।२।२१। कर्मणिभूतौ। ३।२।२२। नशब्दलोककलहगाथावैरचादुसूत्रमन्त्रपदेषु। ३।२।२३। सन्वशक्तोरिन्। ३।२।
 २४। हरतेर्दतिनाथयोः पशौ। ३।२।२५। फलेग्रहिण्ममरिश्च। ३।२।२६। छन्दसिवनसनरक्षिमथाम्। ३।२।२७। एजेः खशा। ३।२।२८।
 नासिकास्तनयोध्माधेदोः। ३।२।२९। नाडीमुष्ट्योश्च। ३।२।३०। उदिकूलेरुजिवहोः। ३।२।३१। वहाम्नेलिहः। ३।२।३२। परिमाणेपचः।
 ३।२।३३। मितनखेच। ३।२।३४। विध्वरुषोस्तुदः। ३।२।३५। असूर्यललाटयोर्दशितयोः। ३।२।३६। उग्रम्यस्येरमदपाणिंधमाश्च॥
 ३।२।३७। प्रियवशेवदः खच्। ३।२।३८। द्विषत्परयोस्नाये। ३।२।३९। वाचियमोब्रते। ३।२।४०। पूः सर्वयोर्दीप्तिहोः। ३।२।४१। सर्व
 कूलाभ्रकरीषेषुकषः। ३।२।४२। मेघर्तिभयेषुक्तजः। ३।२।४३। क्षेमप्रियमद्रेण्व। ३।२।४४। आशितेभुवः करणभावयोः। ३।२।४५।
 सञ्ज्ञायाम्भृतवृजिधारिसहितपिदमः। ३।२।४६। गमश्च। ३।२।४७। अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वानन्तेषुडः। ३।२।४८। आशिषिह
 नः। ३।२।४९। अवेक्लेशतमसोः। ३।२।५०। कुमारशीर्षयोर्णिनिः। ३।२।५१। लक्षणेजायापत्योष्टका। ३।२।५२। अमनुष्यकर्तृकेच॥
 ३।२।५३। शक्तौहस्तिकपाटयोः। ३।२।५४। पाणिघताडघोशिलिपिनि। ३।२।५५। आढ्यसुभगस्यूलपलितनगान्धप्रियेषुच्यर्थे।
 षच्चोक्तनः करणेरुपुन। ३।२।५६। कर्तरिभुवः खिष्णुचखुकजौ। ३।२।५७। स्थणुदकेकिन्। ३।२।५८। त्विकृदध्वक्स्त्रिदि
 गुणिगञ्जुयुजिक्कुञ्जौश्च। ३।२।५९। त्यदादिषुदृशेनालोचनेकञ्च। ३।२।६०। सत्सद्विषदुहदुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजामु
 पसर्गेपिक्किप्। ३।२।६१। भजोण्विः। ३।२।६२। छन्दसिसहः। ३।२।६३। वहश्च। ३।२।६४। कव्यपुरीषपुरीषेषुञ्जुट्। ३।२।६५। हव्ये

नन्तःपादम् ३२१६६। जनसनखनक्रमगमोविद् ३२१६७। अदोनन्ते ३२१६८। कथ्येच ३२१६९। दुहःकपूधश्च ३२१७०। मन्त्रे
श्वेतवहोव्यशस्युरेडाशोणिवन् ३२१७१। अवेयजः ३२१७२। विजुपेच्छन्दसि ३२१७३। आतोमनिक्कनिचनिपश्च ३२१७४।
अन्येभ्योपिदृश्यन्ते ३२१७५। किष्वा ३२१७६। स्थःकचा ३२१७७। सुपजातौणिनिस्ताच्छीले ३२१७८। कर्तयुपमाने ३२१७९।
व्रते ३२१८०। बहुलमाभीक्ष्ण्ये ३२१८१। मनः ३२१८२। आत्ममानेखश्च ३२१८३। भूते ३२१८४। करणेयजः ३२१८५। कर्मणि
हनः ३२१८६। ब्रह्मभूणद्वेषुकिप् ३२१८७। बहुलञ्छन्दसि ३२१८८। सुकर्मपायमन्त्रयुण्येषुक्तजः ३२१८९। सोमेसुजः
३२१९०। अग्नौचे ३२१९१। कर्मण्यग्राख्यायाम् ३२१९२। कर्मणीनिविक्रियः ३२१९३। हृशेःकनिप् ३२१९४। राजनियुधिक
जः ३२१९५। सहेच ३२१९६। सप्तम्याञ्जनेर्दः ३२१९७। पञ्चम्यामजातौ ३२१९८। उपसर्गेचसञ्ज्ञायाम् ३२१९९। अनौकर्म
णि ३२२००। अन्येष्वपिदृश्यते ३२२०१। निष्ठा ३२२०२। सुयजोर्द्विनिप् ३२२०३। जीर्णतैरत्नम् ३२२०४। छन्दसिलिद
३२२०५। लिटःकानच्वा ३२२०६। कसुश्च ३२२०७। भाषायांसदवसञ्चुवः ३२२०८। उपेयिवाननाश्चाननूचानश्च ३२२०९।
३२२१०। लुङ् ३२२११। अनद्यतनेलङ् ३२२१२। अभिज्ञावचनेलङ् ३२२१३। नयदि ३२२१४। विभाषासाकाङ्क्षे ३२२१५।
३२२१६। परोक्षेलिङ् ३२२१७। हश्चतोलङ्च ३२२१८। मन्त्रेचासन्नकाले ३२२१९। लट्स्मे ३२२२०। अपरोक्षेच ॥
३२२२१। ननौष्टमतिवचने ३२२२२। नन्वोर्विभाषा ३२२२३। पुरिलुङ्चास्मे ३२२२४। वर्तमानेलङ् ३२२२५। लटः
शालशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ३२२२६। सम्बोधनेच ३२२२७। लक्षणहेत्वोःक्रियायाः ३२२२८। तौसत् ॥

अ०
१०

॥३२॥१२७॥पूड्यजोःशानन॥३२॥१२८॥ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषुचानश॥३२॥१२९॥दुःधार्योःशत्रुच्छृणि॥३२॥१३०॥दि
योमित्रो॥३२॥१३१॥सुजोयज्ञसंयोगे॥३२॥१३२॥अर्हःप्रशंसायाम्॥३२॥१३३॥आक्तेस्तच्छीलतद्धर्मतत्साधुकारिषु॥३२॥१३४
॥तनू॥३२॥१३५॥अलंकृन्निराकृत्यजनोत्पत्तौतान्मदरुच्यपत्रपटतुष्टधुसहचरदृष्टुच॥३२॥१३६॥णिशुन्दसि॥३२॥१३७
भुवश्च॥३२॥१३८॥ग्लानिस्थश्चग्लुः॥३२॥१३९॥त्रिसिगृधिधूषिषिपेःकुः॥३२॥१४०॥शमित्यष्टाभ्योधिनुण॥३२॥१४१॥सम्यचानु
रुधाङ्गमाङ्गसपरिस्संसृजपरिदेविसंज्वरपरिस्त्रिपपरिरटपरिवदपरिदहपरिमुहदुषद्विषदुहदुहयुजाक्रीडविविचत्य
जरजभजातिचरणचरणसुषाभ्याहनश्च॥३२॥१४२॥वौकषलसकत्यस्वम्॥३२॥१४३॥अपचलषः॥३२॥१४४॥प्रेलपसदुमथव
दवसः॥३२॥१४५॥निन्दहिंसक्लिशखादविनाशपरिस्त्रिपपरिरटपरिवादिष्याभाषास्त्रयोवुञ्ज॥३२॥१४६॥देविकुशोश्चोपसर्गो॥३
॥३२॥१४७॥चलनशब्दार्थोदकर्मकाद्युच॥३२॥१४८॥अनुदातेतश्चहलादेः॥३२॥१४९॥जुचंक्रम्यदंद्रम्यसगृधिज्वलशुचलषप
तपदः॥३२॥१५०॥कुधमण्डार्थेभ्यश्च॥३२॥१५१॥नयः॥३२॥१५२॥सुददीपदीप्तश्च॥३२॥१५३॥लषपतपदस्याभूटषहनकम
गमश्चभ्यउकञ्च॥३२॥१५४॥जल्पमिदकुट्टलुंठट्टडःषाकन॥३२॥१५५॥प्रजोरिनिः॥३२॥१५६॥जिट्टसिवित्रीण्वमायथाभ्यमप
रिभूमसूभ्यश्च॥३२॥१५७॥॥स्यदिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्राश्रद्धाभ्यआलुच॥३२॥१५८॥दाधेदृसिशदसदोरुः॥३२॥१५९॥स्य
स्यदःकमरच॥३२॥१६०॥भञ्जभासमिदोघुरच॥३२॥१६१॥विदिभिदिष्टिदेःकुरच॥३२॥१६२॥इणनशजिसर्तिभ्यःकरप्॥३२॥
१६३॥गत्वरश्च॥३२॥१६४॥जागरूकः॥३२॥१६५॥यजजपदशोपडः॥३२॥१६६॥नेमिकंपिसम्पजसकमहिंसदीपोरः॥३२॥१६७

रा०
१०

सनाशंसभिदाः।३।२।१६।विन्दुरिच्छुः।३।२।१६।क्याच्छन्दसि।३।२।१७०।आहगमहनजनः।कि।कि।नौ।लिङ्।३।२।१७१।स्वपितषो
नजिङ्।३।२।१७२।प्रवंचोः।रुः।३।२।१७३।भियः।कुक्कु।कनौ।३।२।१७४।स्थेशभासपिसकसोवरच्।३।२।१७५।यश्चयडः।३।२।१७६
भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिष्टजुग्रावस्तुवः।किप्।३।२।१७७।अन्येभ्योपिदृश्यते।३।२।१७८।भुवः।सञ्ज्ञान्तरयोः।३।२।१७९।विप्रसंभ्यो
द्वसञ्ज्ञायाम्।३।२।१८०।धः।कर्मणिष्टन्।३।२।१८१।दाम्नीशसयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः।करणे।३।२।१८२।हल
सूकरयोः।पुवः।३।२।१८३।अर्तिलूधूसूखनसहचरइत्रः।३।२।१८४।पुवः।सञ्ज्ञायाम्।३।२।१८५।कर्तरिचर्विदेवतयोः।३।२।१
८६।जीतक्तः।३।२।१८७।मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च।३।२।१८८।कर्मणिदिवापूः।सर्वसत्सूचहुलमन्येषपिनन्वोः।शमितिभञ्जभास
धः।कर्मण्यष्टौ॥ ॥इति।तृतीयाध्यायस्य।द्वितीयः।पादः॥२॥ ॥उणादयोबहुलम्।३।३।१।भूतेपिदृश्यन्ते।३।३।२।भविष्यतिग
म्यादयः।३।३।३।भावत्पुननिपातयोर्लट्।३।३।४।विभाषाकदाकर्ह्योः।३।३।५।किमृतेलिप्सायाम्।३।३।६।लिप्स्यमानसिद्धौ
च।३।३।७।लोडर्थेलक्षणंच।३।३।८।लिङ्चोर्द्धूमौहर्तिके।३।३।९।तुमुन्वुलौक्रियायांक्रियार्थायां।३।३।१०।भाववचनाश्च०
३।३।११।अण्कर्मणिच।३।३।१२।लट्शेषेच।३।३।१३।लटःसद्वा॥३।३।१४।अनद्यतनेलुट्।३।३।१५।पदरुजविशस्यशोध
न्।३।३।१६।स्यस्थिरे।३।३।१७।भावे।३।३।१८।अकर्तरिचकारकेसञ्ज्ञायाम्।३।३।१९।परिमाणारख्यायांसर्वेभ्यः।३।३।२०।इङ्
श्च।३।३।२१।उपसर्गेरुवः।३।३।२२।समियुद्गुदुवः।३।३।२३।त्रिणीभुवनुपसर्गे।३।३।२४।वौक्षुश्चुवः।३।३।२५।अवोदानियः॥
३।३।२६।प्रेदुस्तुवः।३।३।२७।निरभ्योः।पूर्वोः।३।३।२८।उन्योग्रः।३।३।२९।कृधान्ये।३।३।३०।यज्ञेसमिस्तुवः।३।३।३१।प्रेस्त्रो

अ० यत्ते। ३३३३। प्रथनेवावशदे। ३३३३। छन्दोनाम्निचा। ३३३४। उदिग्रहः। ३३३५। समिसुष्टौ। ३३३६। परिन्योनीणोर्द्युताभेषयोः।
 ११ ३३३७। परवनुपात्ययङ्गः। ३३३८। सुपयोः शोतेः पर्याये। ३३३९। हस्तादानेचेरस्तेयो। ३३४०। निवासचितिशरीरोयसमा
 धानेष्वादेश्वकः। ३३४१। सङ्केचानौतराधर्मे। ३३४२। कर्मव्यतिहरेण चस्त्रियाम्। ३३४३। अभिविधौभावद्वनुण्। ३३४४।
 आक्रोशेवन्योर्ग्रः। ३३४५। मेलिषायाम्। ३३४६। परौषजे। ३३४७। नौहृधान्ये। ३३४८। उदिश्रयतिमौतिपूद्रुवः। ३३४९।
 विभाषाडिरुसुवोः। ३३५०। अवेग्रहोवर्षप्रतिवन्दे। ३३५१। मेवणिजाम्। ३३५२। रश्मौचा। ३३५३। हृणोतेराच्छादने। ३३५४।
 ५४॥ परौभुवौवज्जाने। ३३५५। एरच्। ३३५६। क्रुदोरप्। ३३५७। ग्रहहृदनिश्चिगमश्च। ३३५८। उपसर्गेदः। ३३५९। नौण
 चा। ३३६०। व्यधजपोरनुपसर्गे। ३३६१। स्वनहसोर्वा। ३३६२। यमः समुपनिविषुचा। ३३६३। नोगदनदपरस्वनः। ३३६४।
 कृणोवीणायाञ्चु। ३३६५। नित्यं पणः परिमाणे। ३३६६। मदनोपसर्गे। ३३६७। प्रमदसम्मदौहर्षे। ३३६८। समुदेरजः पशु
 षु। ३३६९। अक्षिषुलहः। ३३७०। प्रजनेसर्ते। ३३७१। हूः सम्प्रसारणञ्चन्यभ्युपविषु। ३३७२। आडिः पुद्गे। ३३७३। निपा
 नमाहावः। ३३७४। भावेनुपसर्गस्या। ३३७५। हनश्चवधः। ३३७६। मूर्तौघनः। ३३७७। अन्नघनोदेशे। ३३७८। अगरेकदेशे म रा०
 चणः प्रद्याणश्च। ३३७९। उद्धनोत्पाधानम्। ३३८०। अपघनोद्धम्। ३३८१। करणेयोविद्रुषु। ३३८२। स्तम्बेकच। ३३८३ ११
 परौघः। ३३८४। उपघ्नआश्रयो। ३३८५। सङ्घौ ह्यौगणप्रशंसयोः। ३३८६। निघोनिमित्तम्। ३३८७। द्वितः क्रिः। ३३८८।
 द्वितोऽप्युच्। ३३८९। यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षोनङ्। ३३९०। स्वयोनन्। ३३९१। उपसर्गेघोः किः। ३३९२। कर्मण्यधिकर

णेच।३।३।८३।स्त्रियाङ्ङिः।३।३।८४।स्यागापायचोभावे।३।३।८५।मन्त्रेष्टेषेषयचमनभूवीराउदात्तः।३।३।८६।ऊतियूतिजूतिसातिहे
तिकातीतयश्च।३।३।८७।ब्रजेयजोर्भावेक्यपू।३।३।८८।संज्ञायांसमजनिषदनिपतमनेविद्वुञ्जशीङ्भजिणः।३।३।८९।कृजःश
च।३।३।९०।इच्छा।३।३।९१।अमत्ययात्।३।३।९२।गुरेश्वहलः।३।३।९३।विद्धिदादिभ्योङ्।३।३।९४।चिन्तिपूजिकथिकु।
म्विचर्वश्च।३।३।९५।आतम्योपसर्गी।३।३।९६।ण्यासम्ययोयुच्।३।३।९७।रोगारम्यामांण्वुल्लुहलम्।३।३।९८।संज्ञायाम्
३।३।९९।विभाषारव्यानपरिमन्त्रयोरिञ्च।३।३।१००।पर्यायार्हणोत्पत्तिषुण्वुच्।३।३।१०१।आक्रोशेनज्यनिः।३।३।१०२।कृत्य।
त्युटोवहलम्।३।३।१०३।नपुंसकेभावेक्तः।३।३।१०४।ल्युट्।३।३।१०५।कर्मणिचयेनसंस्पर्शात्कर्तुःशरीरसुखम्।३।३।१०६।
करणाधिंकरणयोश्च।३।३।१०७।पुंसिसंज्ञायांघःप्रायेण।३।३।१०८।गोचरसञ्चरवहव्रजवजापणनिगमाश्च।३।३।१०९।अवेत्स्वो
र्घङ्।३।३।११०।हलश्च।३।३।१११।अध्यायन्यायोद्यावसंहाराधारवायाश्च।३।३।११२।उदङ्गोनुदके।३।३।११३।जालमानायः।३।३।
११४।खनोघच।३।३।११५।ईषदुःसुषुक्तच्छाक्तच्छार्थेषुखल्।३।३।११६।कर्त्तृकर्मणोश्चभूक्तजोः।३।३।११७।आतोयुच्।३।३।११८।
छन्दसिगत्यर्थेभ्यः।३।३।११९।अन्येभ्योपिदृश्यते।३।३।१२०।वर्तमानसामीप्येवर्तमानवद्वा।३।३।१२१।आशंसायांभूतवच्।३।३।१२२।
क्षिप्रवचनेलट्।३।३।१२३।आशंसावचनेलिङ्।३।३।१२४।नानद्यतनवक्रियाप्रबंधसामीप्ययोः।३।३।१२५।भविष्यतिमर्यादाव
चनेवरस्मिन्।३।३।१२६।कालविभागेचानहोरात्राणाम्।३।३।१२७।परस्मिन्विभाषा।३।३।१२८।लिङ्गितेलङ्गियातिपत्तौ।३।३।१२९।
भूतेच।३।३।१३०।वोताप्योः।३।३।१३१।गर्हायांलडपिजात्वाः।३।३।१३२।विभाषाकथमिलिङ्।३।३।१३३।किंमृतेलिङ्-लटौ०॥

अ० ॥ ३३११४४॥ अनवक्तृष्यमर्षयोरकि मृतेपि ॥ ३३११४५॥ किङ्कितास्त्यर्थेषु लट् ॥ ३३११४६॥ जातुयदोर्लिङ् ॥ ३३११४७॥ यच्चयत्रयोः ॥ ३३११४८॥ गगर्हायाञ्च ॥ ३३११४९॥ चित्रीकरणेच ॥ ३३११५०॥ शेषे लट् यदौ ॥ ३३११५१॥ उताप्योः समर्थयोर्लिङ् ॥ ३३११५२॥ कामप्रवेदनेकचित्ति ॥ ३३११५३॥ सम्भावने लमिति चेत्सिद्धप्रयोगे ॥ ३३११५४॥ विभाषाधातौ संभावनवचने यदि ॥ ३३११५५॥ हेतुहेतुमतोर्लिङ् ॥ ३३११५६॥ इच्छार्थेषु लिङ् लोटौ ॥ ३३११५७॥ समानकर्तृकेषु तु मुन् ॥ ३३११५८॥ लिङ् ॥ ३३११५९॥ इच्छार्थेभ्यो विभाषावर्तमाने ॥ ३३११६०॥ विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् ॥ ३३११६१॥ लोट् ॥ ३३११६२॥ प्रेषातिसर्गप्राप्तकालेषु कृत्याश्च ॥ ३३११६३॥ लिङ् चोर्ध्वमौहर्तिके ॥ ३३११६४॥ स्मे लोट् ॥ ३३११६५॥ अधीष्टे च ॥ ३३११६६॥ कालसमयवेलासु तु मुन् ॥ ३३११६७॥ लिङ् यदि ॥ ३३११६८॥ अर्हे कृत्ये तच्च ॥ ३३११६९॥ आवश्यकाधमर्षयोर्णिनिः ॥ ३३११७०॥ कृत्याश्च ॥ ३३११७१॥ शकिलिङ् ॥ ३३११७२॥ आशिषिलिङ् लोटौ ॥ ३३११७३॥ क्तिचूक्तौ च सन्तायाम् ॥ ३३११७४॥ माडिलुङ् ॥ ३३११७५॥ स्मोतरे लङ् ॥ ३३११७६॥ उणादय इङ्गे निवासव्यधजपोरपघन इच्छाहलश्चोताप्योर्विधिषोडशः ॥ ॥ इति तृतीयाध्यायस्य तृतीयपादः ॥ ३॥ ॥ धातुसम्बन्धे प्रत्ययाः ॥ ३॥ ४॥ १॥ क्रियासमभिहारे लोट् लोटोहिस्वौवाचतध्वमोः ॥ ३॥ ४॥ २॥ समुच्चये न्यत्तस्याम् ॥ ३॥ ४॥ ३॥ यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्वस्मिन् ॥ ३॥ ४॥ ४॥ समुच्चये सामान्यवचनस्याम् ॥ ३॥ ४॥ ५॥ छन्दसिलुङ् लङ् लिङ् ॥ ३॥ ४॥ ६॥ लिङ् र्ये लोट् ॥ ३॥ ४॥ ७॥ उपसम्वादाशङ्कयोश्च ॥ ३॥ ४॥ ८॥ णातुमर्थे से सेन से असे न्क् से क से न ध्ये अध्ये न्क ध्ये क ध्ये न्श ध्ये श ध्ये न्त वै त वे ड् त वे नः ॥ ३॥ ४॥ ९॥ प्रयैरोहिष्ये अव्यथिष्ये ॥ ३॥ ४॥ १०॥ दृशे विश्वे च ॥ ३॥ ४॥ ११॥ शकिणमुल्कमुलौ ॥ ३॥ ४॥ १२॥ ईश्वरे तो सुक् सुनौ ॥ ३॥ ४॥ १३॥ कृत्यार्थे तवै के न्के न्यत्वनः ॥ ३॥ ४॥ १४॥ अव

चक्षेच। ३।४।१५। भाक्लक्षणे स्थेण कृञ्चदिचरिहुतमिजनिभ्यस्तो सुन्। ३।४।१६। स्पितदोः कसुन्। ३।४।१७। अलंखल्वाः प्रतिषेध
योः प्राचाङ्त्वा ३।४।१८। उदीचाम्माङोव्य तीहारे। ३।४।१९। पणवरयोगेच। ३।४।२०। समानकर्तृकयोः पूर्वकाले। ३।४।२१। आभीक्ष्ण्ये
णमुल्च। ३।४।२२। नयद्यनाकाङ्क्षे। ३।४।२३। विभावाग्रे प्रथमपूर्वेषु। ३।४।२४। कर्मण्याक्रोशे कृञ्ः खमुन्। ३।४।२५। स्वादुमिण।
मुल्। ३।४।२६। अन्यथैवं कथमित्यं सुसिद्धाप्रयोगश्चेत्। ३।४।२७। यथातथयोरस्य प्रतिवचने। ३।४।२८। कर्मणि हृशि विदोः सा
कल्पे। ३।४।२९। पावन्ति विन्द जीवोः। ३।४।३०। चर्मोदरयोः पूरेः। ३।४।३१। वर्षप्रमाणकलोपश्चास्यान्यतस्याम्। ३।४।३२। चेलैक्रो
पेः। ३।४।३३। निमूलसमूलयोः कषः। ३।४।३४। शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः। ३।४।३५। समूलाकृतजीवेषु हन् कृञ्ग्रहः। ३।४।३६। कर
णेहनः। ३।४।३७। स्नेहेनेपिषः। ३।४।३८। हस्तेवर्तिग्रहोः। ३।४।३९। स्वेपुषः। ३।४।४०। अधिकरणे बंधः। ३।४।४१। सञ्ज्ञायाम्। ३।४।४२
कर्त्रीर्जीविपुरुषयोर्न शिवहोः। ३।४।४३। ऊर्ध्वेषु पिषोः। ३।४।४४। उपमाने कर्मणि च। ३।४।४५। कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः॥
। ३।४।४६। उपदंशस्तृतीयायाम्। ३।४।४७। हिंसार्थानाञ्च समानकर्मकाणाम्। ३।४।४८। सप्तम्याञ्चोपपीडरुधकर्षः। ३।४।४९।
समासतौ। ३।४।५०। प्रमाणे च। ३।४।५१। अपादने परीप्सायाम्। ३।४।५२। द्वितीयायाञ्च। ३।४।५३। स्वाङ्गे ध्रुवे। ३।४।५४। परिक्रिय
माने च। ३।४।५५। विशिपतिपदि स्कन्दा व्याप्यमानासेव्यमानयोः। ३।४।५६। अस्पतितपोः क्रियान्तरे कालेषु। ३।४।५७। नाम्या
दिशिग्रहोः। ३।४।५८। अव्यये यथाभिप्रेताख्याने कृञ्ः क्वाणमुलौ। ३।४।५९। तिर्यचपवर्गे। ३।४।६०। स्वाङ्गे तस्य सये कृभ्वोः। ३।
४।६१। नाधार्यप्रत्यये च्यर्थे। ३।४।६२। तूष्णीमिभुवः। ३।४।६३। अन्वचानुलोम्ये। ३।४।६४। शकधषज्ञाग्लाघटरमलभक्रमस

अ० हाहास्यर्थेषु तु मुनः ३४६५ पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु ३४६६ कर्तरि कृत ३४६७ भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीयजन्याप्रायापा
 १३ त्यावा ३४६८ लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः ३४६९ तयोरेव कृत्यत्तरवलर्थाः ३४७० आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च ३४७१
 गत्यर्थो कर्मकस्त्रिषशीङ् स्यात्सर्वसजनरुहजीर्णतिभ्यश्च ३४७२ दाशगोघ्नोसम्प्रदाने ३४७३ भीमादयोपादाने ३४७४ ता
 भ्यामन्यत्रोणादयः ३४७५ क्तोधिकरणे च द्वौ व्यगतिप्रत्यवसानार्थेभ्यः ३४७६ लस्य ३४७७ तिप्तस्झिसिप्थस्य मिम्बस्म
 स्तातांश्चासायां ध्वमिड्वहिमहिङ् ३४७८ दित्वात्मनेपदानाण्टरे ३४७९ यासस्ते ३४८० लिट्स्नद्वयोरे शिरेच् ३४८
 ८१ परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुस णत्वमाः ३४८२ विदोलदोवा ३४८३ ब्रुवः पञ्चानामादित आहोब्रुवः ३४८४ लो
 दोलङ् ३४८५ एरुः ३४८६ सेर्त्यपि च ३४८७ वाचुन्दसि ३४८८ मेर्निः ३४८९ आमेतः ३४९० सवाभ्याम्वामौ
 ३४९१ आहुतमस्य पिच्च ३४९२ एतसे ३४९३ लेदोडादौ ३४९४ आतसे ३४९५ वैतो न्यत्र ३४९६ इतश्चलोपः
 परस्मैपदेषु ३४९७ सउत्तमस्य ३४९८ नित्यं डितः ३४९९ इतश्च ३५०० तस्यस्यमिपान्तान्तन्तामः ३५०१ लिङ्
 सीयुट् ३५०२ मासुट् परस्मैपदेषु दातोडिच् ३५०३ किदाशिषि ३५०४ द्यस्परन् ३५०५ इदोत् ३५०६ सुट्
 तिथोः ३५०७ द्वेजुस ३५०८ सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च ३५०९ आतः ३५१० लङ्ः शाकटायनस्यैवा ३५११ हि
 षश्च ३५१२ तिङ् शित्सार्वधातुकम् ३५१३ आर्द्धधातुकं शेषः ३५१४ लिट् ३५१५ लिङाशिषि ३५१६ छ
 न्दसुभयथा ३५१७ धातुसम्बन्धे समानाधिकरणे स्वाङ्गे लिट्स्नस्यस्यमिपांसप्तदश ॥ इति तृतीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः

॥४॥ ॥इति तृतीयोऽध्यायः॥३॥ ॥इति प्रातिपदिकात् ॥४॥ १॥ १॥ स्त्रौजसमौ दृष्टं भाष्मि सुदेभ्यां भ्यसुः सिभ्यां भ्यसुः सोसां भ्यः
 सुप्र ॥४॥ १॥ २॥ स्त्रियाम् ॥४॥ १॥ ३॥ अजाद्यतष्टाप् ॥४॥ १॥ ४॥ ऋन्नेभ्यो ङीष् ॥४॥ १॥ ५॥ उगितश्च ॥४॥ १॥ ६॥ वनोरच ॥४॥ १॥ ७॥ पादोन्यतरस्याम् ॥४॥
 १॥ ८॥ टाट्टचि ॥४॥ १॥ ९॥ नषट् स्वसादिभ्यः ॥४॥ १॥ १०॥ मनः ॥४॥ १॥ ११॥ अनो बहुव्रीहौ ॥४॥ १॥ १२॥ डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम् ॥४॥ १॥ १३॥ अनुप
 सज्जनात् ॥४॥ १॥ १४॥ टिड्ढा णञ् ह्यसज्जद्घञ्मात्रक्षयपृष्ठकृञ्कञ्क्वरपः ॥४॥ १॥ १५॥ यजश्च ॥४॥ १॥ १६॥ प्राचां षकतद्धितः ॥४॥ १॥ १७॥
 सर्वत्र लोहितादिकतन्तेभ्यः ॥४॥ १॥ १८॥ कौरव्यमाण्डूकाभ्याञ्च ॥४॥ १॥ १९॥ वयसि प्रथमे ॥४॥ १॥ २०॥ द्विगोः ॥४॥ १॥ २१॥ अपरिमाणवि
 स्ताचितकम्बल्येभ्यो नतद्धितलुकि ॥४॥ १॥ २२॥ काण्डान्तात्सेवे ॥४॥ १॥ २३॥ पुरुषात्प्रमाणेऽन्यतरस्याम् ॥४॥ १॥ २४॥ बहुव्रीहेरुधसो
 ङीष् ॥४॥ १॥ २५॥ सङ्ग्राह्ययादेङीष् ॥४॥ १॥ २६॥ दामहायनान्ताच्च ॥४॥ १॥ २७॥ अनउपधा लोपिनोऽन्यतरस्याम् ॥४॥ १॥ २८॥ नित्यंस
 न्ताच्छन्दसोः ॥४॥ १॥ २९॥ केवलमामकभागधेयपापापरसमानार्थकृतसुमङ्गलभेषजाच्च ॥४॥ १॥ ३०॥ एत्रेञ्चाजसौ ॥४॥ १॥ ३१॥ अन्तर्व
 त्यतिवतोर्नुक् ॥४॥ १॥ ३२॥ पत्सुर्नो यज्ञसंयोगे ॥४॥ १॥ ३३॥ विभाषासपूर्वस्य ॥४॥ १॥ ३४॥ नित्यंसपत्यादिषु ॥४॥ १॥ ३५॥ पूतकतोरैवा ॥४॥
 १॥ ३६॥ वृषाकप्यग्निकुसितकुसीदानामुदात्तः ॥४॥ १॥ ३७॥ मनोरौवा ॥४॥ १॥ ३८॥ वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः ॥४॥ १॥ ३९॥ अन्यतो ङीष्
 ॥४॥ १॥ ४०॥ षिद्गौरादिभ्यश्च ॥४॥ १॥ ४१॥ जानपदकुण्डगोणस्थलभाजनागकालनीलकुशकामुककवरुहृत्यमत्रावपनाहानिमा
 आणास्थौल्यवर्णनाच्छादनायोविकारमैशुनेच्छाकेशवेषेषु ॥४॥ १॥ ४२॥ शोणात्प्राचाम् ॥४॥ १॥ ४३॥ वोतो गुणवचनात् ॥४॥
 १॥ ४४॥ बहूादिभ्यश्च ॥४॥ १॥ ४५॥ नित्यं छन्दसि ॥४॥ १॥ ४६॥ भुवश्च ॥४॥ १॥ ४७॥ पुंयोगादाख्यायाम् ॥४॥ १॥ ४८॥ इन्द्रवरुणभवशर्वरु

अ०
१४

द्रुमडहिमारूपमवयवनमातुलाचार्याणामानुक् ४११४८०। क्रीतात्करणपूर्वित् ४११५०। क्तादल्पाख्यायाम् ४११५१। बहुव्रीहेश्च
नोदातात् ४११५२। अस्वाङ्गपूर्वपदाद्वा ४११५३। स्वाङ्गश्चोपसर्जनादसंयोगोपधात् ४११५४। नासिकोदरौ हजङ्गदन्तका
र्णशङ्गश्च ४११५५। नकोडादिवह्वचः ४११५६। सहनञ्चिद्यमानपूर्वाच्च ४११५७। नखमुखात्सञ्ज्ञायाम् ४११५८। दीर्घजिह्वीच
च्छन्दसि ४११५९। दिक्पूर्वपदान्डीप् ४११६०। बाहः ४११६१। सम्यग्शिञ्चीतिभाषायाम् ४११६२। जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् ४११६३।
पाककर्णपर्णपुष्पफलमूलवालोत्तरपदाच्च ४११६४। इतोमनुष्यजातेः ४११६५। ऊङुतः ४११६६। बाहूनात्सञ्ज्ञा
याम् ४११६७। पङ्गेनश्च ४११६८। ऊरुत्तरपदादौपम्ये ४११६९। संहितशफलक्षणवामादेश्च ४११७०। कद्रुकमंडलोश्चुन्द
सि ४११७१। सञ्ज्ञायाम् ४११७२। शार्ङ्गवाद्यमोडीन् ४११७३। यडश्चाप् ४११७४। आवट्याच्च ४११७५। तद्धिताः ४११७६।
यूनस्तिः ४११७७। अणिजोरनार्षयोगुरुत्पोत्तमयोः षड्गोत्रे ४११७८। गोत्रावयवात् ४११७९। कौड्यादिभ्यश्च ४११८०। देवया
न्तिशौचिद्विद्विषात्समुग्रिकाण्डेविहिभ्योऽन्यतरस्याम् ४११८१। समर्थानाम्प्रथमाद्वा ४११८२। प्राग्दीव्यतोऽण् ४११८३। अश्वप
त्यादिभ्यश्च ४११८४। दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्यः ४११८५। उक्तादिभ्योऽञ् ४११८६। स्त्रीपुंसाभ्यान्नञ्स्त्रजौभवनात्
४११८७। द्विगोलुगनपत्ये ४११८८। गोत्रेलुगवि ४११८९। मूलिलुक् ४११९०। फक्फिक्जोरन्यतरस्याम् ४११९१। तस्यापत्यम् रा०
४११९२। एकोगोत्रे ४११९३। गोत्राद्यन्यस्त्रियाम् ४११९४। अतड्ज् ४११९५। बाह्यादिभ्यश्च ४११९६। सुधातुरकड् ४११९७।
६०। गोत्रेकुञ्जादिभ्यश्चुक् ४११९८। नडादिभ्यः फक् ४११९९। हरितादिभ्योजः ४११९९०। यञिजोश्च ४११९९१। शरद्व

रा०
१४

चुनकदर्भाद्रुगुवत्सायायुणेषु।४।१।१०२।द्रोणपर्वतजीवन्तादन्यतरस्याम्।४।१।१०३।अनन्यानन्तर्येविदादिभ्योञ्।४।
१।१०४।गर्गादिभ्योयञ्।४।१०५।मधुबभ्रोर्ब्राह्मणकौशिकयोः।४।१।१०६।कपिवोधादाङ्गिरसे।४।१।१०७।वतण्डाच्च।४।१।
१०८।लुकस्त्रियाम्।४।१।१०९।अश्वादिभ्यःफञ्।४।१।११०।भर्गात्रैगर्ते।४।१।१११।शिवादिभ्योण्।४।१।११२।अहह्माभ्योन
दीमानुषीभ्यस्तन्नामिकाभ्यः।४।१।११३।ऋष्यन्धकेटुष्णिगुरुभ्यश्च।४।१।११४।मातुरुत्सङ्ग्या संभद्रपूर्वायाः।४।१।११५
कन्यायाःकनीनच।४।१।११६।विकर्णशुङ्गच्छगलाहत्सभरहाजात्रिषु।४।१।११७।पीलायावो।४।१।११८।ढक्कमण्डकात॥
४।१।११९।स्त्रीभ्योढक्।४।१।१२०।ह्यचः।४।१।१२१।दुतश्चानिजः।४।१।१२२।शुभ्रादिभ्यश्च।४।१।१२३।विकर्णकुषीतकात्काश्य
पे।४।१।१२४।भुवोवुक्।४।१।१२५।कल्याण्यादीनामिनङ्।४।१।१२६।कुलतायावा।४।१।१२७।चटकायाऐरक्।४।१।१२८॥
गोधायाढक्।४।१।१२९।आरगुदीचाम्।४।१।१३०।सुद्राभ्योवा।४।१।१३१।पितृषुसुष्ठूण्।४।१।१३२।ढकिलोपः।४।१।१३३।
मातृषुसुश्च।४।१।१३४।चतुष्पाभ्योढञ्।४।१।१३५।गृह्यादिभ्यश्च।४।१।१३६।राजश्चसुरद्यत्।४।१।१३७।सत्राद्दुः।४।१।१३८॥
कुलात्त्वः।४।१।१३९।अपूर्वपदादन्यतरस्यांयढ्कजौ।४।१।१४०।महाकुलादञ्ज्वजौ।४।१।१४१।दुष्कुलाढक्।४।१।१४२।स्व
सुष्ठूः।४।१।१४३।भ्रातुर्व्यच्।४।१।१४४।व्यन्तपत्ने।४।१।१४५।रेवत्यादिभ्यश्चक्।४।१।१४६।गोत्रस्त्रियांकुत्सनेणच।४।१।१४७
ह्रद्वाढ्कतौवीरेषुबहुलम्।४।१।१४८।फेच्छुच।४।१।१४९।फाण्डाहतिमिमताभ्यांणफिजौ।४।१।१५०।कुर्वादिभ्योण्यः।४।१।१५१
सैनान्तलक्षणकारिभ्यश्च॥ ४।१।१५२।उदीचामिञ्।४।१।१५३।तिकादिभ्यःफिञ्।४।१।१५४।कौशल्यकार्मार्याभ्याञ्च।४।१।१५५॥

अ० अणोद्यवः ४।१।१५६ उदीचां हृद्वाद्गोत्रात् ४।१।१५७ वाकिनादीनाङ्कुक्वा ४।१।१५८ पुत्रान्तादन्यतरस्याम् ४।१।१५९ प्राचामहृ
 १५ हृत्किन्वहुलम् ४।१।१६० मनोजातावज्यतोषुक् ४।१।१६१ अपत्यं पौत्रप्रभृतिगोत्रम् ४।१।१६२ जीवतितुवंश्येषुवा ४।१।१
 ६३ भ्रातरिचज्यायसि ४।१।१६४ वान्यस्मिंस्त्रिण्डेस्यविरतरेजीवति ४।१।१६५ हृद्दस्यचपूजायाम् ४।१।१६६ मूनश्चकुत्सा
 याम् ४।१।१६७ जनपदशब्दात्सत्रियादञ् ४।१।१६८ साल्वेयगान्धारिभ्याञ्च ४।१।१६९ ह्यञ्मगधेकलिङ्गस्त्रमसादण्
 ४।१।१७० हृद्देत्कोसलाजादान्यङ् ४।१।१७१ कुरुनादिभ्योऽप्यः ४।१।१७२ साल्वावयवप्रत्ययश्चकलकूटाश्मकादिभ्यः ४।
 १।१७३ तैतद्राजाः ४।१।१७४ कम्बोजाल्लुक् ४।१।१७५ स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च ४।१।१७६ अतश्च ४।१।१७७ न
 नप्राच्यभर्गादियौधेयादिभ्यः ४।१।१७८ ङ्ङ्गोऽपिद्वौऽदिवाहोदैवयज्ञियजिजोर्वाचोमहाकुलान्मनोजातावष्टा
 दश ॥ इति चतुर्थाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥ १ ॥ तेनरक्तं रगात् ४।२।१ लाक्षारेचनाशकलकर्दमाढुक ४।२।२ नक्षत्रे
 णयुक्तकालः ४।२।३ लुबविशेषे ४।२।४ सञ्ज्ञायांश्रवणाश्चस्थाभ्याम् ४।२।५ हृद्वाच् ४।२।६ हृष्टं साम ४।२।७ कलेढ
 क् ४।२।८ वामदेवाङ्गुल्यौ ४।२।९ परिहृतेरथः ४।२।१० पाण्डुकं वलादिनिः ४।२।११ द्वैपवैय्याघ्रादञ् ४।२।१२ कौमा
 रपूर्ववचने ४।२।१३ तत्रोद्धतममन्त्रेभ्यः ४।२।१४ स्थण्डिलाच्छ्रितरित्रते ४।२।१५ संस्कृतं भक्षाः ४।२।१६ शलोखाद्य
 त् ४।२।१७ दध्नङ् ४।२।१८ उदश्चितोऽन्यतरस्याम् ४।२।१९ क्षीराढुञ् ४।२।२० सास्मिन्यौर्णमासीतिसञ्ज्ञायाम् ४।२।
 २१ आग्रहायण्यश्चत्वारिंशद् ४।२।२२ विभाषाफाल्गुनीश्रवणाकार्तिर्कीचैत्रीभ्यः ४।२।२३ सास्यदेवता ४।२।२४ कस्येत

४।२।२५। शुक्राह्वन्। ४।२।२६। अपोनप्रपानप्रभ्याङ्गः। ४।२।२७। छवा। ४।२।२८। महेन्द्राह्वाणौवा। ४।२।२९। सोमात्यण्। ४।२।
३०। वायुतुपितृषसोयत्। ४।२।३१। द्यावापृथिवीशुनासीरमरुत्वदग्नीषोमवास्तोष्यतिगृहमेधाच्छवा। ४।२।३२। अग्नेर्दृक्। ४।
२।३३। कालेभ्योभववत्। ४।२।३४। महाराजप्रोष्ठपदादृक्। ४।२।३५। पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः। ४।२।३६। तस्यसमूहः॥
४।२।३७। भिक्षादिभ्योण्। ४।२।३८। गोत्रोद्देशेभ्राजराजन्यराजपुत्रवत्समनुष्याजाहुन्। ४।२।३९। केदारचञ्चु। ४।२।४०। ऋक्
वचिनश्च। ४।२।४१। ब्राह्मणमाणववाडवाद्यत्। ४।२।४२। ग्रामजनबन्धुसहायेभ्यस्तल्। ४।२।४३। अनुदात्तादेरञ्। ४।२।४४।
खण्डिकादिभ्यश्च। ४।२।४५। चरणेभ्यो धर्मवत्। ४।२।४६। अचित्तहस्तिधेनोऽृक्। ४।२।४७। केशाश्चाभ्यां यञ्छावन्त्यतरस्या
म्। ४।२।४८। पाशादिभ्यो यः। ४।२।४९। खलगोरथात्। ४।२।५०। इनित्रकट्यचश्च। ४।२।५१। विषयोदेशे। ४।२।५२। राजन्यादिभ्यो
बुञ्। ४।२।५३। भौरिक्याद्यैषु कार्यादिभ्यो विधत्तत्तलौ। ४।२।५४। सोऽस्यादिरिति च्छन्दसः प्रगाथेषु। ४।२।५५। संग्रामे प्रयोज
नयोद्धयः। ४।२।५६। तदस्यां प्रहरणमिति क्रीडायां णः। ४।२।५७। घनः सास्याङ्घ्रियेति जः। ४।२।५८। तदधीतेतद्वेद। ४।२।५९।
क्रतूक्यादिस्त्रान्तादृक्। ४।२।६०। क्रमादिभ्यो बुन्। ४।२।६१। अनुब्राह्मणादिनिः। ४।२।६२। वसन्तादिभ्यश्च। ४।२।६३।
प्रोक्ताल्लुक्। ४।२।६४। स्त्राच्च कोपधात्। ४।२।६५। छन्दोब्राह्मणानि चतर्हिषयाणि। ४।२।६६। तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्ता
म्नि। ४।२।६७। तेन निर्हतम्। ४।२।६८। तस्य निवासः। ४।२।६९। अदूरभवश्च। ४।२।७०। ओरञ्। ४।२।७१। मतोश्च बहुजङ्ग
त्। ४।२।७२। बहुचः कूपेषु। ४।२।७३। उदक् विपाशः। ४।२।७४। सङ्कुलादिभ्यश्च। ४।२।७५। स्त्रीषुसौवीरसाल्वप्राक्षु॥

अ०
१६

४।२।७६। सुवास्त्वादिभ्योण्। ४।२।७७। रोणी। ४।२।७८। कोपधाच्च। ४।२।७९। वुञ्छणकठजिलसेनिर्द्वयपयकविक्रिज्यककठको
रीहणकशाश्चर्यकुसुदकाशतणमेशाश्मसरिवसङ्काशवलपक्षकर्णसुतङ्गम प्रगदिन्वराहकुमुदादिभ्यः। ४।२।८०। जन
पदेलुप्। ४।२।८१। वरणादिभ्यश्च। ४।२।८२। शर्करयावा। ४।२।८३। ठक्छौचा। ४।२।८४। नद्यांमंतुप्। ४।२।८५। मध्यादिभ्यश्च। ४।
२।८६। कुमुदनडवेतसेभ्योङ्गुतुप्। ४।२।८७। नडशादाङ्गुलच। ४।२।८८। शिरवायावलच। ४।२।८९। उत्करादिभ्यश्च। ४।२।९०। न
डादिनाङ्क। ४।२।९१। शेषे। ४।२।९२। राष्ट्रावारपाराहुरेवौ। ४।२।९३। ग्रामाद्याखजौ। ४।२।९४। कर्त्रादिभ्योठक्। ४।२।९५।
कुलकुक्षिग्रीवाभ्यश्चास्यलंकारेषु। ४।२।९६। नद्यादिभ्योठक्। ४।२।९७। दक्षिणापश्चात्पुरसस्यक। ४।२।९८। कापिष्याष्क
। ४।२।९९। रङ्गेरमनुष्येण्च। ४।२।१००। द्युप्रागपागुदक्प्रतीचोयत्। ४।२।१०१। कश्यायाष्ठक्। ४।२।१०२। वर्णौवुक्। ४।२।१०३।
अययात्यप्। ४।२।१०४। ऐषमोह्यश्चसोऽन्यतरस्याम्। ४।२।१०५। तीररूप्योत्तरपदादञ्ज्यौ। ४।२।१०६। दिक्पूर्वपदादसञ्ज्ञायां
जः। ४।२।१०७। मट्रेभ्योऽञ्। ४।२।१०८। उदीच्यग्रामाच्चबह्वोन्तोदात्तात्। ४।२।१०९। प्रस्थोत्तरपदपलद्यादिकोपधादण्। ४।
२।११०। कण्वादिभ्योगोत्रे। ४।२।१११। इजश्च। ४।२।११२। नद्यचः प्राच्यभरतेषु। ४।२।११३। हृद्वाच्छुः। ४।२।११४। भवतष्ठक्छसौ
। ४।२।११५। काश्यादिभ्यष्ठञ्जिगौ। ४।२।११६। वाहीकग्रामेभ्यश्च। ४।२।११७। विभाषोशीनरेषु। ४।२।११८। ओर्देशेठञ्। ४।२।
११९। हृद्वात्प्राचाम्। ४।२।१२०। धन्वयोपधाहुञ्। ४।२।१२१। प्रस्थपुरवहान्ताच्च। ४।२।१२२। रोपधेतोः प्राचाम्। ४।२।१२३। जनपद
तदवधोश्च। ४।२।१२४। अहृद्वादपिबहुवचनविषयात्। ४।२।१२५। कच्छागिवक्त्रगर्तोत्तरपदात्। ४।२।१२६। धूमादिभ्यश्च ॥

रा०
१६

॥४॥२॥१२॥नगरकुत्सनप्रावीण्ययोः॥४॥२॥१२॥अण्यन्मनुष्ये॥४॥२॥१२॥विभाषाकुरुगन्धराभ्याम्॥४॥२॥१३॥मद्रवृज्योः
कनू॥४॥२॥१३॥कोपधादणू॥४॥२॥१३॥कच्छादिभ्यश्च॥४॥२॥१३॥मनुष्यतत्स्थयोर्वुञ्ज॥४॥२॥१३॥अपदातोसाल्वात्॥४॥२॥
॥१३॥गोयवाग्वोश्च॥४॥२॥१३॥गर्तेतरपदाच्छः॥४॥२॥१३॥गहादिभ्यश्च॥४॥२॥१३॥प्राचाङ्कुटादेः॥४॥२॥१३॥रङ्गः कचा॥४॥२॥
॥१४॥हृद्वादेकेकान्तरवोपधात्॥४॥२॥१४॥कन्यापलदनगरग्रामहृद्वात्तरपदात्॥४॥२॥१४॥पर्वताच्च॥४॥२॥१४॥विभाषा
मनुष्ये॥४॥२॥१४॥कृकणयर्णाद्वारहजो॥४॥२॥१४॥तेनसास्मिन्नुञ्जक्रमादिभ्योजनपदेद्युप्रागपागधन्वहृद्वात्यञ्च॥४॥२॥
॥ इतिचतुर्थाध्यायस्यद्वितीयःपादः॥२॥ ॥युष्मदस्मदोरन्यतरस्योरवञ्च॥४॥३॥१॥तस्मिन्नाणिचयुष्माकास्माकौ॥४॥३॥२॥
तवकममकावेकवचने॥४॥३॥३॥अर्ह्यत्॥४॥३॥४॥परावराधमेतमपूर्वाच्च॥४॥३॥५॥दिक्पूर्वपदाद्वञ्च॥४॥३॥६॥ग्रामजनपदे
कदेशादञ्वजो॥४॥३॥७॥मध्यान्मः॥४॥३॥८॥असाम्प्रतिके॥४॥३॥९॥दीपोदनुसमुद्रंयञ्ज॥४॥३॥१०॥कालाद्वञ्ज॥४॥३॥११॥आदेश
रदः॥४॥३॥१२॥विभाषारोगातपयोः॥४॥३॥१३॥निशाप्रदोषाभ्याञ्च॥४॥३॥१४॥श्वसस्तुङ्ग॥४॥३॥१५॥सन्धिवेलाद्युतुनक्षत्रेभ्योऽण
॥४॥३॥१६॥प्राहृषण्यः॥४॥३॥१७॥वर्षाभ्यष्टक॥४॥३॥१८॥छन्दसिठञ्ज॥४॥३॥१९॥वसन्ताच्च॥४॥३॥२०॥हेमन्ताच्च॥४॥३॥२१॥सर्वत्राण
चतलोपश्च॥४॥३॥२२॥सापञ्चिरम्प्राणहेप्रगेऽव्ययेभ्यश्च्युत्युलौतुङ्ग॥४॥३॥२३॥विभाषापूर्वाण्हापराण्हाभ्याम्॥४॥३॥२४॥तत्र
जातः॥४॥३॥२५॥प्राहृषण्यः॥४॥३॥२६॥सञ्ज्ञायांशारदोवुञ्ज॥४॥३॥२७॥पूर्वाण्हापराण्हाद्रामूलप्रदोषावस्केराहुन्॥४॥३॥२८॥
पथःपन्यचा॥४॥३॥२९॥अमावास्यायावा॥४॥३॥३०॥अच॥४॥३॥३१॥सिन्ध्वपकराभ्याङ्कुन्॥४॥३॥३२॥अणञौच॥४॥३॥३३॥अवि

अ० ११ फलानुनुराधास्वातितिष्यपुनर्वसुहस्तविशारवाषाढाबहुलाल्लुक ४।३।३४। स्थानान्तगोशालरवरशालाच्च। ४।३।३५। वत्स
 शालामिजिदम्बयुकुच्छतभिषजोवा। ४।३।३६। नक्षत्रेभ्यो बहुलम्। ४।३।३७। कृतलब्धक्रीतकुशलाः। ४।३।३८। प्रायभवः। ४।३।
 ३९। उपजानूपकर्णोपनीवेष्टक। ४।३।४०। सम्भूते। ४।३।४१। कोशादुज्ज। ४।३।४२। कालात्साधुपुष्पत्यच्यमानेषु। ४।३।४३। उष्टे
 च। ४।३।४४। ओम्बयुज्यावुज्ज। ४।३।४५। ग्रीष्मवसन्तादन्यतरस्याम्। ४।३।४६। देयमणे। ४।३।४७। कलाप्यश्चत्ययववुसादुन। ४।३।
 ४८। ग्रीष्मावसमादुज्ज। ४।३।४९। संवत्सरग्रहायणीभ्यांठञ्ज। ४।३।५०। व्याहरतिमगः। ४।३।५१। तदस्यसोढम्। ४।३।५२। तत्रभवः
 ४।३।५३। दिगादिभ्योयत्। ४।३।५४। शरीरावयवाच्च। ४।३।५५। दृतिकुक्षिकलशिवस्यस्यहेर्दञ्ज। ४।३।५६। ग्रीवाभ्योपञ्च। ४।३।५७।
 गर्भाणञ्जः। ४।३।५८। अव्ययीभावाच्च। ४।३।५९। अन्तःपूर्वपदादुज्ज। ४।३। ६०। ग्रामात्यर्यनुपूर्वात्। ४।३।६१। जिह्वामूलाङ्गुलेष्णुः।
 ४।३।६२। वर्गताञ्ज। ४।३।६३। अशब्देयत्वावन्यतरस्याम्। ४।३।६४। कर्णललाटात्कनलङ्गारे। ४।३।६५। तस्यव्याख्याने इतिचव्या
 ख्यातव्यनाम्नः। ४।३।६६। बहुचोत्तोदात्तादुज्ज। ४।३।६७। क्रतुयज्ञेभ्यश्च। ४।३।६८। अध्यायेष्टेवर्षे। ४।३।६९। पौरोडाशपुरोडाशा
 त्सुन। ४।३।७०। छन्दसोमदणौ। ४।३।७१। ह्यजद्वाह्यणर्कमथमाध्वरपुरश्चरणनामाख्यातादृक्। ४।३।७२। अणुगयनादिभ्यः। ४।३।
 ७३। ततआगतः। ४।३।७४। ठगायस्योनेभ्यः। ४।३।७५। शुण्डिकादिभ्योऽण्। ४।३।७६। विद्यायोनिस्त्वेभ्योवुज्ज। ४।३।७७। क्रतु
 षञ्ज। ४।३।७८। पितुर्यञ्ज। ४।३।७९। गोत्राद्यङ्गुवत्। ४।३।८०। हेतुमनुष्येभ्योऽन्यतरस्यांरूप्यः। ४।३।८१। मयद्गु। ४।३।८२। प्रभवति
 ४।३।८३। विदूराज्यः। ४।३।८४। तद्गच्छतिपथिदूतयोः। ४।३।८५। अभिनिष्क्रामतिद्वारम्। ४।३।८६। अधिकृत्यकृतेग्रन्थे। ४।३।

८७। शिशुकन्दयमसमहं देवजननादिभ्यश्चुः। ४। ३। ८८। सेहस्यनिवासः। ४। ३। ८९। अभिजनश्च। ४। ३। ९०। आयुधजीविभ्यश्चुः।
पर्वतो। ४। ३। ९१। शण्डिकादिभ्योऽन्यः। ४। ३। ९२। सिन्धुतसुशिलादिभ्योऽणञौ। ४। ३। ९३। तूदीशलातुरवर्मतीकूचवारादृक्कुच्छण
ढव्यकः। ४। ३। ९४। भक्तिः। ४। ३। ९५। अविताददेशकालादृक्। ४। ३। ९६। महाराजादृञ्। ४। ३। ९७। वामदेवार्जुनाभ्यां वुञ्। ४। ३। ९८।
गोत्रक्षत्रियार्यभ्यो बहुलं वुञ्। ४। ३। ९९। ॥ जनपदिनाञ्जनपदवत्सर्वञ्जनपदेन समानशब्दानां बहुवचने। ४। ३। १००। तेन प्रो
क्तम्। ४। ३। १०१। तित्तिरिव रतन्तुरवण्डिको स्वाच्छुण्। ४। ३। १०२। काश्यपकोशिकाभ्यामपिभ्यां णिनिः। ४। ३। १०३। कलापिवैशंपा
यनान्तेवासिभ्यश्च। ४। ३। १०४। पुण्यप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु। ४। ३। १०५। शौनकादिभ्यश्चुन्दसि। ४। ३। १०६। कठचरकाल्लुक। ४।
३। १०७। कलापिनोण्। ४। ३। १०८। छगलिनोढिनुक्। ४। ३। १०९। पाराशर्यशिलालिभ्यां भिस्सुनटसूत्रयोः। ४। ३। ११०। कर्मन्दक
शाश्चादिनिः। ४। ३। १११। तेनैकदिक्। ४। ३। ११२। तसिश्च। ४। ३। ११३। उरसोपच। ४। ३। ११४। उपज्ञाते। ४। ३। ११५। कृतेग्रन्थे। ४। ३। १
१६। सञ्ज्ञायाम्। ४। ३। ११७। कुलालादिभ्यो वुञ्। ४। ३। ११८। सुद्राभ्रमखट्वापादपादञ्। ४। ३। ११९। तस्मिदम्। ४। ३। १२०। रथाद्यत्
४। ३। १२१। पत्रपूर्वादञ्। ४। ३। १२२। यत्राध्वर्युपरिषदश्च। ४। ३। १२३। हलसीरादृक्। ४। ३। १२४। हन्द्वाहुनैरमैशुनिकयोः। ४। ३। १
२५। गोत्रचरणादुञ्। ४। ३। १२६। सङ्घादुलक्षणेऽन्यजिजामण्। ४। ३। १२७। शाकलाद्वा। ४। ३। १२८। छन्दोगौविथकयाशिक।
वक्वचनटाज्यः। ४। ३। १२९। नदण्डमाणवान्तेवासिषु। ४। ३। १३०। रैवतिकादिभ्यश्चुः। ४। ३। १३१। कोपिञ्जलहास्तिपदादण्। ४। ३।
१३२। आथर्वणिकस्यैकलोपश्च। ४। ३। १३३। तस्य विकारः। ४। ३। १३४। अवयवे च प्राण्योषधि वृक्षेभ्यः। ४। ३। १३५। बिल्वादिभ्यो

अ० अ१४।३९३६।कोपधाच्च।४।३।९३७।त्रयुजतुनोःषुका।४।३।९३८।ओरञ्ज।४।३।९३९।अनुदातादेश्या।४।३।९४०।पलाशादिभ्योवा।४।३।
१८।९४१।शम्यादृञ्।४।३।९४२।मयडैतयोर्भाषायामभस्याच्छादनयोः।४।३।९४३।नित्यं वृद्धशरादिभ्यः।४।३।९४४।गोश्चपुरीषे।४।
३।९४५।पिष्टौच।४।३।९४६।संज्ञायांकन्।४।३।९४७।त्रीहे पुरोडाशे।४।३।९४८।असंज्ञायांतिलयवाभ्याम्।४।३।९४९।ह्यच
स्तुत्सि।४।३।९५०।नोत्वद्बिल्वात्।४।३।९५१।ताल्लादिभ्योण्।४।३।९५२।जातरूपेभ्यःपरिमाणे।४।३।९५३।प्राणिरजतादि।
भ्योज्ञ।४।३।९५४।नितस्वतत्प्रत्ययात्।४।३।९५५।क्रीतवत्परिमाणात्।४।३।९५६।उष्ठादृञ्।४।३।९५७।उमोर्णयोर्वी।४।३।९५८।
एण्यादृञ्।४।३।९५९।गोपयसौर्यत्।४।३।९६०।द्रोश्चा।४।३।९६१।मानैवयः।४।३।९६२।फलेलुकै।४।३।९६३।ल्लसादिभ्योण्।
४।३।९६४।जाम्बावा।४।३।९६५।लुप्पा।४।३।९६६।हरीतक्यादिभ्यश्च।४।३।९६७।कंसोपपरशव्ययोर्यन्नोलुक्।४।३।९६८।
मुष्मदेमन्तात्संभूतेग्रामाद्देतुतेनरथात्पलाशादिभ्योद्रोश्चाष्टौ॥ ॥ इति चतुर्थध्यायस्य तृतीयः पादः॥ ३॥ ॥ प्राग्वह
तेष्टकु।४।४।१।तेनदीव्यतिखनतिजयतिजितम्।४।४।२।संस्कृतम्।४।४।३।कुलत्यकोपधादण्।४।४।४।तरति।४।४।५।गोपु
च्छादृञ्।४।४।६।नोह्यचष्टन्।४।४।७।चरति।४।४।८।आकर्षात्छल्।४।४।९।पर्प्यादिभ्यश्च।४।४।१०।श्वगणादृञ्चा।४।४।११।वे
तनादिभ्योजीवति।४।४।१२।वस्त्रक्रयविक्रयादृञ्।४।४।१३।आयुधाच्छच्।४।४।१४।हरत्युत्सङ्गादिभ्यः।४।४।१५।भस्त्रादिभ्यः।
ष्टन्।४।४।१६।विभाषाविवधवीवधात् ॥४।४।१७।अण्कुटिलिकायाः।४।४।१८।निर्वृतेक्षद्युतादिभ्यः।४।४।१९।केर्मन्मित्यम्
।४।४॥ २०।अयमित्ययाविताभ्यांकक्नौ।४।४।२१।संस्पृष्ट।४।४।२२।चूर्णादिभिः।४।४।२३।लवणाल्लुक्।४।४।२४।मुहादण्॥ २॥

॥४॥४॥२५॥व्यञ्जनैरुपसिक्ते ॥४॥४॥२६॥ ओजस्तुहोमसावर्तते ॥४॥४॥२७॥ तत्प्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलम् ॥४॥४॥२८॥ परिमुरवञ्च
॥४॥४॥२९॥ मयच्छतिगर्ह्यम् ॥४॥४॥३०॥ कुसीददशैकादशात्पुनश्चौ ॥४॥४॥३१॥ उञ्छति ॥४॥४॥३२॥ रक्षति ॥४॥४॥३३॥ शब्ददु
रङ्कुरेति ॥४॥४॥३४॥ पक्षिमत्स्यमगाहन्ति ॥४॥४॥३५॥ परिपन्यञ्चतिष्ठति ॥४॥४॥३६॥ माथोत्तरपदपदव्यनुपदन्धावति ॥४॥४॥३७॥
आक्रन्दहञ्च ॥४॥४॥३८॥ पदोत्तरपदङ्गुणाति ॥४॥४॥३९॥ प्रतिकण्ठार्थललामञ्च ॥४॥४॥४०॥ धर्मञ्चरति ॥४॥४॥४१॥ प्रतिपथमेति
ठञ्च ॥४॥४॥४२॥ समवायात्समवैति ॥४॥४॥४३॥ परिषदोप्यः ॥४॥४॥४४॥ सेनायावा ॥४॥४॥४५॥ सञ्ज्ञायांललाटकुक्कुट्योपश्यति
॥४॥४॥४६॥ तस्यधर्म्यम् ॥४॥४॥४७॥ अण्महिष्यादिभ्यः ॥४॥४॥४८॥ ऋतोञ्च ॥४॥४॥४९॥ अवक्रयः ॥४॥४॥५०॥ तदस्यपण्यम् ॥४॥४॥५१॥
लवणाहुञ्च ॥४॥४॥५२॥ किसरादिभ्यःष्टन् ॥४॥४॥५३॥ शलालुनोऽन्यतरस्याम् ॥४॥४॥५४॥ शिल्पम् ॥४॥४॥५५॥ मङ्गुकङ्गद्वीरेदणन्य
तरस्याम् ॥४॥४॥५६॥ प्रहरणम् ॥४॥४॥५७॥ परस्वधाहुञ्च ॥४॥४॥५८॥ प्राक्तियङ्योरीकक् ॥४॥४॥५९॥ अस्तिना^०स्तिदिष्टमतिः ॥४॥
॥४॥६०॥ शीलम् ॥४॥४॥६१॥ छत्रादिभ्योणः ॥४॥४॥६२॥ कर्माध्ययनेवृत्तम् ॥४॥४॥६३॥ बह्वचपूर्वपदाहुञ्च ॥४॥४॥६४॥ हितंभक्षाः ॥४॥
॥४॥६५॥ तदस्मैदीयतेनियुक्तम् ॥४॥४॥६६॥ आणामांसौदनाट्टिठन् ॥४॥४॥६७॥ भक्तादणन्यतरस्याम् ॥४॥४॥६८॥ तत्रनियुक्तः
॥४॥४॥६९॥ आगारान्ताहुन् ॥४॥४॥७०॥ अध्यायिन्यदेशकालात् ॥४॥४॥७१॥ कठिनान्तमस्तारसंस्थानेषुव्यवहरति ॥४॥४॥७२॥
निकटेवसति ॥४॥४॥७३॥ आवसथात्प्लु ॥४॥४॥७४॥ प्राग्विताद्यत् ॥४॥४॥७५॥ तद्वहतिरथयुगप्रासङ्गम् ॥४॥४॥७६॥ धुरोय
द्वौ ॥४॥४॥७७॥ खःसर्वधुरात् ॥४॥४॥७८॥ एकधुरल्लुक् ॥४॥४॥७९॥ शकटादण् ॥४॥४॥८०॥ हलसीराहुक् ॥४॥४॥८१॥ सञ्ज्ञा

अ०
१८

याज्ञन्याः॥४॥८२॥विध्यस्यधनुषा॥४॥८३॥धनगणलब्धा॥४॥८४॥अन्नाण्णः॥४॥८५॥वशद्रुतः॥४॥८६॥पदमस्मिन्दृश्यम्॥
४॥८७॥मूलमस्यावर्हि॥४॥८८॥सज्जायान्धेनुष्या॥४॥८९॥गृहपतिनासंयुक्तेज्यः॥४॥९०॥नौवयोधर्मविषमूलमूलसीता
तुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाभ्यसमसमितसमितेषु॥४॥९१॥धर्मपथ्यर्थन्यायादनवेतो॥४॥९२॥छन्दसोनिर्मिते॥४॥
९३॥उरसोप्रा॥४॥९४॥हृदयस्यप्रियः॥४॥९५॥वन्धनेचर्वो॥४॥९६॥मतजनहलात्करणजल्पकर्षेषु॥४॥९७॥तत्रसाधुः
॥४॥९८॥प्रतिजनादिभ्यःखञ्॥४॥९९॥भक्ताण्णः॥४॥१००॥परिषदोप्यः॥४॥१०१॥कथादिभ्यश्चकु॥४॥१०२॥गुडादिभ्य
श्चञ्॥४॥१०३॥पथ्यतिथिवसतिस्वपते ढञ्॥४॥१०४॥सभायायः॥४॥१०५॥हृच्छुन्दसि॥४॥१०६॥समानतीर्थेवासी॥४॥
१०७॥समानोदरे शयितोचोदातः॥४॥१०८॥सोदराद्यः॥४॥१०९॥भवेच्छन्दसि॥४॥११०॥पाथोनदीभ्याण्ड्यण्॥४॥१११॥
वेशन्तहिमवभ्यामण्॥४॥११२॥स्त्रोतसोविभाषाड्यड्यो॥४॥११३॥सगर्भसमूयसनुताद्यन्॥४॥११४॥तुग्राहन्॥४॥
११५॥अग्राद्यत्॥४॥११६॥घञ्चौच॥४॥११७॥समुद्राभ्राह्मः॥४॥११८॥वर्हिषिदत्तम्॥४॥११९॥दूतस्यभागकर्मणी॥४॥
१२०॥रक्षोयातूनोहननी॥४॥१२१॥रेवतीजगतीहविष्याभ्यःप्रशस्ये॥४॥१२२॥असुरस्यस्वम्॥४॥१२३॥मायायामण्॥४॥
१२४॥तद्वानासामुपधानोमन्त्रद्वितीष्टकासुलुक्कमतोः॥४॥१२५॥अश्विमानण्॥४॥१२६॥वयस्यासुमूर्धोमतुप्॥४॥
१२७॥मत्वर्थेमासतन्वोः॥४॥१२८॥मघोर्जच॥४॥१२९॥ओजसोहनियतैवो॥४॥१३०॥वेशोयशआदेर्मगाद्यल्॥४॥
१३१॥खच॥४॥१३२॥पूर्वैःकृतमिनियौच॥४॥१३३॥अद्रिःसंस्कृतम्॥४॥१३४॥सहस्रेणसमितौघः॥४॥१३५॥मतौच॥

सु०
१८

४।४।१३६।सोममर्हति यः।४।४।१३७।मयेचा।४।४।१३८।मघोः।४।४।१३९।वसोः समूहेचा।४।४।१४०।नसत्राहुः।४।४।१४१।सर्व
देवातातिल।४।४।१४२।शिवशमरिष्टस्यकरे।४।४।१४३।भावेचा।४।४।१४४।प्राग्वहतेरयमित्यधर्मशीलं हलपरिषदोः।४।४।१४५।
सत्राचत्वारि॥ ॥इतिचतुर्थोऽध्यायस्त्वचतुर्थः पादः॥४॥ ॥इतिचतुर्थोऽध्यायः॥ ॥माक्रीताच्छः॥५।१।१।उगवादिभ्योयत्॥
५।१।२।कंवलाच्चसञ्ज्ञायाम्।५।१।३।विभाषाहविरपूपादिभ्यः।५।१।४।तस्मैहितम्।५।१।५।शरीरावयवाद्यत्।५।१।६।खल
यवमाषतिलवृषव्रह्मणश्च।५।१।७।अजाविभ्यांश्चन।५।१।८।आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात्त्वः।५।१।९।सर्वपुरुषाभ्यांणह
जौ।५।१।१०।माणवचरकाभ्यांरवञ्च।५।१।११।तदर्थंविहतेःप्रकृतौ।५।१।१२।छदिरुपधिवलेढञ्च।५।१।१३।नृषभोपानहो
र्ज्यः।५।१।१४।चर्मणोञ्च।५।१।१५।तदस्यतदस्मिन्त्यादिति।५।१।१६।परिखायाढञ्च।५।१।१७॥ प्राग्वतेष्टञ्च।५।१।१८।अर्हो
दगोपुच्छसङ्ख्यापरिमाणारुक्।५।१।१९।असमासेनिष्कादिभ्यः।५।१।२०।शताच्चठन्यतावशते।५।१।२१।सङ्ख्यायाअतिशद
न्तायाःकनू।५।१।२२।वतोरिड्वा।५।१।२३।विंशतित्रिंशभ्यांङुनसञ्ज्ञायाम्।५।१।२४।कंसाद्विठनू।५।१।२५।शूपादिजन्यतर
स्याम्।५।१।२६।शतमानविंशतिकसहस्रवसनादण्।५।१।२७।अध्यर्हपूर्वद्विगोर्लुगसञ्ज्ञायाम्।५।१।२८।विभाषाकार्षीप
णसहस्राभ्याम्।५।१।२९।द्वित्रिपूर्वान्निष्कात्।५।१।३०।विस्ताच्च।५।१।३१।विंशतिकात्त्वः।५।१।३२।खाय्पीडकनू।५।१।३३।प
णपादमाषशताद्यत्।५।१।३४।शाणाद्वा।५।१।३५।द्वित्रिपूर्वादण्व।५।१।३६।तेनक्रीतम्।५।१।३७।तस्यनिमित्तंसंयोगोत्पातौ॥
५।१।३८।गोह्यचोसंख्यापरिमाणाश्चादेर्यत्।५।१।३९।पुत्राच्छ्व।५।१।४०।सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणजौ॥५।१।४१।तस्मैश्वरः

अ०
२०

॥५॥१॥४२॥तत्रविदितदुतिच।५॥१॥४३॥लोकसर्वलोकाभ्यांठञ्।५॥१॥४४॥तस्यवापः।५॥१॥४५॥पात्रात्तन्।५॥१॥४६॥तदस्मिन्नुद्ध्या
यलोभशुल्कोपदादीयते।५॥१॥४७॥प्रणाद्धादुत्तु॥५॥१॥४८॥भागाद्यच्च।५॥१॥४९॥तद्धरतिवहत्यावहतिभाराहंशादिभ्यः।५॥१॥५०॥व
स्तद्रव्याभ्यांठनूकनो।५॥१॥५१॥संभवत्यवहरतिपचति।५॥१॥५२॥आढकाचितपात्रात्तेवाऽन्यतरस्याम्।५॥१॥५३॥द्विगोष्ठञ्च।५॥१॥५४॥
कुलिजाल्लुक्वाच।५॥१॥५५॥सोस्यांसवस्त्रभृतयः।५॥१॥५६॥तदस्यपरिमाणम्।५॥१॥५७॥सङ्ख्यायाःसञ्ज्ञासङ्घःसूत्राद्यपनेषु॥
५॥१॥५८॥पडिःविंशतित्रिंशच्चत्वारिंशत्पञ्चाशत्षष्टिसप्तत्यशीतिनवतिशतम्।५॥१॥५९॥पञ्चदशतौवर्गवा।५॥१॥६०॥सप्तनोऽञ्
छन्दसि।५॥१॥६१॥त्रिंशच्चत्वारिंशतोब्राह्मणेसञ्ज्ञायांढण्।५॥१॥६२॥तदहति।५॥१॥६३॥छेदादिभ्योनित्यम्।५॥१॥६४॥शीर्षच्छेदा
द्यच्च।५॥१॥६५॥दण्डादिभ्योयः।५॥१॥६६॥छन्दसिच।५॥१॥६७॥पात्राहञ्च।५॥१॥६८॥कडङ्करदक्षिणाच्छच।५॥१॥६९॥स्थालीविलात॥
५॥१॥७०॥यज्ञर्विग्यांघखञौ।५॥१॥७१॥पारायणतुरायणचान्द्रायणंवर्तयति।५॥१॥७२॥संशयमापन्नः।५॥१॥७३॥योजनद्रुच्छति।५॥
१॥७४॥पथक्कन॥५॥१॥७५॥पंथोणनित्यम्।५॥१॥७६॥उत्तरपथेनाहतञ्च।५॥१॥७७॥कालात्।५॥१॥७८॥तेननिर्हृतम्।५॥१॥७९॥तमधीष्टो
भूतोभूतोभावी।५॥१॥८०॥मासाहपसियत्त्वञौ।५॥१॥८१॥द्विगोर्यप्।५॥१॥८२॥षण्मासाण्यच्च।५॥१॥८३॥अवयसिठञ्च।५॥१॥८४॥समा
यांखः।५॥१॥८५॥द्विगोर्वा।५॥१॥८६॥रात्र्यहःसंवत्सराच्च।५॥१॥८७॥वर्षाल्लुक्।५॥१॥८८॥चित्तवतिनित्यम्।५॥१॥८९॥षष्ठिकाःषष्ठिरात्रे
णपच्यन्ते।५॥१॥९०॥वत्सरान्ताच्छ्रुन्दसि।५॥१॥९१॥संपरिपूर्वात्त्वच।५॥१॥९२॥तेनपरिजय्यलभ्यकार्यसुकरम्।५॥१॥९३॥तदस्य
ब्रह्मचर्यम्।५॥१॥९४॥तस्यचदक्षिणायज्ञारवेभ्यः।५॥१॥९५॥तत्रचदीयतेकार्यंभववत्।५॥१॥९६॥बुष्टादिभ्योण्।५॥१॥९७॥तेनय

रा
२०

थाकथाचहस्ताभ्यांणयतौ।५।१।८८।संवादिनि।५।१।८९।कर्मवेषाद्यत्।५।१।९०।तस्मैप्रभवतिसन्तापादिभ्यः।५।१।९०।योगाद्य
च।५।१।९०।कर्मणउकञ्।५।१।९०।समयस्तदस्यमाप्तम्।५।१।९०।४॥अतोरण।५।१।९०।छन्दसिघस्र।५।१।९०।कालाद्यत्।५।१।९०।महृष्टेठञ्।५।१।९०।प्रयोजनम्।५।१।९०।विशाखाषाढादध्मथदण्डयोः।५।१।९१।अनुप्रवचनादिभ्यः।५।१।९१।
समापनात्सपूर्वपदात्।५।१।९१।ऐकागारिकट्चौरे।५।१।९१।आकालिकडाद्यन्तवचने।५।१।९१।तेनतुल्यंक्रियाचेद्वतिः
५।१।९१।तत्रतस्येव।५।१।९१।तदहम्।५।१।९१।उपसर्गच्छन्दसिधात्वर्थे।५।१।९१।तस्यभावस्त्वतलो।५।१।९१।आ
चत्वात्।५।१।९२।ननञ्पूर्वात्तसुरुषादचतुरसंगतलवणवट्बुधकतरसलसेभ्यः।५।१।९२।एश्वादिभ्यड्मनिज्वा।५।१।
९२।वर्णदृढादिभ्यः।५।१।९२।गुणवचनवाह्यणादिभ्यःकर्मणिच।५।१।९२।स्तेनाद्यन्तलोपश्च।५।१।९२।सस्युर्यः
५।१।९२।कपिज्ञात्योर्दृक्।५।१।९२।पत्यन्तपुरेहितादिभ्योयक्।५।१।९२।प्राणभज्जातिवयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ्।५।१।९२।
हायनान्तयुवादिभ्योण्।५।१।९३।दुगन्ताच्चलघुपूर्वात्।५।१।९३।योपधादुरूपोत्तमादुञ्।५।१।९३।द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च।५।१।
९३।गोत्रचरणाच्चाघात्याकारतद्वेतेषु।५।१।९३।होत्रादिभ्यश्चुः।५।१।९३।ब्रह्मणस्त्वः।५।१।९३।प्राक्कीताच्छताच्चसर्वभू
मिसप्तनोऽन्मासात्तस्मैप्रभवतिननञ्पूर्वात्सोडश॥ ॥इतिपञ्चमाध्यायस्यप्रथमःपादः॥१॥ ॥धात्यानांभवनेष्टेनेखञ्।५।२।
१।ब्रीहिशल्पोर्दृक्।५।२।यवयवकषट्ठिकाद्यत्।५।२।विभाषातिलमाषोमाभंगाणुभ्यः।५।२।सर्वचर्मणःकृतःखरखञौ
५।२।यथामुखसंमुखस्यदर्शनःखः।५।२।तत्सर्वादेःपथ्यंगकर्मपत्रपात्रंयाप्रोति।५।२।अप्रपदम्याप्रोति।५।२।॥६॥

अ० अनुपदसर्वान्नायानयंबद्धाभक्षयतिनेयेषु। ५।२।१०। परोवरपरम्यरपुत्रपौत्रमनुभवति। ५।२।१०। अवारपारत्यन्तानुकामङ्गामी। ५।२।
 २१। ११। समंसमाविजायते। ५।२।१२। अद्यश्चीनावष्टब्धो। ५।२।१३। आगवीनः। ५।२।१४। अनुग्वलंगामी। ५।२।१५। अध्वनोयत्वे। ५।२।१६।
 अभ्यमित्राच्छुच। ५।२।१७। गोष्ठात्तवज्रभूतपूर्वो। ५।२।१८। अश्वस्यैकाहगमः। ५।२।१९। शलीनकौपीने अधष्टाकार्ययोः। ५।२।२०।
 ब्रातेन जीवति। ५।२।२१। साप्तपदीनंसख्यम्। ५।२।२२। ह्येयद्ग्वीनंसंज्ञायाम्। ५।२।२३। तस्य पाकमूले पीत्वादिकर्णादिभ्यः कुण्डला
 हचौ। ५।२।२४। पक्षातिः। ५।२।२५। तेन वित्तश्चुचुपचणयो। ५।२।२६। विनज्रभ्यां नानाजौनसहा। ५।२।२७। वेः शालच्छकटचौ। ५।२।२८।
 संशोदश्चकटचु। ५।२।२९। अवात्कुटाश्च। ५।२।३०। नतेनासिकायाः सञ्ज्ञायां टीटज्जाटचुभ्रटचः। ५।२।३१। नेर्विडज्ज्विरीसचौ। ५।
 ३२। इनचुपिटच्चिकचिच। ५।२।३३। उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारूढयोः। ५।२।३४। कर्माणि घटोठचु। ५।२।३५। तदस्य सज्जात
 न्तास्कादिभ्यदुत्तचु। ५।२।३६। ममाणे ह्यसचुदघ्नमात्रचः। ५।२।३७। पुरुषहस्तिभ्यामण्च। ५।२।३८। यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्।
 ५।२।३९। किमिदंभ्यां वोघः। ५।२।४०। किमः सङ्ख्या परिमाणे डतिच। ५।२।४१। संख्याया अवयवे तयप्। ५।२।४२। द्वित्रिभ्यां तयस्यो
 यज्वा। ५।२।४३। उभादुदात्तो नित्यम्। ५।२।४४। तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताडुः। ५।२।४५। शदन्तविंशतेश्च। ५।२।४६। संख्याया
 गुणस्य नि माने मयट्। ५।२।४७। तस्य पूरणे डट्। ५।२।४८। नान्तादसंख्यादेर्मट्। ५।२।४९। षट्चच्छन्दसि। ५।२।५०। षट्कृतिकतिपय
 चतुरांशुक। ५।२।५१। बहुपूगगणसंघस्येति शुक्। ५।२।५२। वतोरिशुक। ५।२।५३। द्वेस्त्रीयः। ५।२।५४। त्रेः सम्प्रसारणञ्च। ५।२।५५।
 विंशत्यादिभ्यस्तमडन्यतरस्याम्। ५।२।५६। नित्यं शतादिमासाहमाससंवत्सराच्च। ५।२।५७। षष्ठ्यादेश्चासंख्यादेः। ५।२।५८। मत्तौ छः

२१
 २१

सूक्तसामोः॥५२॥५८॥ अध्यायानुवाकयोर्लुक्॥५२॥६०॥ विमुक्तादिभ्योण्॥५२॥६१॥ गोषदादिभ्योवुन्॥५२॥६२॥ तत्रकुशलःपथः॥
५२॥६३॥ आकर्षादिभ्यःकन्॥५२॥६४॥ धनहिरण्यात्कामे॥५२॥६५॥ स्वाङ्गेभ्यःप्रसिते॥५२॥६६॥ उदरादृगाद्युने॥५२॥६७॥ सस्येनपरि
जातः॥५२॥६८॥ अंशंहारी॥५२॥६९॥ तन्नादचिरापहते॥५२॥ ७०॥ ब्राह्मणकोष्णिकेसंज्ञायाम्॥५२॥७१॥ शीतोष्णाभ्यांकारिणि
॥५२॥७२॥ अधिकम्॥५२॥७३॥ अनुकाभिकाभीकःकमिता॥५२॥७४॥ पार्श्वेनान्विच्छति॥५२॥७५॥ अयःशूलदण्डाजिनाभ्यांठकूठजौ
५२॥७६॥ तावतिशयग्रहणमितिलुग्वा॥५२॥७७॥ स एषांग्रामणीः॥५२॥७८॥ मृगबलमस्यबन्धनंकरभे॥५२॥७९॥ उत्कउन्ननाः॥५२॥
८०॥ कालप्रयोजनाद्रोगो॥५२॥८१॥ तदस्मिन्ननं प्रायेसंज्ञायाम्॥५२॥८२॥ कुल्पायादञ्ज्॥५२॥८३॥ श्रोत्रियंशुद्धोधीते॥५२॥८४॥
श्राद्धमनेनभुक्तमिनिदौ॥५२॥८५॥ पूर्वोदिनिः॥५२॥८६॥ सपूर्वाच्च॥५२॥८७॥ दृष्टादिभ्यश्च॥५२॥८८॥ छन्दसिपरिपरिणोपप्यव
स्थातरि॥५२॥८९॥ अनुपद्यन्वेष्टा॥५२॥९०॥ साक्षादृष्टरिसंज्ञायाम्॥५२॥९१॥ क्षेत्रियचूपरक्षेत्रेचिकित्स्यः॥५२॥९२॥ इन्द्रियमिन्द्र
लिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमितिवा॥५२॥९३॥ तदस्यास्यस्मिन्नितिमतुप्॥५२॥९४॥ रसादिभ्यश्च॥५२॥९५॥
प्राणिस्थादातोलजन्यतरस्याम्॥५२॥९६॥ सिध्मादिभ्यश्च॥५२॥९७॥ वत्सांसाभ्यांकामवले॥५२॥९८॥ फेनादिलच्च॥५२॥९९॥
लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यःशनेलचः॥५२॥१००॥ प्रज्ञाश्रद्धार्चावृत्तिभ्योणः॥५२॥१०१॥ तपःसहस्राभ्यांविनीनी॥५२॥१०२॥ अ
ण्च॥५२॥१०३॥ सिकताशर्कराभ्याञ्च॥५२॥१०४॥ देशेलुविलचौच॥५२॥१०५॥ दन्तउन्नतउरच्॥५२॥१०६॥ रुपसुषिमुष्कमधोरः॥
५२॥१०७॥ द्युद्भ्यामः॥५२॥१०८॥ केशाद्येन्यतरस्याम्॥५२॥१०९॥ गाण्ड्यजगात्संज्ञायाम्॥५२॥११०॥ काण्डाण्डादीरनीरचौ॥

अ० ॥ ५॥ २॥ १११॥ रजःकृष्णसुतिपरिषदोवलच॥ ५॥ २॥ ११२॥ दन्तशिखासंज्ञायाम् ॥ ५॥ २॥ ११३॥ ज्योत्स्नातमिस्रामृद्धिगोर्जस्विनृर्जस्वलगो
२२ मिन्मलिनमलीमसाः ॥ ५॥ २॥ ११४॥ अतडुनिठनौ ॥ ५॥ २॥ ११५॥ त्रीत्यादिभ्यश्च ॥ ५॥ २॥ ११६॥ तुन्दादिभ्यदुलच्च ॥ ५॥ २॥ ११७॥ एकगोपूर्वाष्टमृनि
त्यम् ॥ ५॥ २॥ ११८॥ शतसहस्रान्ताच्चनिष्कात् ॥ ५॥ २॥ ११९॥ रूपादाहतप्रशंसयोर्यप् ॥ ५॥ २॥ १२०॥ अस्मायामेधास्रजोविनिः ॥ ५॥ २॥ १२१॥ बहुलंछ
न्दसि ॥ ५॥ २॥ १२२॥ ऊर्णयायुस् ॥ ५॥ २॥ १२३॥ वाचोमिनिः ॥ ५॥ २॥ १२४॥ आलजाटचौबहुभाषिणि ॥ ५॥ २॥ १२५॥ स्वामिनैश्चर्य्ये ॥ ५॥ २॥ १२६॥ अर्श
आदिभ्योश्च ॥ ५॥ २॥ १२७॥ हन्तेपतापगर्ह्यात्त्राणिस्थादिनिः ॥ ५॥ २॥ १२८॥ वातातीसारभ्यांकुक्क ॥ ५॥ २॥ १२९॥ वयसिपूरणात् ॥ ५॥ २॥ १३०॥ सुखा
दिभ्यश्च ॥ ५॥ २॥ १३१॥ धर्मशीलवर्णान्ताच्च ॥ ५॥ २॥ १३२॥ हस्नाज्जातौ ॥ ५॥ २॥ १३३॥ वर्णाद्ब्रह्मचारिणि ॥ ५॥ २॥ १३४॥ पुष्करदिभ्योदेशे ॥ ५॥ २॥ १
३५॥ वलादिभ्योमतुवन्यतरस्याम् ॥ ५॥ २॥ १३६॥ संज्ञायामन्माभ्याम् ॥ ५॥ २॥ १३७॥ कंशंभ्यांबभयुस्तितुतयसः ॥ ५॥ २॥ १३८॥ तुन्दिवलिवेढर्मः
५॥ २॥ १३९॥ अहंशुभमोर्युस् ॥ ५॥ २॥ १४०॥ धान्यानांजातेनकिमोविमुक्तकालप्रज्ञाअस्मायामेधाविंशतिः ॥ ॥ इतिपञ्चमाध्यायस्य
द्वितीयःपादः ॥ २॥ ॥ प्राग्दिशोविभक्तिः ॥ ५॥ ३॥ १॥ किंसर्वनामबहुभ्योद्यादिभ्यः ॥ ५॥ ३॥ २॥ इदमदृश ॥ ५॥ ३॥ ३॥ एतेतोरथोः ॥ ५॥ ३॥ ४॥ ॥
एतदोशः ॥ ५॥ ३॥ ५॥ सर्वस्यसोऽन्यतरस्यांदि ॥ ५॥ ३॥ ६॥ पंचम्यास्तसिल् ॥ ५॥ ३॥ ७॥ तसेश्च ॥ ५॥ ३॥ ८॥ पर्य्यभिभ्याञ्च ॥ ५॥ ३॥ ९॥ सप्तम्यास्त्रल् ॥ ५॥ ३॥ १०॥
११॥ इदमोहः ॥ ५॥ ३॥ ११॥ किमोत् ॥ ५॥ ३॥ १२॥ वाहचछन्दसि ॥ ५॥ ३॥ १३॥ इतराभ्योऽपिदृश्यंते ॥ ५॥ ३॥ १४॥ सर्वैकान्यकिंय तदःकालेदा ॥ ५॥ ३॥ १५॥
इदमोर्हिल् ॥ ५॥ ३॥ १६॥ अधुना ॥ ५॥ ३॥ १७॥ दानीच ॥ ५॥ ३॥ १८॥ तदोदाच ॥ ५॥ ३॥ १९॥ तयोर्दाहिलौचछन्दसि ॥ ५॥ ३॥ २०॥ अनद्यत
नेर्हिलन्यतरस्याम् ॥ ५॥ ३॥ २१॥ सद्यःपरुत्यरायैषमःपरेद्यन्यद्यपूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरेद्युरपरेद्युरधरेद्युरुभयेद्युरुतरेद्युः ॥ ॥

॥५॥३॥२२॥प्रकारवचनेयात् ॥५॥३॥२३॥इदमस्यमुः ॥५॥३॥२४॥किमश्वा ॥५॥३॥२५॥थाहेतौचच्छन्दसि ॥५॥३॥२६॥दिक्शब्देभ्यःसप्तमीपञ्च
मीप्रथमाभ्योदिदेशकालेषस्तातिः ॥५॥३॥२७॥दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच ॥५॥३॥२८॥विभाषापरावराभ्याम् ॥५॥३॥२९॥अञ्चेलुक् ॥५॥३॥३०॥
उपर्युपरिष्ठात् ॥५॥३॥३१॥पश्चात् ॥५॥३॥३२॥पश्चपश्चाच्चच्छन्दसि ॥५॥३॥३३॥उत्तराधरदक्षिणादातिः ॥५॥३॥३४॥एनवन्यतरस्यामदूरेप
ञ्चम्याः ॥५॥३॥३५॥दक्षिणादाच् ॥५॥३॥३६॥आहिचदूरे ॥५॥३॥३७॥उत्तराच् ॥५॥३॥३८॥पूर्वाधरावराणामसिपुरधवञ्चैषाम् ॥५॥३॥३९॥अ
स्तातिच् ॥५॥३॥४०॥विभाषावरस्या ॥५॥३॥४१॥संख्यायाविधार्थेधा ॥५॥३॥४२॥अधिकरणविचालेच् ॥५॥३॥४३॥एकादोध्यमुजन्यतरस्या
म् ॥५॥३॥४४॥द्विषोश्चधसुञ् ॥५॥३॥४५॥एधाच् ॥५॥३॥४६॥याप्येयाश्या ॥५॥३॥४७॥पूरणाद्वागेतीयादन् ॥५॥३॥४८॥प्रागेकादशम्योच्छ
न्दसि ॥५॥३॥४९॥षष्ठाष्टमाभ्याञच् ॥५॥३॥५०॥मानयश्चङ्गयोःकन्लुक्चौच् ॥५॥३॥५१॥एकादाकिनिच्चासहाये ॥५॥३॥५२॥भूतपूर्वचरद्
॥५॥३॥५३॥षष्ठ्यारूप्यच् ॥५॥३॥५४॥अतिशयनेतमविष्टनौ ॥५॥३॥५५॥तिङ्श्च ॥५॥३॥५६॥द्विवचनविभक्त्योपपदेतरवीयसुनौ ॥५॥३॥५७॥
अजादीगुणवचनादेवा ॥५॥३॥५८॥तुच्छन्दसि ॥५॥३॥५९॥प्रशस्यस्यश्च ॥५॥३॥६०॥ज्यच् ॥५॥३॥६१॥वृद्धस्यच् ॥५॥३॥६२॥अन्तिकवाढ
योर्नेदसाधौ ॥५॥३॥६३॥युवात्ययोःकनन्यतरस्याम् ॥५॥३॥६४॥विन्मतोर्लुक् ॥५॥३॥६५॥प्रशंसायारूप्यच् ॥५॥३॥६६॥ईवदसमाप्रौ
कल्पदेश्यदेशीयरः ॥५॥३॥६७॥विभाषासुपोबहुचपुरस्तात् ॥५॥३॥६८॥प्रकारवचनेजातीयरः ॥५॥३॥६९॥प्रागिवाल्कः ॥५॥३॥७०॥अव्य
यसर्वनाम्नामकच्प्राक्कटेः ॥५॥३॥७१॥कस्पचदः ॥५॥३॥७२॥अजाते ॥५॥३॥७३॥कुत्सिते ॥५॥३॥७४॥संज्ञायाङ् ॥५॥३॥७५॥अनुकम्पाया
म् ॥५॥३॥७६॥नीतौचतद्युक्तात् ॥५॥३॥७७॥बहुचोमनुष्यनाम्नञ्च् ॥५॥३॥७८॥घनिलचौच् ॥५॥३॥७९॥प्राचामुपादेरङ्जुचौच् ॥५॥३॥८०॥

अ० जातिनामः कन० ५३८१। अजिनान्तस्योत्तरपदलोपश्च ५३८२। अजादावूर्ध्वद्वितीयादचः ५३८३। शिवलसुपरिविशालवरुणार्थमा
 २३ दीनांततीयात् ५३८४। अलो ५३८५। ह्रस्वो ५३८६। संज्ञायां कन० ५३८७। कुटीशमीसुरडाभ्योरः ५३८८। कुत्वाडुपच् ५३८९।
 कासूगोणीभ्यां छरच् ५३९०। वत्सोऽस्माश्चर्षभेभ्यश्चतनुत्वे ५३९१। किंयत्तदोर्निर्द्धारणे द्वयोरेकस्य डतरच् ५३९२। वावहूनां
 जातिपरिप्रभेदतमच् ५३९३। एकाच्चमाचाम् ५३९४। अवक्षेपणे कन० ५३९५। इवेप्रतिष्ठितौ ५३९६। सन्ज्ञायाञ्च ५३९७।
 लुम्भनुब्ये ५३९८। जीविकार्थे चापण्ये ५३९९। देवपयादिभ्यश्च ५४००। वस्तेर्लज् ५४०१। शिलायाढः ५४०२। शास्त्रा
 दिभ्योयः ५४०३। द्रव्यञ्चभवे ५४०४। कुशाग्राच्छः ५४०५। समासाच्चतद्विषयात् ५४०६। शर्करादिभ्योण् ५४०७।
 अङ्गुल्यादिभ्यश्च ५४०८। एकशालायाश्चजन्यतरस्याम् ५४०९। कर्कलोहितादीकक् ५४१०। मत्तपूर्वविश्वमात्स्याल्ल
 दसि ५४११। पूगान्न्योग्रामणीपूर्वात् ५४१२। व्रातचक्रजोरस्त्रियाम् ५४१३। आयुधजीविसंघान्न्यङ्गाहीकेष्वब्राह्म
 णराजन्यात् ५४१४। ट्काट्टेप्यण् ५४१५। दामन्यादित्रिगर्तवष्टाच्छः ५४१६। पार्श्वीदियौघेयादिभ्यामणञौ ५४१७।
 अभिजिह्विदभच्छालावच्छिरवावच्छमीवदूर्णावच्छुमदणोमञ् ५४१८। ज्यादयस्तद्राजाः ५४१९। प्राग्दिशोनद्यतने ५४२०।
 विभाषाज्यचजातिनाम्नोवस्तेरेकोनविंशतिः ॥ ॥ इति पञ्चमाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥ ३ ॥ ॥ पादशतस्य संख्या देवीं प्राप्यां वु
 नूलोपश्च ५४२१। दण्डव्यवसर्गयोश्च ५४२२। स्थूलादिभ्यः प्रकावचने कन० ५४२३। अनत्यंतगतौ तात् ५४२४। नसामिवचने।
 ५४२५। ह्रस्वा आच्छादने ५४२६। अषड्स्माशितं ग्वलं कर्मात्पुरुषाधुत्तरपदात् ५४२७। विभाषांचेरदिक्स्त्रियाम् ५४२८।

२०
 २३

॥८॥ जात्यन्ताच्चबंधुनि। ५॥४॥ ८॥ स्थानान्ताद्विभाषासंस्थानेनेति चेत्। ५॥४॥ १०॥ किमेतिङ्। व्ययघादाच्चद्रव्यप्रकर्षे। ५॥४॥ ११॥ असुच
छन्दसि। ५॥४॥ १२॥ अनुगादिनष्टकृ। ५॥४॥ १३॥ णचस्त्रियामन्। ५॥४॥ १४॥ अणितुणः। ५॥४॥ १५॥ विसारिणो मत्स्ये। ५॥४॥ १६॥ संख्यायाः
क्रियाभ्यादृतिगणने कृतसुच। ५॥४॥ १७॥ द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच। ५॥४॥ १८॥ एकस्य सकृच्च। ५॥४॥ १९॥ विभाषावहोर्हो विप्रकृष्टकाले। ५॥
४॥२०॥ तत्प्रकृतवचने मयट्। ५॥४॥ २१॥ समूहवच्च बहुषु। ५॥४॥ २२॥ अनन्तावसथेति ह भेष जाज्यः। ५॥४॥ २३॥ देवतांताज्ञादर्शयेयत्
५॥४॥ २४॥ यादाघाभ्याञ्च। ५॥४॥ २५॥ अतिथेर्न्यः। ५॥४॥ २६॥ देवात्तल्। ५॥४॥ २७॥ अवेः कः। ५॥४॥ २८॥ यावादिभ्यं कन्। ५॥४॥ २९॥ लोहिताम
णो। ५॥४॥ ३०॥ वर्णे चानित्ये। ५॥४॥ ३१॥ रक्ते। ५॥४॥ ३२॥ कालाच्च। ५॥४॥ ३३॥ विनयादिभ्यश्च कृ। ५॥४॥ ३४॥ वाचोव्याहृतार्थायाम्। ५॥४॥ ३५॥ त
द्युक्तात्कर्मणो ऽण्। ५॥४॥ ३६॥ ओषधेरजातौ। ५॥४॥ ३७॥ प्रजादिभ्यश्च। ५॥४॥ ३८॥ मदस्ति कन्। ५॥४॥ ३९॥ सस्त्रौ प्रशंसायाम्। ५॥४॥ ४०॥ च
कज्येष्टाभ्यां तिलतातिलौ च छन्दसि। ५॥४॥ ४१॥ बहुल्यार्थाच्च स्कारकादव्यतरस्याम्। ५॥४॥ ४२॥ संख्येकवचनाच्च वीप्सायाम्। ५॥४॥ ४३॥
प्रतियोगे पञ्चम्यास्ततिः। ५॥४॥ ४४॥ अपादाने चाहीयरूहोः। ५॥४॥ ४५॥ अतिग्रहाव्ययनक्षेपे च कर्तरितृतीयायाः। ५॥४॥ ४६॥ हीयमान
पापयोगाच्च। ५॥४॥ ४७॥ षष्ठ्या व्याश्रये। ५॥४॥ ४८॥ रोगाच्चापनयने। ५॥४॥ ४९॥ अभूततद्भावे कृभ्वस्तियोगे संपद्य कर्तरि चिः। ५॥४॥ ५०॥ ॥
अरुर्मनश्च सुश्चेतोरहो रजसं लोपश्च। ५॥४॥ ५१॥ विभाषासातिकात्स्त्र्ये। ५॥४॥ ५२॥ अभिविधौ संपदाच्च। ५॥४॥ ५३॥ तदधीनवचने॥
५॥४॥ ५४॥ देयेत्राच्च। ५॥४॥ ५५॥ देवमनुष्यपुरुषपुरु मर्त्येभ्यो द्वितीयासप्तम्योर्बहुलम्। ५॥४॥ ५६॥ अव्यक्तानुकरणाद्वा जवरहोदनि
तौडाच्च। ५॥४॥ ५७॥ कृजो द्वितीयतृतीयश्च बीजात्कषौ। ५॥४॥ ५८॥ संख्यायाश्च गुणान्तायाः। ५॥४॥ ५९॥ समयाच्चापनयाम्। ५॥४॥ ६०॥

अ०
२४

सपत्रनिष्पत्रा दतिव्यथने।५।४।६१। निष्कुलानिष्कोषणे।५।४।६२। सुखप्रियादानुलोम्ये।५।४।६३। दुःखात्प्रातिलोम्ये।५।४।६४। मूलात्पा
के।५।४।६५। सत्पादशयथे।५।४।६६। मद्रात्यरिवापणे।५।४।६७। समासान्ताः।५।४।६८। नपूजनात्।५।४।६९। किमःक्षेपो।५।४।७०। नभस्त
त्पुरुषात्।५।४।७१। यथोविभाषा।५।४।७२। बहुव्रीहौ संख्येयेडजबहुगणात्।५।४।७३। ऋक्पूरब्धुपयामानक्षे।५।४।७४। अचप्रत्यन्वव
पूर्वात्सामलोमः।५।४।७५। अक्षणेऽदर्शनात्।५।४।७६। अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्रीपुंसधेन्वनडुहक्रीमवाङ्मनसाक्षिभ्रुवदारगवो
र्वशीवपदशीवनक्तं दिवरात्रिं दिवाहर्दिवसरजसनिःश्रेयसपुरुषायुषध्यायुषत्रायुषग्यजुषजातोक्षमहोक्षदृहोक्षोपशुनगोष्ठश्वाः
॥५।४।७७। ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः।५।४।७८। अवसमन्धेभ्यस्तमसः।५।४।७९। श्वसोर्वसीयः श्रेयसः।५।४।८०। अन्ववतप्ताद्रहसः।५।४।
८१। प्रतेरुरसः सप्तमी स्यात्।५।४।८२। अनुगवमायामे।५।४।८३। द्विस्तावात्रिस्तावावेदिः।५।४।८४। उपसर्गादध्वनः।५।४।८५। तत्पुरु
षस्याहुः लेः संख्याव्ययादेः।५।४।८६। अहः सर्वैकदेश संख्यातपुण्याच्चरात्रेः।५।४।८७। अहोऽह एतेभ्यः।५।४।८८। न संख्यादेः स।
माहारे।५।४।८९। उत्तमैकाभ्याञ्च।५।४।९०। राजाहः सखिभ्यश्च।५।४।९१। गोरतद्धितलुकि।५।४।९२। अग्राख्यायामुरसः।५।४।९३।
अनोऽश्मायः सरसां जातिसंज्ञयोः।५।४।९४। ग्रामकौटाभ्यां चतक्ष्णः।५।४।९५। अन्तेः शुनः।५।४।९६। उपमानादप्राणिषु।५।४।९७। राम०
उत्तरमगपूर्वाच्चिसक्श्चः।५।४।९८। नावोद्दिगोः।५।४।९९। अर्द्धाच्च॥५।४।१००। रवाय्याः प्राचाम्।५।४।१०१। द्वित्रिभ्यामञ्जले।५।४।१०२।
२। अनसन्तान्त्पुंसकाच्छन्दसि।५।४।१०३। ब्रह्मणो जानपदारव्यायाम्।५।४।१०४। कुमहद्भ्यामन्यतरस्याम्।५।४।१०५। ह्रस्वाच्चुदण
हान्तात्समाहारे।५।४।१०६। अव्ययीभावेशरत्नभूतिभ्यः।५।४।१०७। अनश्वा।५।४।१०८। नपुंसकादन्यतरस्याम्।५।४।१०९। नदीपो

राम०
२४

र्णमास्याग्नहायणीभ्यः।५।४।११०।न्ययः।५।४।१११।गिरेश्चसेनकस्य।५।४।११२।बहुव्रीहौसकथ्यद्वयोःस्वाङ्गत्वच्।५।४।११३।अङ्गु-
लेर्होरुणि।५।४।११४।द्वित्रिभ्यांषमूर्द्धः।५।४।११५।अपूरणीप्रमाण्योः।५।४।११६।अन्तर्वहिर्भ्याञ्चलोमः।५।४।११७।अन्नासिकार्योः
संज्ञायांनसंचास्यूलात्।५।४।११८।उपसर्गाच्च।५।४।११९।सुप्रातसुश्वसुदिवशारिकुक्षचतुरश्रेणीपदाजपदप्रोष्ठपदाः।५।४।१२०।
नन्दुःसुभ्योहलिसक्थ्योरन्यतरस्याम्।५।४।१२१।नित्यमसिचप्रजामेधयोः।५।४।१२२।बहुप्रजाश्रुन्दसि।५।४।१२३।धर्मादिनिच
केवलात्।५।४।१२४।जम्भासुहरितत्तणसोमेभ्यः।५।४।१२५।दक्षिणेर्मांलुब्धयोगे।५।४।१२६।द्वक्कर्मव्यतिहारे।५।४।१२७।द्विद
ण्ड्यादिभ्यश्च।५।४।१२८।प्रसंभ्यांजानुनोर्तुः।५।४।१२९।ऊर्ध्वादिविभाषा।५।४।१३०।ऊर्ध्वसोनङ्।५।४।१३१।धनुषश्च।५।४।१३२
वासंज्ञायाम्।५।४।१३३।जायायानिङ्।५।४।१३४।गन्धसेदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः।५।४।१३५।अत्याख्यायाम्।५।४।१३६।उपमाना
च्च।५।४।१३७।पादस्यलोपोऽहस्त्यादिभ्यः।५।४।१३८।कुम्भपदीषुच।५।४।१३९। ॥ संख्यासुपूर्वस्य।५।४।१४०।वयसिदन्तस्यदत्
।५।४।१४१।छन्दसिच।५।४।१४२।स्त्रियां संज्ञायाम्।५।४।१४३।विभाषाश्यावारेकाभ्याम्।५।४।१४४।अग्रान्तसुद्धसुभ्रद्वयवरे
हेभ्यश्च।५।४।१४५।ककुदस्यावस्यायांलोपः।५।४।१४६।विककुत्यर्चतो।५।४।१४७।उद्भिर्मांकाकुदस्या।५।४।१४८।पूर्णादिभाषा।५।४।
१४९।सुहृद्दुर्हृदौमित्रामित्रयोः।५।४।१५०।उरःप्रभृतिभ्यःकप्।५।४।१५१।ङनःस्त्रियाम्।५।४।१५२।नद्युतश्च।५।४।१५३।शेषादिभाषा
५।४।१५४।नसंज्ञायाम्।५।४।१५५।ईयसश्च।५।४।१५६।वन्दितेभ्रातुः।५।४।१५७।कृतश्रुन्दसि।५।४।१५८।नाडीतन्त्रोःस्वाङ्गे।५।

॥५॥४॥१५॥८॥निष्प्रवाणिश्च॥५॥४॥१६॥पादशतस्यतत्प्रकृतवृत्तकज्येष्ठाभ्यां सपत्रान्वतज्ञातस्वार्थानञ्जदुःसुभ्योवयसिर्विंशतिः॥ इतिपञ्च
 २५ माध्यायस्यचतुर्थःपादः॥४॥इतिपञ्चमोऽध्यायःसमाप्तः॥५॥ ॥एकाचोद्देशप्रथमस्य॥६॥१॥१॥अजादेर्हितीयस्य॥६॥१॥२॥नन्दाःसंयो
 गादयः॥६॥१॥३॥पूर्वोऽभ्यासः॥६॥१॥४॥उभेअभ्यस्तमू॥६॥१॥५॥जक्षित्यादयःषट्॥६॥१॥६॥तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य॥६॥१॥७॥लिटिधा
 तोरनभ्यासस्य॥६॥१॥८॥सन्धडेनः॥६॥१॥९॥श्लो॥६॥१॥१०॥चडि॥६॥१॥११॥दाश्चानुसाह्वानमीढांश्च॥६॥१॥१२॥षडःसम्प्रसारणं पुत्रप
 त्योस्तत्पुरुषे॥६॥१॥१३॥बन्धुनिबहुव्रीहौ॥६॥१॥१४॥वचिस्वपियजादीनां किति॥६॥१॥१५॥ग्रहिज्यावपियधिवष्टिविचतिवृश्चतिष्ठ
 तिभज्जतीनां डिति च॥६॥१॥१६॥लित्यभ्यासस्योभयेषामू॥६॥१॥१७॥स्वापेश्चडि॥६॥१॥१८॥स्वपिस्ममिमेजां यडि॥६॥१॥१९॥नवशः॥
 ६॥१॥२०॥चायःकी॥६॥१॥२१॥स्फायःस्फीनिष्ठा यामू॥६॥१॥२२॥स्त्यःप्रपूर्वस्य॥६॥१॥२३॥द्रवमूर्तिस्पर्शयोःश्वः॥६॥१॥२४॥प्रतेश्च॥६॥१॥
 २५॥विभाषाम्यवपूर्वस्य॥६॥१॥२६॥मृतं पाके॥६॥१॥२७॥प्यायःपी॥६॥१॥२८॥लिङ्यङोश्च॥६॥१॥२९॥विभाषाम्येः॥६॥१॥३०॥णोचसंश्च
 डोः॥६॥१॥३१॥ह्रःसम्प्रसारणमू॥६॥१॥३२॥अभ्यस्तस्य च॥६॥१॥३३॥बहुलं छन्दसि॥६॥१॥३४॥चायःकी॥६॥१॥३५॥अपस्पृधेयामान
 चुरान्हुश्चिच्युषेतित्याजश्चाताःश्रितमाशीरशीर्ताः॥६॥१॥३६॥नसम्प्रसारणेसम्प्रसारणमू॥६॥१॥३७॥लिटिवयोयः॥६॥१॥३८॥वश्चा
 स्यान्तरस्यां किति॥६॥१॥३९॥वेजः॥६॥१॥४०॥त्यपि च॥६॥१॥४१॥ज्यश्च॥६॥१॥४२॥व्यश्च॥६॥१॥४३॥विभाषा परेः॥६॥१॥४४॥आदेचउप
 देशे शिति॥६॥१॥४५॥नव्योलिटि॥६॥१॥४६॥स्फुरतिस्फुलतोर्घञि॥६॥१॥४७॥क्रीडुजीणां णौ॥६॥१॥४८॥सिध्यतेरपारलौकिके॥६॥
 १॥४९॥मीनातिमिनोतिदीङं त्यपि च॥६॥१॥५०॥विभाषालीयतेः॥६॥१॥५१॥खिदेष्टुन्दसि॥६॥१॥५२॥अपंगुरेणमुत्ति॥६॥१॥५३॥॥

चिस्फुरेणो। ६। १। ५४। प्रजनेवीयते। ६। १। ५५। विभेतेहेतुभये। ६। १। ५६। नित्यं समयते। ६। १। ५७। सजिह्मशोर्ल्यमकिति। ६। १। ५८। अनु
दातस्यचर्दुपधस्यान्यतरस्याम्। ६। १। ५९। शीर्षं श्चुन्दसि। ६। १। ६०। येचतद्धिते। ६। १। ६१। अचिशीर्षः। ६। १। ६२। पदन्तोमासहन्निश
सन्पूषन्देशन्यकञ्चुकन्तुदन्नासञ्चुस्प्रभृतिषु। ६। १। ६३। धात्वादेशः षः सः। ६। १। ६४। णो नः। ६। १। ६५। लोपोभ्योर्बलि। ६। १। ६६। वे
रएक्तस्य। ६। १। ६७। हल्ङ्याभ्योदीर्घात्सुतिस्पृक्तं हल्। ६। १। ६८। एङ् ह्रस्वात्सम्बुद्धेः। ६। १। ६९। शेषेष्वुन्दसि बहुलम्। ६। १। ७०। ह्रस्व
स्पितिक्तितुक्। ६। १। ७१। संहितायाम्। ६। १। ७२। छेच। ६। १। ७३। आङ् माङोश्च। ६। १। ७४। दीर्घात्। ६। १। ७५। पदान्ताद्वा। ६। १। ७६।
इकोयणचि। ६। १। ७७। एचोऽयवायावः। ६। १। ७८। वान्तोपिप्रत्यये। ६। १। ७९। धातोस्तन्निमित्तस्यैव। ६। १। ८०। स्यज्यौशकार्थे।
६। १। ८१। क्रयस्तदर्थे। ६। १। ८२। भयप्रवयेचछन्दसि। ६। १। ८३। एकः पूर्वपरयोः। ६। १। ८४। अन्तादिवच्च। ६। १। ८५। षत्वतुकोरसि
द्धः। ६। १। ८६। आहुणः। ६। १। ८७। वृद्धिरेचि। ६। १। ८८। एतेधत्तुत्सु। ६। १। ८९। आट्श्च। ६। १। ९०। उपसर्गादिति धातोः। ६। १। ९१। वासु
प्यापिशलेः। ६। १। ९२। ओतौमृशसोः। ६। १। ९३। एङिपररूपम्। ६। १। ९४। ओमाङोश्च। ६। १। ९५। उस्वपदान्तात्। ६। १। ९६। अतो गुणे।
६। १। ९७। अव्यक्तानुकरणस्यातङ्गौ। ६। १। ९८। नाम्नेडितस्यान्त्यस्यतुवा। ६। १। ९९। नित्यमाप्तेडितेडाचि। ६। १। १००। अकः सवर्णे दी
र्घः। ६। १। १०१। प्रथमयोः पूर्वसवर्णः। ६। १। १०२। तस्माच्छ्रसोनः पुंसि। ६। १। १०३। नादिवि। ६। १। १०४। दीर्घाज्जसिच। ६। १। १०५। वाछ
न्दसि। ६। १। १०६। अमिपूर्वः। ६। १। १०७। सम्प्रसारणाच्च। ६। १। १०८। एङः पदान्तादति। ६। १। १०९। डसिङ्सोश्च। ६। १। ११०। ऋतउत
। ६। १। १११। ख्यत्यात्परस्य। ६। १। ११२। अतोरोरल्युतादल्युते। ६। १। ११३। हशिच। ६। १। ११४। प्रकृत्यान्तः पादमव्यपरे। ६। १। ११५। अ

अ० व्यादवद्यादवक्रमुरत्रतायमवंत्ववःस्युषुच।ई।१।११६।यजुष्युरः।ई।१।११७।आपोजुषाणोवृष्णोवर्षिष्टेम्बेम्बालेऽम्बिकेपूर्वे।ई।१।११८।
 २६ अङ्ग-इत्यादौच।ई।१।११९।अनुदातेचकुधपरे।ई।१।१२०।अवपथासिच।ई।१।१२१।सर्वत्रविभाषागोः।ई।१।१२२।अवड-स्फोटायनस्य
 ।ई।१।१२३।इन्द्रेच।ई।१।१२४।प्लुतप्रगृह्याअचिनित्यम्।ई।१।१२५।आङोऽनुनासिकश्चुन्दसि।ई।१।१२६।इकोसवर्णेशोकल्पस्यह्रस्व
 श्च।ई।१।१२७।ऋत्यकः।ई।१।१२८।अप्लुतवदुपस्थिते।ई।१।१२९।ईचाक्रवर्मणस्य।ई।१।१३०।दिवउत्तर।ई।१।१३१।एततदोःसुलोपो
 ऽकोरनञ्समासेहलि।ई।१।१३२।स्यश्चुन्दसिबहुलम्।ई।१।१३३।सोचिलोपेचेत्यादपूरणम्।ई।१।१३४।सुट्कात्पूर्वः।ई।१।१३५।
 अङभ्यासमवायेपि।ई।१।१३६।संपर्ष्येभ्यः करेतौभूषणे।ई।१।१३७।समवायेच।ई।१।१३८।उपात्प्रतियत्नवैकृतवाक्याध्याहारेषु
 ।ई।१।१३९।किरतौलवने।ई।१।१४०।हिंसायांप्रतेश्च।ई।१।१४१।अपाचतुष्पाच्छकुनिधालेखने।ई।१।१४२।कुसुम्बुरुणिजातिः।
 ई।१।१४३।अपरस्परःक्रियासातत्ये।ई।१।१४४।गोष्यदंसेवितासेवितप्रमाणेषु।ई।१।१४५।आस्पदं प्रतिष्ठापाम्।ई।१।१४६।आश्च
 र्यमनित्ये।ई।१।१४७।वर्चस्केऽवस्करः।ई।१।१४८।अपस्करोरथाङ्गम्।ई।१।१४९।विधिरःशकुनिर्विकिरोवा।ई।१।१५०।ह्रस्वाच्च
 न्नेतरपदेमन्त्रे।ई।१।१५१।प्रतिष्कशश्चकशेः।ई।१।१५२।प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रादृषी।ई।१।१५३।मस्करमस्कारिणौवेणुपरिव्राजकयोः
 ।ई।१।१५४।कास्तीराजस्तुन्देनगरे।ई।१।१५५।कारस्करोवृक्षः।ई।१।१५६।पारस्करप्रभृतीनिचसंज्ञायाम्।ई।१।१५७।अनुदातं प
 दमेकवर्जम्।ई।१।१५८।कर्षात्वतोघञोऽन्तउदात्तः।ई।१।१५९।उञ्छादीनाञ्च।ई।१।१६०।अनुदातस्यचयत्रोदात्तलोपः।ई।
 १।१६१।धातोः।ई।१।१६२।चितः।ई।१।१६३।तद्वितस्य।ई।१।१६४।कितः।ई।१।१६५।तिसृभ्योजसः।ई।१।१६६।चतुरःशसि।ई।१।१६७

रा०
 २६

सावेकाचस्तृतीयादि विभक्तिः ॥ १११६८ ॥ अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यतरस्यामनित्यसमासे ॥ १११६९ ॥ अञ्चेषुन्दस्य सर्वनामस्थानम्
॥ १११७० ॥ ऊडिदं पदाद्यप्युमेद्युभ्यः ॥ १११७१ ॥ अष्टनोदीघति ॥ १११७२ ॥ शतुरनुमोनद्यजादी ॥ १११७३ ॥ उदात्तयणो हलपूर्वात् ॥
१११७४ ॥ नोङ्धात्वोः ॥ १११७५ ॥ ह्रस्वनुङ्भ्यां मतुप् ॥ १११७६ ॥ नामन्यतरस्याम् ॥ १११७७ ॥ ड्याश्चुन्दसिवहलम् ॥ १११७८ ॥ ष
ट्त्रिचतुर्भ्यो हलादिः ॥ १११७९ ॥ झल्युपोत्तमम् ॥ १११८० ॥ विभाषाभाषायाम् ॥ १११८१ ॥ नगोश्चस्माववर्णरोडुङ्कुङ्कङ्कः ॥
१११८२ ॥ दिवो झल् ॥ १११८३ ॥ नचान्यतरस्याम् ॥ १११८४ ॥ तित्स्वरितम् ॥ १११८५ ॥ तास्यनुदात्तेऽङिददुपदेशाच्चसार्वधातुक
मनुदात्तमङ्गिडोः ॥ १११८६ ॥ आदिः सिचोऽन्यतरस्याम् ॥ १११८७ ॥ स्वपादिहिंसामच्यनिटि ॥ १११८८ ॥ अभ्यस्तानामादिः ॥ १११८९ ॥
अनुदात्ते च ॥ १११९० ॥ सर्वस्य सुपि ॥ १११९१ ॥ भीहीभृहुमदजनधनदरिद्राजागरं मलययात्पूर्वपिति ॥ १११९२ ॥ लिति ॥ १११९३ ॥
आदिर्णमुल्यन्यतरस्याम् ॥ १११९४ ॥ अचः कर्तृयकि ॥ १११९५ ॥ थलिचसेटीहन्तोवा ॥ १११९६ ॥ जित्यादिर्नित्यम् ॥ १११९७ ॥ आ
मन्त्रितस्वर्दे ॥ १११९८ ॥ पथिमथोः सर्वनामस्थाने ॥ १११९९ ॥ अन्तश्चतवैयुगपत् ॥ ११२०० ॥ ह्ययोनिवासे ॥ ११२०१ ॥ जयःकरणम्
॥ ११२०२ ॥ वृषादीनां च ॥ ११२०३ ॥ संज्ञायामुपमानम् ॥ ११२०४ ॥ निष्ठाचद्यजनात् ॥ ११२०५ ॥ शुक्कधट्टो ॥ ११२०६ ॥ आशितः क
र्त्ता ॥ ११२०७ ॥ रिक्ते विभाषा ॥ ११२०८ ॥ जुष्टार्पिते च छन्दसि ॥ ११२०९ ॥ नित्यं मन्त्रे ॥ ११२१० ॥ युष्मदस्मदोर्दसि ॥ ११२११ ॥
ङयि च ॥ ११२१२ ॥ यतोऽनावः ॥ ११२१३ ॥ ईडवन्दृशंसदुहाण्यतः ॥ ११२१४ ॥ विभाषावेष्विन्धानयोः ॥ ११२१५ ॥ त्यागरागहास
कुहश्चक्रयानाम् ॥ ११२१६ ॥ उपोत्तमं रिति ॥ ११२१७ ॥ चङ्गन्यतरस्याम् ॥ ११२१८ ॥ मतोः पूर्वमात्संज्ञायां स्त्रियाम् ॥ ११२१९ ॥

अ० अन्तोवत्याः।६।१।२२७।ईवत्याः।६।१।२२९।चौ।६।१।२२२।समासस्य।६।१।२२३।एकाचश्चायोल्यपिचयेचक्षय्यजय्याऽवकःसवर्णे
 २७ ऽवपथासिहिंसायामनुदात्तस्यचविभाषाक्षयईवत्यास्त्रीणि॥ ॥द्वतिषष्टाध्यायस्यप्रथमःपादः॥१॥ ॥बहुव्रीहोप्रकृत्यापूर्व
 पदम्।६।२।१।तत्पुरुषेतुल्यार्थत्वात्तीयासप्तस्युपमानाव्ययद्वितीयाकृत्याः।६।२।२।वर्णोवर्णेष्वनेते।६।२।३।गाधलवणयोःप्रमाणे
 ६।२।४।दायाद्यंदायादे।६।२।५।प्रतिवन्धिविरक्तच्छयोः।६।२।६।पदेपदेशे।६।२।७।निवातेवातत्वाणे।६।२।८।शारदेनार्तवे।६।
 २।९।अध्वर्युकषाययोर्जातौ।६।२।१०।सदृशप्रतिरूपयोःसादृश्ये॥६।२।११।द्विगौप्रमाणे।६।२।१२।गन्तव्यपण्यंवाणिजे।६।२।
 १३।मानोपज्ञापक्रमच्छायेनपुंसके।६।२।१४।सुखप्रिययोर्हिते।६।२।१५।प्रीतोच।६।२।१६।स्वस्वामिनि।६।२।१७।प्रत्यावैश्वर्ये।
 ६।२।१८।नभूवाक्किदिधिषु।६।२।१९।वाभुवनम्।६।२।२०।आशङ्काबाधनेदीयस्सुसमावने।६।२।२१।पूर्वेभूतपूर्वे।६।२।२२।
 सविधसनीडसमर्प्योदसवेशसदेशेषुसामीप्ये।६।२।२३।विस्पष्टादीनिगुणवचनेषु।६।२।२४।अज्याऽवककन्यापवत्सुभावे
 कर्मधारये।६।२।२५।कुमारश्च।६।२।२६।आदिःप्रत्येनसि।६।२।२७।पूगेष्वन्यतरस्याम्।६।२।२८।दृगन्तकालकपालभगाल
 शरावेषुद्विगौ।६।२।२९।बहुन्यतरस्याम्।६।२।३०।दिष्टिवितस्त्योश्च।६।२।३१।सप्तमीसिद्धसुक्पक्वन्धेषकालात्॥६।२।३२।
 परिप्रत्युपायावर्ज्यमानाऽहोरात्रावयवेषु।६।२।३३।राजन्यबहुवचनद्वन्द्वेऽन्धकटृष्णिषु।६।२।३४।संख्या।६।२।३५।
 आचार्योपसर्जनश्चाऽन्तेवासी।६।२।३६।कार्तिकौजपादयश्च।६।२।३७।महान्वीत्यपरान्तगृष्टीषासजाबालभारभारत॥
 हेलिहिलिरौरवप्रहृष्टेषु।६।२।३८।सुहृन्कश्चैश्वदेवे।६।२।३९।उष्ट्रःसादिवाभ्योः।६।२।४०।गोःसादसादिसारथिषु।६।२।४१।

कुरुगार्हपत्यस्तिकगुर्वसूतजरत्यश्लीलदृढरूपापारेवडवातैतिलकद्रुपण्यकन्वलोदासीभारणाञ्च। दी२४२चतुर्थीतदर्थे। दी२४३
अर्थे। दी२४४। केच। दी२४५। कर्मधारयेनिष्ठा। दी२४६। अहीनेहितीया। दी२४७। तृतीयाकर्मणि। दी२४८। गतिरनन्तरः।
दी२४९। तादौचनितिकृत्यतौ। दी२५०। तवैचान्तश्चयुगपत्। दी२५१। अनिगन्तोऽञ्चतौवप्रत्यये। दी२५२। न्यधीच। दी२५३।
इषदन्यतरस्याम्। दी२५४। हिरण्यपरिमाणन्धने। दी२५५। प्रथमोचिरेपसम्पत्तौ। दी२५६। कतरकतमौकर्मधारये। दी२५७।
आप्योब्राह्मणकुमारयोः। दी२५८। राजाच। दी२५९। षष्ठोप्रत्येनसि। दी२६०। केनित्यर्थे। दी२६१। ग्रामःशिल्पिनि। दी२६२।
राजाचप्रशंसायाम्। दी२६३। आदिरुदात्तः। दी२६४। सप्तमीहारिणोधर्म्यहरणे। दी२६५। युक्तेच। दी२६६। विभाषाध्यक्षे। दी२६७।
पापञ्चशिल्पिनि। दी२६८। गोत्रान्तेवासिमाणवब्राह्मणेषुक्षेपे। दी२६९। अङ्गनिमैरेये। दी२७०। भक्ताख्यास्तदर्थेषु। दी२७१।
गोविडालसिंहसैन्धवेषूपमाने। दी२७२। अकेजीविकार्थे। दी२७३। प्राचांक्रीडायाम्। दी२७४। अणिनियुक्ते। दी२७५। शिल्पिनिचाऽक्षजः। दी२७६। संज्ञायाम्। दी२७७। गोतन्तियवम्याले। दी२७८। णिनि। दी२७९। उपमानंशब्दार्थप्रकृतावेव। दी२८०।
युक्ताण्येह्यादयश्च। दी२८१। दीर्घकाशतुषभाष्टवदञ्जे। दी२८२। अन्त्यात्पूर्वबहुचः। दी२८३। ग्रामेनिवसन्तः। दी२८४।
घोषादिषुच। दी२८५। छात्रादयःशालायाम्। दी२८६। प्रस्येदृढमकक्यादीनाम्। दी२८७। मालादीनाञ्च। दी२८८। अमहन्न
वन्नगरेऽनुदीचाम्। दी२८९। अर्मेचावर्णद्युच्यच। दी२९०। नभूताधिकसजीवमद्रोश्मकञ्जलम्। दी२९१। अन्तः। दी२९२।
सर्वगुणकात्म्ये। दी२९३। संज्ञायांगिरिनिकाययोः। दी२९४। कुमाप्यविषसि। दी२९५। उदकेकेवले। दी२९६। द्विगोक्रतौ॥ ६०

अ०
२८

॥६॥२१८॥सभायान्नपुंसके॥६॥२१८॥पुरेमाचाम्॥६॥२१८॥अरिष्टगौडपूर्वेच॥६॥२१९०॥नहास्तिनफलकमाहेयाः॥६॥२१९०॥कुसूल
कूपकुम्भशालं विले॥६॥२१९०॥दिक्शब्दाग्रामजनपदाख्यानचानराटेषु॥६॥२१९०॥आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासिनि॥६॥२१९०॥
उत्तरपदद्वेसर्वत्र॥६॥२१९०॥बहुव्रीहौविश्वसंज्ञायाम्॥६॥२१९०॥उदराश्वेषु॥६॥२१९०॥क्षेपे॥६॥२१९०॥नदीवन्धुनि॥६॥
२१९०॥निष्टोपसर्गपूर्वमन्यतरस्याम्॥६॥२१९०॥उत्तरपदादिः॥६॥२१९१॥कर्णवर्णलक्षणात्॥६॥२१९१॥संज्ञौपम्ययोश्च॥६॥२१९१॥
११३॥कण्टपृष्ठीवाजङ्घ्र्यश्च॥६॥२१९१॥मृङ्गमवस्थायाञ्च॥६॥२१९१॥नजोजरमरमित्रमृताः॥६॥२१९१॥सोर्मनसीअलोमोषसी॥
६॥२१९१॥क्रत्वाहयश्च॥६॥२१९१॥आद्युदात्तं च चन्द्रसि॥६॥२१९१॥वीरवीर्योचि॥६॥२१९१॥कूलतीरत्तलमूलशालाः ससममा
व्ययीभावे॥६॥२१९१॥कंसमन्यशूर्यपाय्यकाण्डं हि गो॥६॥२१९२॥तत्पुरुषेशालायान्नपुंसके॥६॥२१९२॥कन्याच॥६॥२१९२॥आ
दिश्विहणादीनाम्॥६॥२१९२॥चेलखेटकटुककाण्डं गृहीयाम्॥६॥२१९२॥चीरमुपमानम्॥६॥२१९२॥पललस्तपशाकमिश्रे॥६॥
२१९२॥कूलसूदस्थलकर्षाः संज्ञायाम्॥६॥२१९२॥अकर्मधारयेण्यम्॥६॥२१९३॥वर्गद्वयश्च॥६॥२१९३॥पुत्रः पुंभ्यः॥६॥२१९३॥
नाचार्यराजत्वं कसंयुक्तज्ञात्पारयेभ्यः॥६॥२१९३॥चूर्णादीन्यप्राणिषष्ठ्याः॥६॥२१९३॥षट्चकाण्डादीनि॥६॥२१९३॥कुण्डवनम्॥६॥
२१९३॥प्रह्लासाभगालम्॥६॥२१९३॥शितेर्निस्त्यबहुचबहुव्रीहावभसत्॥६॥२१९३॥गतिकारकोपपदात्कत्॥६॥२१९३॥उभेव
नसत्यादिषु युगपत्॥६॥२१९४॥देवताहन्त्रे च॥६॥२१९४॥नोत्तरपदेऽनुदात्तादावष्टयिवीरुद्रपूषमन्येषु॥६॥२१९४॥अन्तः॥६॥२१९४॥
११४३॥थाथघञ्त्ताजवित्रकाणाम् ॥६॥२१९४॥सूपमानात्कः॥६॥२१९४॥संज्ञायामनाचितादीनाम्॥६॥२१९४॥प्रह्लादीनाञ्च

रा०
२८

॥६॥२१४७॥कारकादृतःश्रुतयोरेवाशिषि॥६॥२१४८॥इत्थंभूतेनकृतमितिच॥६॥२१४९॥अनोभावकर्मवचनः॥६॥२१५०॥मनु
क्तिन्यास्यानशयनासनस्थानयाजकादिक्तीताः॥६॥२१५१॥सप्तम्याःपुण्यम्॥६॥२१५२॥ऊनार्थकलहंततीयायाः॥६॥२१
५३॥मिश्रश्चानुपसर्गमसन्धौ॥६॥२१५४॥नजोगुणप्रतिषेधेसंपाद्यर्हहितालमर्थास्तद्धिताः॥६॥२१५५॥ययतोश्चाऽतदर्थो॥
६॥२१५६॥अचूकावशक्तौ॥६॥२१५७॥आक्रोशेच॥६॥२१५८॥संज्ञायाम्॥६॥२१५९॥कृत्योकेणुच्चार्यादयश्च॥६॥२१६०॥विभा
षात्तन्नन्ततीक्ष्णसुचिषु॥६॥२१६१॥बहुव्रीहाविदमेतत्तद्व्युत्पत्त्यमपूरणयोःक्रियागणने॥६॥२१६२॥संख्यायास्तनो॥६॥२१
१६३॥विभाषाच्चन्दसि॥६॥२१६४॥संज्ञायांमित्राजिनयोः॥६॥२१६५॥व्यवायिनोऽन्तरम्॥६॥२१६६॥मुखंस्वाङ्गम्॥६॥२१
१६७॥नोव्ययदिकृच्छ्रद्वगोमहत्सूलमुष्टिपृथुवत्सेभ्यः॥६॥२१६८॥निष्ठोपमानादन्यतरस्याम्॥६॥२१६९॥जातिकालसुरवा
दिभ्योऽनाच्छादनात्कृतमितप्रतिपन्नाः॥६॥२१७०॥वाजाते॥६॥२१७१॥नञ्सुभ्याम्॥६॥२१७२॥कपिपूर्वी॥६॥२१७३॥ह्रस्वा
तेंत्यात्पूर्वी॥६॥२१७४॥बहोर्नञ्चदुत्तरपदभूमि॥६॥२१७५॥नगुणादयोवयवाः॥६॥२१७६॥उपसर्गात्स्वाङ्गं ध्रुवमपस्तु॥६॥२१७७
वनंसमासे॥६॥२१७८॥अन्तः॥६॥२१७९॥अन्तश्च॥६॥२१८०॥ननिविभ्याम्॥६॥२१८१॥परैरभितोभाविमण्डलम्॥६॥२१८२॥
मादस्वाङ्गं संज्ञायाम्॥६॥२१८३॥निरुद्धादीनिच॥६॥२१८४॥अभेर्मुखम्॥६॥२१८५॥अपाच्च॥६॥२१८६॥स्किगपूतवीणाञ्जो
र्ध्वकुक्षिसीरनामनामच॥६॥२१८७॥अधेरुपरिस्थम्॥६॥२१८८॥अनोरप्रधानकनीयसी॥६॥२१८९॥पुरुषश्चान्वादिष्ठः॥६॥२१
१९०॥अतेरक्त्यदे॥६॥२१९१॥नेरनिधाने॥६॥२१९२॥मतेरंश्चादयस्तत्पुरुषे॥६॥२१९३॥उपाद्यजजिनमगौरादयः॥६॥२१९४॥

अ० २८ सोरवक्षेपणे। ३१८५। विभाषोत्पत्ते। ३१८६। द्वित्रिभ्यां पादमूर्द्धसु बहुव्रीहौ। ३१८७। सक्थं चाक्रान्तात्। ३१८८। परादि
 २८ मूर्द्धसि बहुलम्। ३१८९। बहुव्रीहावाशङ्कगोसादक्तेनित्यार्थे युक्तानहस्तिनकूलतीरदेवताविभाषाननियेकोनविंशति
 ॥ ॥ इति षष्ठाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥ २॥ ॥ अलुगुत्तरपदे। ३१९०। पञ्चम्यास्तोकादिभ्यः। ३१९१। ओजसोहोमस्तमस्त
 तीयायाः। ३१९२। मनसः संज्ञायाम्। ३१९३। आज्ञापिनिच। ३१९४। आत्मनश्च पूरणे। ३१९५। वैयाकरणख्यायांचतुर्थ्याः। ३१९६।
 ३१९७। परस्यच। ३१९८। हलन्तात्सप्तम्याः संज्ञायाम्। ३१९९। कारकाम्निचप्राचां हलादौ। ३२००। मध्याह्नौ। ३२०१। अमूर्द्धम
 स्तकात्स्वाङ्गदकामे। ३२०२। बन्धेचविभाषा। ३२०३। तत्पुरुषेकृतिबहुलम्। ३२०४। प्राट्टशरत्कोलदिवाञ्जे। ३२०५।
 विभाषावर्षक्षरशरवरात्। ३२०६। घकालतनेषुकालनाम्नः। ३२०७। शयवासवासिघकालात्। ३२०८। नेत्रिद्वन्धा
 तिषुच। ३२०९। स्थेचभाषायाम्। ३२१०। षष्ठ्या आक्रोशे। ३२११। पुत्रेन्यतरस्याम्। ३२१२। ऋतोविद्यायोनि सम्बन्धेभ्यः।
 ३२१३। विभाषास्वस्यपत्योः। ३२१४। आनङ् ऋतोद्वन्द्वे। ३२१५। देवताद्वन्द्वेच। ३२१६। ईदग्नेः सोमवरुणयोः। ३२१७।
 इहृद्वौ। ३२१८। दिवोद्यावा। ३२१९। दिवसश्च पृथिव्याम्। ३२२०। उषासोषसः। ३२२१। मातरपितरावुदीचाम्। ३२२२। पि
 तरामातरचच्छन्दसि। ३२२३। स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनुङ् समात्ताधिकरणे स्त्रियामपूरणी प्रियादिषु। ३२२४। तसिला
 दिषाकृत्वमुचः। ३२२५। क्यङ्गानिनोश्च। ३२२६। नकोपधायाः। ३२२७। संज्ञा पूरण्योश्च। ३२२८। द्विनिमित्तस्य चतद्वित
 स्परक्तविकारे। ३२२९। स्वाङ्गच्चेतोमानिनि। ३२३०। जातेश्च। ३२३१। पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु। ३२३२। घरूपकल्प

रा०
 २८

चेलङ्गुवगोत्रमतहतेषुङ्गोऽनेकाचोह्रस्वः।३।४३।नद्याःशेषस्यान्यतरस्याम्।३।४४।उगितश्च।३।४५।आन्महतःसमाना
धिकरणजातीययोः।३।४६।द्वयनःसंख्यायामवहुव्रीह्यःशोतोः।३।४७।त्रेस्त्रयः।३।४८।विभाषाचत्वारिंशत्प्रभृतौस
र्वेषाम्।३।४९।हृदयस्यहृत्स्तेख्यदण्डलासेषु।३।५०।वाशोकष्यञ्जरीगेषु।३।५१।पादस्यपदाज्यातिगोपहतेषु।३।५२।पद्यत्यऽतदर्थे।३।५३।हिमकाषिहतिषुच।३।५४।ऋचःशे।३।५५।वाघोषमिश्रशब्देषु।३।५६।उदकस्योदः
संज्ञायाम्।३।५७।पेयंवासवाहनधिषुच।३।५८।एकहस्तादौपूरयितव्येन्यतरस्याम्।३।५९।मन्यौदनसक्तुर्विन्दुवज्रा
भारहारवीबंधगाहेषुच।३।६०।द्वकोह्रस्वोङ्गो गालवस्य।३।६१।एकतद्धितेच।३।६२।ऊष्णपोःसंज्ञाच्छन्दसोर्वहुलम्
।३।६३।त्वेच।३।६४।दृष्टकैषीकामालानांचिततूलभारिषु।३।६५।खित्यनव्ययस्य।३।६६।अरुद्धिषदजनस्यसुम्
॥३।६७।द्वचएकाचोऽम्प्रत्ययवच्च।३।६८।वाचंयमपुरन्दरैच।३।६९।कारेसत्यागदस्य।३।७०।प्रयेनतिलस्यपा
तिजे।३।७१।रात्रेःकृतिविभाषा।३।७२।नलोपोनञः।३।७३।तस्मान्नुडचि।३।७४।नभ्राणनयान्नवेदानासत्मानमुचि
नकुलनखनपुंसकनक्षत्रनक्रनाकेषुप्रकृत्या।३।७५।एकादिश्वेकस्यचादुक्।३।७६।नगोप्राणिष्वन्यतरस्याम्।३।७७।सहस्यसःसंज्ञायाम्।३।७८।ग्रन्थान्ताधिकैच।३।७९।द्वितीयेचानुपास्ये।३।८०।अव्ययीभावेचाकाले।३।८१।वोपसज्ज
नस्य।३।८२।प्रकृत्याऽशिष्यगोवत्सहलेषु।३।८३।समानस्यच्छन्दस्यमूर्द्धप्रभृत्युदक्केषु।३।८४।ज्योतिर्जनपदरविनाभिनामगो
त्ररूपस्यानवर्णवयोवचनबन्धुषु।३।८५।चरणेब्रह्मचारिणि।३।८६।तीर्थेये।३।८७।विभाषोदरे।३।८८।हृद्दशवतुषु॥

अ० ॥ ३८८ ॥ इदं किमोरीशकी ॥ ३८९ ॥ आसर्वनाम्नः ॥ ३९० ॥ विष्वदेव योश्च ते रद्र्यश्च तौ वप्रत्यये ॥ ३९१ ॥ समः समि ॥ ३९२ ॥
 ३० तिरसस्तिर्यलोपे ॥ ३९३ ॥ सहस्रसध्रिः ॥ ३९४ ॥ सधमादस्य योश्च न्दसि ॥ ३९५ ॥ ह्यन्तरुपसर्गेभ्योपईत ॥ ३९६ ॥ ऊदनो
 ईशो ॥ ३९७ ॥ अषष्ठ्यततीयास्यस्यान्यस्यदुगाशीराशास्यास्थितोत्सुकोतिकारकरागच्छेषु ॥ ३९८ ॥ अर्थे विभाषा ॥ ३९९ ॥
 कोः कतत्पुरुषेचि ॥ ४०० ॥ रथवदयोश्च ॥ ४०१ ॥ तणे च जातो ॥ ४०२ ॥ काकथ्यस्योः ॥ ४०३ ॥ ईषदर्थे ॥ ४०४ ॥ विभा
 षापुरुषे ॥ ४०५ ॥ कवंचोष्णे ॥ ४०६ ॥ पथि च न्दसि ॥ ४०७ ॥ एषोदरादीनियथोपदिष्टम् ॥ ४०८ ॥ संख्याविसायपूर्व
 स्यान्हस्याहनन्यतरस्याङो ॥ ४०९ ॥ ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ॥ ४१० ॥ सहिवहेरोदवर्णस्या ॥ ४११ ॥ साढ्ये साढ्वासाढेति निग
 मे ॥ ४१२ ॥ संहितायाम् ॥ ४१३ ॥ कर्णेलक्षणस्याविष्टापञ्चमणिभिन्नछिन्नछिद्रसुवस्वस्तिकस्या ॥ ४१४ ॥ नहिदृतिवृ
 ष्विधिरुचिसहितनिषुक्तौ ॥ ४१५ ॥ वनगिर्योऽसंज्ञायां कोटरकिशुलकादीनाम् ॥ ४१६ ॥ चले ॥ ४१७ ॥ मतौ बहुचोऽन
 जिरादीनाम् ॥ ४१८ ॥ शरादीनाञ्च ॥ ४१९ ॥ इकोवहेपीलोः ॥ ४२० ॥ उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम् ॥ ४२१ ॥ इकः का
 शो ॥ ४२२ ॥ दस्ति ॥ ४२३ ॥ अष्टनः संज्ञायाम् ॥ ४२४ ॥ च्छन्दसि च ॥ ४२५ ॥ चित्तेः कपि ॥ ४२६ ॥ विश्वस्य वसुणोः ॥ ४२७ ॥
 ३१२८ नरे सञ्ज्ञायाम् ॥ ४२८ ॥ मित्रे च वै ॥ ४२९ ॥ मन्त्रे सोमाश्चेन्द्रियविश्वदेवस्य मतौ ॥ ४३० ॥ ओषधेश्च विभक्तावप्र
 थमायाम् ॥ ४३१ ॥ ऋचितुनुघमस्तुतङ्कुत्रोरुष्याणाम् ॥ ४३२ ॥ इकः सुनि ॥ ४३३ ॥ ह्यचोतस्तिङ् ॥ ४३४ ॥ निपात
 स्पचा ॥ ४३५ ॥ अन्येषामपि दृश्यते ॥ ४३६ ॥ चो ॥ ४३७ ॥ संप्रसारणस्य ॥ ४३८ ॥ अलुगुत्तरपदेष्वप्याजातेरि को व्ययी

रा०
 ३०

भावेकोः कदिको वह एको न विंशतिः॥ ॥ इति षष्ठाध्यायस्य तृतीयः पादः॥ ३॥ ॥ अङ्गस्यार्द्धा १। हलः। र्द्वा २। नामि। र्द्वा ३। न
तिस्रचतस्र। र्द्वा ४। छन्दसु भयथा। र्द्वा ५। न च। र्द्वा ६। नोपधायाः। र्द्वा ७। सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ। र्द्वा ८। वाष पूर्वस्य निगमे
र्द्वा ९। सान्त महतः संयोगस्य। र्द्वा १०। अप्रत्यक्षस्वसनप्रनेष्ट्वष्टत् होतपोत्प्रशास्तृणाम्। र्द्वा ११। इहूपाय्यम्णां शौ। र्द्वा
१२। सौचा। र्द्वा १३। अत्वसन्तस्य चाधातोः। र्द्वा १४। अनुनासिकस्य किडलोः किति। र्द्वा १५। अजफन गमांसनि। र्द्वा १६। त
नोतेविभाषा। र्द्वा १७। क्रमश्च। र्द्वा १८। च्छ्रोः मूडनुनासिके च। र्द्वा १९। ज्वरत्वरस्त्रिव्यविमवामुपधायाश्च॥ र्द्वा २०। राह्नोपः। र्द्वा
२१। असिद्धवद्वाभात्। र्द्वा २२। आन्तलोपः। र्द्वा २३। अनदिता हल उपधायाः किति। र्द्वा २४। दंशसञ्ज्ञस्वञ्जांशपि। र्द्वा २५।
रञ्जेच्च। र्द्वा २६। घञि चभावकरणयोः। र्द्वा २७। स्पद्योजवे। र्द्वा २८। अवोदै धौघ्नमथ हिममथथाः। र्द्वा २९। नाञ्चेः पूजायाम्। र्द्वा
३०। क्लिस्कन्दस्यन्दोः। र्द्वा ३१। जान्तनशं विभाषा। र्द्वा ३२। भञ्जेच्च विणि। र्द्वा ३३। शासइदङ् हलोः। र्द्वा ३४। शाहौ। र्द्वा ३५। हेन्ते
र्जाः। र्द्वा ३६। अनुदातोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपोद्भक्तिकिति। र्द्वा ३७। वाल्पि। र्द्वा ३८। नक्तिचिदीर्घश्च। र्द्वा ३९।
३९। गमः कौ। र्द्वा ४०। विट्टनोरनुनासिकस्याऽत्। र्द्वा ४१। जनसनखनांसन्मूलोः। र्द्वा ४२। येविभाषा। र्द्वा ४३। तनोतेर्यकि। र्द्वा ४४।
४४। सनः क्तिचिलोपश्चास्यान्यतरस्याम्। र्द्वा ४५। आर्द्धधातुके। र्द्वा ४६। भ्रञ्जारे पधयोरमन्यतरस्याम्। र्द्वा ४७। अतो लोपः। र्द्वा
४८। ययस्पहलः। र्द्वा ४९। क्यस्य विभाषा। र्द्वा ५०। णेरनिटि। र्द्वा ५१। निहायां सेटि। र्द्वा ५२। जिनिता मन्त्रे। र्द्वा ५३। शमिताय ज्ञे॥
र्द्वा ५४। अयामन्ताल्वायेत्त्विण्युषु। र्द्वा ५५। ल्यपिलघुपूर्वात्। र्द्वा ५६। विभाषापः। र्द्वा ५७। मुप्नुवो दीर्घश्चन्द्रसि। र्द्वा ५८।

अ० श्रियः। ई। ४। ५०॥ निष्ठाया मण्यदर्थे। ई। ४। ६०॥ वाक्रोशदैत्ययोः। ई। ४। ६१॥ स्पसिक्वीपुट्तासिषुभावकर्मणोरुपदेशोजभ्रनग्रहदृशांवाचिष्व
 दिङ्। ई। ४। ६२॥ दीडनेयुडचिकिति। ई। ४। ६३॥ आतोलोपइतिव। ई। ४। ६४॥ इच्चति। ई। ४। ६५॥ घुमास्यागापाजहातिसंहलि। ई। ४। ६६॥ ए
 द्वित्रिदि। ई। ४। ६७॥ वान्यस्स संयोगादेः। ई। ४। ६८॥ नल्पपि। ई। ४। ६९॥ मयतेरित्यन्तरस्याम्। ई। ४। ७०॥ लुङ्लङ्लङ्श्चडुदात्तः। ई। ४। ७१॥
 आडजादीनाम्। ई। ४। ७२॥ छन्दस्पिहश्यते। ई। ४। ७३॥ नमाङ्योगे। ई। ४। ७४॥ बहुलंछन्दस्यमाङ्योगेपि। ई। ४। ७५॥ इरयोरो। ई। ४। ७६॥ अ
 विष्नुधातुभ्रुवांश्चारियङुवडौ। ई। ४। ७७॥ अभ्यासस्यासबर्णे। ई। ४। ७८॥ स्त्रियाः। ई। ४। ७९॥ वामूशसोः। ई। ४। ८०॥ इणोमण्। ई। ४। ८१॥
 सरनेकाचोसंयोगपूर्वस्य। ई। ४। ८२॥ ओःसुपि। ई। ४। ८३॥ वर्षाभवश्च। ई। ४। ८४॥ नभूसुधियोः। ई। ४। ८५॥ छन्दस्युभयथा। ई। ४। ८६॥ हुप्सु
 वोःसार्वधातुके। ई। ४। ८७॥ भुवोबुग्लुङ्लिलोः। ई। ४। ८८॥ ऊदुपधायागोहः। ई। ४। ८९॥ दोषोणौ। ई। ४। ९०॥ वाचितविगगे। ई। ४। ९१॥ मि
 तां ह्रस्वः। ई। ४। ९२॥ चिण्णमुलोदीर्घोन्यतरस्याम्। ई। ४। ९३॥ खचिह्रस्वः। ई। ४। ९४॥ ल्ह्रादेनिष्ठायाम्। ई। ४। ९५॥ छादेर्घेद्युपसर्गस्य
 । ई। ४। ९६॥ इस्मन्नन्किषुचा। ई। ४। ९७॥ गमहनजनखनघसांलोपः कृत्यनडि। ई। ४। ९८॥ तनिपत्योश्चुन्दसि। ई। ४। ९९॥ घसिमसोर्ह
 लिचा। ई। ४। १००॥ हुझल्पोहेर्हिः॥ ई। ४। १०१॥ शुष्टणुपृक्तृभ्यश्चुन्दसि। ई। ४। १०२॥ अडितश्च। ई। ४। १०३॥ चिणोलुकु। ई। ४। १०४॥ रा०
 अतोहेः। ई। ४। १०५॥ उतश्चमत्ययादसंयोगपूर्वोत्। ई। ४। १०६॥ लोपश्चास्यान्यतरस्यांम्वोः। ई। ४। १०७॥ नित्यंकरोतेः। ई। ४। १०८॥ येच
 । ई। ४। १०९॥ अतउत्सार्वधातुके॥ ई। ४। ११०॥ असोरह्नोपः॥ ई। ४। १११॥ आभ्यस्तयोरतः। ई। ४। ११२॥ इहल्यघोः। ई। ४। ११३॥ इहरि
 द्रस्य। ई। ४। ११४॥ भियोन्यतरस्याम्। ई। ४। ११५॥ जहातेश्च। ई। ४। ११६॥ आचहौ। ई। ४। ११७॥ लोपोयि। ई। ४। ११८॥ घसोरैच्चावभ्यासलो

पञ्च। ६। ४। ११८। अत एकहस्तमध्येऽनादेशादेर्लिटि। ६। ४। १२०। यलिवसेटि। ६। ४। १२१। तृफलभजत्रपञ्च। ६। ४। १२२। राधोहिंसाया
मू। ६। ४। १२३। वाज्रभ्रमुत्रसामू। ६। ४। १२४। फणाञ्चसप्तानामू। ६। ४। १२५। नशसददवादिगुणानामू। ६। ४। १२६। अर्चणस्त्रसावननः
। ६। ४। १२७। मघवावैहुलमू। ६। ४। १२८। भस्या। ६। ४। १२९। पादः पत। ६। ४। १३०। वसोः सम्प्रसारणमू। ६। ४। १३१। वाहकृद्। ६। ४। १३२
श्वयुवमघोनामतद्धिते। ६। ४। १३३। अह्नोयो नः। ६। ४। १३४। पपूर्वहन्धतरज्ञामणि। ६। ४। १३५। विभाषाडिः श्योः। ६। ४। १३६। न सं
योगाहमन्तात्। ६। ४। १३७। अचः। ६। ४। १३८। उदईत्। ६। ४। १३९। आतोधातोः। ६। ४। १४०। मन्त्रेषाङ्गादेरत्मनः। ६। ४। १४१। तिविं
शतेर्दिति। ६। ४। १४२। टेः। ६। ४। १४३। नस्तद्धिते। ६। ४। १४४। अहृष्टखोरेव। ६। ४। १४५। ओर्गुणः। ६। ४। १४६। ढेलोपोकद्रूः। ६। ४। १
४७। यस्येतिच। ६। ४। १४८। सूर्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानां यउपधायाः। ६। ४। १४९। हलस्तद्धितस्य। ६। ४। १५०। आपत्यस्यचतद्धिते।
ऽनाति। ६। ४। १५१। क्यचोश्च। ६। ४। १५२। विल्वकादिभ्यश्चुस्यलुक्। ६। ४। १५३। तुरिष्टेमेयस्तु। ६। ४। १५४। टेः। ६। ४। १५५। स्थूलदू
रशुबह्रस्वक्षिप्रस्तुद्राणां यणादिपरंपूर्वस्यचगुणः। ६। ४। १५६। प्रियस्थिरस्फिरेरुबहुलगुरुदृढतृप्रदीर्घचन्द्रारकाणां प्रस्य
स्फबर्वेहिगर्वर्षित्रङ्गाघिहृन्दाः। ६। ४। १५७। वहोर्लोपोभूचवहोः। ६। ४। १५८। इष्टस्ययिद्व। ६। ४। १५९। ज्यादादीयसः। ६। ४। १६०। ॥ ४
रञ्जतोहलादेर्लघोः। ६। ४। १६१। विभाषज्योश्चुन्दसि। ६। ४। १६२। प्रकृतैकाचू। ६। ४। १६३। इ नण्यऽनपत्ये। ६। ४। १६४। गायिविद
धिकेऽगिगणियणिनश्च। ६। ४। १६५। संयोगादिभ्यो। ६। ४। १६६। अनू। ६। ४। १६७। येचाभावकर्मणोः। ६। ४। १६८। आत्माध्वानोरवे।
६। ४। १६९। नमपूर्वेऽपत्येवर्मणः। ६। ४। १७०। ब्राह्मोजातौ। ६। ४। १७१। कर्मस्त्वाच्छीत्ये। ६। ४। १७२। औक्षमऽनपत्ये। ६। ४। १७३।

अ० दण्डिनायनहास्तिनायनायवर्णिकजैह्याशिनेयवासिनायनिभौणहस्यधैवत्यसारवैश्वाकमैत्रेयहिरण्ययानि। ६। ४। १७४। नृत्य
 ३२ वास्तव्यमाध्वीहिरण्ययानिच्छन्दसि। ६। ४। १७५॥ अङ्गः स्यरहोपोविदुनोर्वाक्रोशेणोहुद्रालभ्यः स्यलिचमंत्रेषुरक्ततः पञ्चदश॥
 ॥ इतिषष्ठाध्यायस्यचतुर्थः पादः ॥ ४॥ इतिषष्ठाध्यायः समाप्तः ॥ ॥ युवोरनाको। ७। १। १। आयनेयीनीयियः फढखच्छघाप्रत्य
 यादीनाम्। ७। १। २। द्योन्तः। ७। १। ३। अदभ्यस्तात्। ७। १। ४। आत्मनेपदेघनतः। ७। १। ५। शीडोरुट। ७। १। ६। वेत्तेर्विभावा। ७। १। ७। बहुलंछ
 न्दसि। ७। १। ८। अतोमिसरेस। ७। १। ९। वहुलंछन्दसि। ७। १। १०। नेदमदसोरकोः। ७। १। ११। टाडः सिडः सामिनात्स्याः। ७। १। १२। डेः र्यः। ७।
 १। १३। सर्वनाम्नः सै। ७। १। १४। डः सिडोः स्मात्स्मिन्। ७। १। १५। पूर्वादिभ्यो नवभ्योवा। ७। १। १६। जसः शी। ७। १। १७। औडः आपः। ७। १।
 १८। नपुंसकाच्च। ७। १। १९। जशसोः शिः। ७। १। २०। अष्टाभ्य औश। ७। १। २१। षड्गोलुक्। ७। १। २२। स्वमोर्नपुंसकात्। ७। १। २३। अतोम्। ७।
 १। २४। अङुतरादिभ्यः पञ्चभ्यः। ७। १। २५। नेतराच्छन्दसि। ७। १। २६। युष्मदस्मद्भ्याडः सोश। ७। १। २७। डेः प्रथमयोः। ७। १। २८। शसोन
 । ७। १। २९। भ्यसोभ्यम्। ७। १। ३०। पञ्चम्या अत्। ७। १। ३१। एकवचनस्य च। ७। १। ३२। साम आकम्। ७। १। ३३। आत औणलः। ७। १। ३४। तुह्यो
 स्नातङाः शिष्यन्यतरस्याम्। ७। १। ३५। विदेशतुर्वसुः। ७। १। ३६। समासेऽनन्यपूर्वेक्को ल्यप्। ७। १। ३७। त्कापिच्छन्दसि। ७। १। ३८। सुपांसु रा०
 लुक्पूर्वसवर्णाच्चेयाडाड्यायाजालः। ७। १। ३९। अमोमश। ७। १। ४०। लोपस्त आत्मनेपदेषु। ७। १। ४१। ध्वमो ध्वात्। ७। १। ४२। यजधे ३२
 नमिति च। ७। १। ४३। तस्यतात्। ७। १। ४४। तप्तनप्तनयनाश्च। ७। १। ४५। इदन्तोमसि। ७। १। ४६। त्कोयक्। ७। १। ४७। इ दीनमिति च। ७। १। ४८
 स्त्रात्यादयश्च। ७। १। ४९। आज्ञसेरसुक। ७। १। ५०। अश्वशीरदृषलवणानामात्मप्रीतौ क्यचि। ७। १। ५१। आमिसर्वनाम्नः सुट्। ७। १। ५२।

त्रेस्त्रयः ॥ १११५३ ॥ ह्रस्वनद्यापो नुद् ॥ १११५४ ॥ षट्पुर्णम् ॥ १११५५ ॥ श्रीग्रामण्यो न्दसि ॥ १११५६ ॥ गोः पादान्ते ॥ १११५७ ॥ इदितो नुम्धातोः
॥ १११५८ ॥ शेषमुचादीनाम् ॥ १११५९ ॥ मलिनशोर्झलि ॥ १११६० ॥ रधिजभोरचि ॥ १११६१ ॥ नेत्यलितिरधेः ॥ १११६२ ॥ रभेरशस्त्रितोः ॥ १११६३ ॥
लभेभ्यः ॥ १११६४ ॥ आडोपि ॥ १११६५ ॥ उपात्प्रशंसायाम् ॥ १११६६ ॥ उपसर्गात्त्वल्घजोः ॥ १११६७ ॥ नसुदुर्भ्यो केवलाभ्याम् ॥ १११६८ ॥ विभा
षाविष्णुलो ॥ १११६९ ॥ उगिदचां सर्वनामस्थाने धातोः ॥ १११७० ॥ युजेरसमासो ॥ १११७१ ॥ नपुंसकस्य झलचः ॥ १११७२ ॥ इकोचिविभा
क्तो ॥ १११७३ ॥ तृतीयादिषु भाषितपुंस्कंपुम्वद्दालवस्य ॥ १११७४ ॥ अस्थिदधिसक्थ्यष्टा मनडुदातः ॥ १११७५ ॥ छन्दस्यपिदृश्यते ॥
१११७६ ॥ ईचद्विवचने ॥ १११७७ ॥ नाभ्यस्ताच्छतुः ॥ १११७८ ॥ वानपुंसकस्य ॥ १११७९ ॥ आच्छीनद्योर्नुम् ॥ १११८० ॥ शप्श्यनोर्नित्यम्
॥ १११८१ ॥ सावनडुहः ॥ १११८२ ॥ ह्रस्ववस्त्वतवसां छन्दसि ॥ १११८३ ॥ दिवओत् ॥ १११८४ ॥ पथिमथ्यभुक्षामात् ॥ १११८५ ॥ इतोत्स
र्वनामस्थाने ॥ १११८६ ॥ शोभ्यः ॥ १११८७ ॥ भस्मदेर्लोपः ॥ १११८८ ॥ पुंसोसुडु ॥ १११८९ ॥ गोतोणित् ॥ १११९० ॥ लुत्तमोवा ॥ १११९१ ॥ सख्यु
रसम्बुद्धौ ॥ १११९२ ॥ अनङ्-सो ॥ १११९३ ॥ ऋदुशनस्युरुदंसोऽनेहसाञ्च ॥ १११९४ ॥ तज्ज्वत्क्रोष्टुः ॥ १११९५ ॥ स्त्रियाञ्च ॥ १११९६ ॥ विभाषा
तृतीयादिष्वचि ॥ १११९७ ॥ चेतुरनुडुहोऽमुदात्तः ॥ १११९८ ॥ अमसम्बुद्धौ ॥ १११९९ ॥ कृतदुदातोः ॥ १११९९ ॥ उपधायाञ्च ॥ १११९९ ॥
उदोष्ठ्यपूर्वस्य ॥ १११९९ ॥ वहुलं छन्दसि ॥ १११९९ ॥ सुवोरष्टाभ्यो लोपस्तरधिजभोऽशप्श्यनोरुपधायास्त्रीणि ॥ इतिसप्तमाध्या
यस्यप्रथमः पादः ॥ ११॥ सिचिद्विद्विः परस्मैपदेषु ॥ १२११ ॥ अतोलां तस्य ॥ १२१२ ॥ वदव्रजहलन्तस्याचः ॥ १२१३ ॥ नेदि ॥ १२१४ ॥ ह्यतस्त
णश्चसजागृणिभ्येदिताम् ॥ १२१५ ॥ ऊर्णोतेर्विभाषा ॥ १२१६ ॥ अतोहलादेर्लोपोः ॥ १२१७ ॥ नेदुशिक्षति ॥ १२१८ ॥ तितुव्रतथसिसुसरक

अ० सेषु च। ७२। ८। एकाच उपदेशेऽनुदत्तात्। ७२। १०। श्चु कः किति। ७२। ११। सनिग्रहगुहोश्च। ७२। १२। कसृभृष्टसुद्रुसुशुवोलिति। ७२। १३।
 ३३ श्चोदितो निष्ठायां। ७२। १४। यस्य विभाषा। ७२। १५। आदितश्च। ७२। १६। विभाषाभावादिकर्मणोः। ७२। १७। सुब्धस्वान्तध्वान्तल
 ग्रन्थिष्टविरिष्यफाण्टवाहानिमन्यमनस्तमः सक्ताविस्पष्टस्वरानायासभ्रशेषु। ७२। १८। धषिशसीवैयासे। ७२। १९। दृढस्थूल
 बलयोः। ७२। २०। प्रभौपरिहृढः। ७२। २१। कृच्छ्रगहनयोः कषः। ७२। २२। घुषिरविशब्देने। ७२। २३। अर्धेः सन्निविभ्यः। ७२। २४। अभे
 श्चाविदूर्ये। ७२। २५। णेरध्ययने हतमा। ७२। २६। वादान्तशान्तपूर्णदस्तस्यष्टच्छन्नज्ञप्ताः। ७२। २७। रुष्यमत्वरसंघुषास्वनाम्। ७
 २। २८। हर्षलोमसु। ७२। २९। अपचितश्च। ७२। ३०। हुहरेऽशुन्दसि। ७२। ३१। अपपरिहृताश्च। ७२। ३२। सोमे हरितः। ७२। ३३। ग्रसित
 स्फभितस्तभितोत्तभितचतविकस्ताविशस्तशंस्तशास्ततरुततरुतवरुतवरुतवरुत्रीरुज्ज्वलितिस्रितिस्रमिति वमित्य
 मितोतिच। ७२। ३४। आर्द्धधातुकस्येडुलादेः। ७२। ३५। सु क्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते। ७२। ३६। ग्रहोलिति दीर्घः। ७२। ३७। हृतोवा॥
 ७२। ३८। नलिङि। ७२। ३९। सिचिच परस्मैपदेषु। ७२। ४०। इट्सनिवा। ७२। ४१। लिङ् सिचोरात्मनेपदेषु। ७२। ४२। ऋतश्चसंयोगादेः
 ७२। ४३। स्वरतिस्त्वतिस्त्वति धुञ्जुदितोवा। ७२। ४४। रधादिभ्यश्च। ७२। ४५। निरः कुषः। ७२। ४६। इणिनष्टायाम्। ७२। ४७। तीषसह
 लुभरुषरिषः। ७२। ४८। सनीवन्तर्द्धभ्रस्जदम्भुश्चिस्त्वपूर्णभरजपिसनाम्। ७२। ४९। क्लिशः त्क्वा निष्टयोः। ७२। ५०। पूडः च। ७२। ५१।
 वसति सुधोरिडा। ७२। ५२। अञ्चै पूजायाम्। ७२। ५३। लुभो विमोहने। ७२। ५४। जृत्रश्चोः क्ति। ७२। ५५। उदितोवा। ७२। ५६। सेसिचि
 कृतचतच्छृदत्तदत्ततः। ७२। ५७। गमेरिड् परस्मैपदेषु। ७२। ५८। नट्टुश्चतुर्भ्यः। ७२। ५९। तासिचक्कुपः। ७२। ६०। अचस्तास्व।

त्यत्यनिटो नित्यम् । ७१२६१॥ उपदेशे त्वत्तः । ७१२६२॥ क्रतो भारद्वाजस्य । ७१२६३॥ बभूयात्ततन्यजगृभ्रववर्थेति निगमे । ७१२६४॥
विभाषासृजिदृशोः । ७१२६५॥ इडत्यतिव्ययतीनाम् । ७१२६६॥ वस्वेकाजादृघसाम् । ७१२६७॥ विभाषागमहनविद्विशाम् । ७१२६८॥
सनिंससनिवांसम् । ७१२६९॥ क्रद्वनोः स्ये । ७१२७०॥ अञ्जेः सिचि । ७१२७१॥ सुसुधूज्यः परस्मैपदेषु । ७१२७२॥ यमरमनमातांसङ्का । ७१२७३॥
स्मिपूङ्खञ्जशांसनि । ७१२७४॥ किरश्चयंचभ्यः । ७१२७५॥ रुदादिभ्यः सार्चधातुके । ७१२७६॥ ईशः से । ७१२७७॥ ईडजनोर्ध्वे च । ७१२७८॥
लिङः सलो नन्त्यस्य । ७१२७९॥ अतोयेयः । ७१२८०॥ आतोडितः । ७१२८१॥ आनेसुक् । ७१२८२॥ ईदासः । ७१२८३॥ अष्टनआ ।
विभक्तौ । ७१२८४॥ रायोहलि । ७१२८५॥ युष्मदस्मदोरनादेशे । ७१२८६॥ द्वितीयायाञ्च । ७१२८७॥ प्रथमायाश्चद्विवचने भाषायाम् । ७१२८८॥
योचि । ७१२८९॥ शेवेलोपः । ७१२९०॥ मपय्यन्तस्य । ७१२९१॥ युवावौद्विवचने । ७१२९२॥ यूयवयौजसि । ७१२९३॥ ताहौसौ । ७१२९४॥
तुभ्यमह्योडःपि । ७१२९५॥ तवममोडःसि । ७१२९६॥ त्वमावेकवचने । ७१२९७॥ प्रत्ययोत्तरपदयोश्च । ७१२९८॥ त्रिचतुरोः स्त्रि
यांतिसृचतसृ । ७१२९९॥ अचिरकृतः । ७१३००॥ जरायाजरसन्यतरस्याम् । ७१३०१॥ त्यदादीनामः । ७१३०२॥ किमः कः । ७१३०३॥
कुतिहोः । ७१३०४॥ क्वाति । ७१३०५॥ तदोः सः सावनन्त्ययोः । ७१३०६॥ अदस औसुलोपश्च । ७१३०७॥ इदमोमः । ७१३०८॥
दस्य । ७१३०९॥ यः सौ । ७१३१०॥ इदोस्यपुंसि । ७१३११॥ अनाप्यकः । ७१३१२॥ हलिलोपः । ७१३१३॥ मजैर्द्विः । ७१३१४॥
अचोऽज्जिगति । ७१३१५॥ अतउपधायाः । ७१३१६॥ तद्धितेष्वचामादेः । ७१३१७॥ कितिच । ७१३१८॥ सिचिमभाविद्वसन्यच
स्तातो जराया अष्टादश ॥ ॥ इतिसप्तमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥ २॥ ॥ देविकाशिंशयादित्यनाइदीर्घसत्रश्रेयसामात्र ॥ ३॥

अ० ३४ कैकयमित्रयुगलपानांयादे रियः ॥ ७३३॥ शनष्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामेच ॥ ७३३॥ द्वादीनाञ्च ॥ ७३३॥ अन्यग्रोधस्य च केवल
 स्मा ॥ ७३३॥ न कर्मव्यतिहारे ॥ ७३३॥ स्वागतादीनाञ्च ॥ ७३३॥ श्वादेरिजि ॥ ७३३॥ पदान्तस्यान्यतरस्याम् ॥ ७३३॥ उत्तरपदस्य च
 ७३३॥ अवयवाट्टतोः ॥ ७३३॥ सुसर्वाद्वाञ्जनपदस्य ॥ ७३३॥ दिशो मद्राणाम् ॥ ७३३॥ प्राचां ग्रामनगराणाम् ॥ ७३३॥ सं
 ख्यायाः संवत्सरसंख्यस्य च ॥ ७३३॥ वर्षस्याभविष्यति ॥ ७३३॥ परिमाणान्तस्यासंज्ञाशानयोः ॥ ७३३॥ जेमोष्टपदानाम् ॥ ७३३॥
 ३१७॥ हृद्गसिंघन्ते पूर्वपदस्य च ॥ ७३३॥ अनुशतिकादीनाञ्च ॥ ७३३॥ देवताहन्ते च ॥ ७३३॥ नेन्द्रस्य परस्य ॥ ७३३॥ दीर्घाच्च
 वरुणस्य ॥ ७३३॥ प्राचां नगरान्ते ॥ ७३३॥ जङ्गलधेनुवलजान्तस्य विभाषितसुत्तरम् ॥ ७३३॥ अर्धात्परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा
 ७३३॥ नातः परस्य ॥ ७३३॥ प्रवाहणस्य ढे ॥ ७३३॥ तत्प्रत्ययस्य च ॥ ७३३॥ नञ्सुचीश्चरक्षेत्रज्ञकुशलनिपुणानाम् ॥ ७३३॥
 यथातथयथापुरयोः पर्यायेण ॥ ७३३॥ हनस्तोचिणलोः ॥ ७३३॥ आतोयुकचिण्कृतोः ॥ ७३३॥ नोदातोपदेशस्य मान्त
 स्थानाचमेः ॥ ७३३॥ जनिवधोश्च ॥ ७३३॥ अर्ति ह्रीं लीरीकू योक्ष्मायातां पुङ्गो ॥ ७३३॥ शास्त्रासाह्यावेयां युक् ॥ ७३३॥
 ३७॥ वोविधूनने जुक् ॥ ७३३॥ लीलोर्गुलुकावन्यतरस्यां स्नेहविपातने ॥ ७३३॥ भियो हेतुभयेषुक् ॥ ७३३॥ स्फायोव ॥ ७३३॥
 ४१॥ श्वादेरगतौतः ॥ ७३३॥ रुहः पो न्यतरस्याम् ॥ ७३३॥ प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यास्तद्दाप् सुपः ॥ ७३३॥ नयासयोः ॥ ७३३॥
 उदीचा मातः स्थानेयकपूर्वायाः ॥ ७३३॥ भस्त्रे वाजाशाह्स्वानज्यूर्वाणामपि ॥ ७३३॥ अभाषितपुंस्काच्च ॥ ७३३॥ आ
 दाचार्याणाम् ॥ ७३३॥ ठस्येकः ॥ ७३३॥ इ सु सुक्तान्तात्कः ॥ ७३३॥ चजोः कुचिण्यतोः ॥ ७३३॥ न्यङ्कादीनाञ्च ॥ ७३३॥

रा०
 ३४

होहन्तेर्णिन्नेषु।१।३।५४।अभ्यासाच्च।१।३।५५।हेरचडि।१।३।५६।सन्लितोर्जे।१।३।५७।विभाषाचे।१।३।५८।नक्तादे।१।३।५९।अजि
त्रज्योश्च।१।३।६०।भुजत्युल्लोपाप्युपतापयो।१।३।६१।प्रयाजानुयाजोयज्ञादे।१।३।६२।वज्रैर्गतौ।१।३।६३।ओकउचःके।१।३।६४।ण्यआ
वश्यके।१।३।६५।यजयाचरुचप्रवचर्चश्च।१।३।६६।वचोशब्दसंज्ञायाम्।१।३।६७।प्रयोज्यनियोज्योशकार्ये।१।३।६८।भोज्यंभक्ष्ये
१।३।६९।घोर्लोपोलेटिवा।१।३।७०।ओतःप्यनि।१।३।७१।क्त्स्याचि।१।३।७२।लुग्वादुहदिहलिहगुहामात्मनेपदेदन्त्ये।१।३।७३।
शमामष्टानां दीर्घः श्यनि।१।३।७४।ष्टिबुक्कुमुचमांशिति।१।३।७५।क्रमःपरस्मैपदेषु।१।३।७६।इषुगमियमांछः।१।३।७७।पाश्चा
ध्यास्थान्नादाण्डश्यर्तिसर्तिशब्दसदापिवजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्चधौशीयसीदा।१।३।७८।ज्ञाजनोर्जा।१।३।७९।यादी
नां ह्रस्वः।१।३।८०।मीनातेर्निगमे।१।३।८१।मिदेर्गुणः।१।३।८२।जुसिच।१।३।८३।सार्वधातुकार्द्धधातुकयोः।१।३।८४।जाग्रोवि
चिण्णलुडित्सु।१।३।८५।पुगन्तलघुपधस्यच।१।३।८६।नाभ्यस्तस्याचिपितिसार्वधातुके।१।३।८७।भूसुवोस्तिडि।१।३।८८।
उतोवृद्धिर्लुकिहलि।१।३।८९।ऊर्णोतेर्विभाषा।१।३।९०।गुणोपक्ते।१।३।९१।तणहदम्।१।३।९२।ब्रुवईट्।१।३।९३।यङोवा।
१।३।९४।हुरुस्तुशम्यमःसार्वधातुके।१।३।९५।अस्तिसिचोपक्ते।१।३।९६।वहलञ्छन्दसि।१।३।९७।रुदश्चपञ्चभ्यः।१।३।९८।अ
ङ्गार्ग्यगालवयोः।१।३।९९।अदःसर्वेषाम्।१।३।१००।अतोदीर्घोयजि।१।३।१०१।सुयिच।१।३।१०२।बहुवचनेऽत्येत।१।३।१०३।ओसिच
।१।३।१०४।आडिचापः।१।३।१०५।सम्बुद्धौच।१।३।१०६।अम्वार्यनचोर्ह्रस्वः।१।३।१०७।ह्रस्वस्यगुणः।१।३।१०८।जसिच।१।३।१०९।क्त्
तोडिःसर्वनामस्थानयोः।१।३।११०।घेडिति।१।३।१११।आण्णद्याः।१।३।११२।याडापः।१।३।११३।सर्वनामस्थानाद्द्वस्वश्च।१।३।११४।

अ० विभाषाद्वितीयात्तृतीयाभ्याम्। ७।३।११५। डे। रम्। द्या। मी। भ्यः। ७।३।११६। इ। दु। ज्या। म्। ७।३।११७। औ। त्। ७।३।११८। अच्। चेः। ७।३।११९। आ। डो। ना।
 ३५ स्त्रियाम्। ७।३।१२०। दे। वि। का। दे। वता। स्फा। यो। भुज। न्यु। ओ। मी। ना। ते। र। तो। दी। र्घो। विं। शतिः॥ इति सप्तमाध्यायस्य तृतीयः पादः॥ ३॥ णौ च ड्युपधाया
 ह्रस्वः। ७।४।१। ना। ग्लो। पि। शा। स्तृ। दिताम्। ७।४।२। भ्राज। भास। भाष। दी। पजीव। मी। लपीडा। मन्यतरस्याम्। ७।४।३। लोपः। पि। वते। री। चा। भ्यासं। स्य। ७।
 ४।४। ति। एते। रि। त्। ७।४।५। जिघ्रते। र्वा। ७।४।६। उ। ऋत्। ७।४।७। नित्यच्छंदसि। ७।४।८। दयते। दिगिलिटि। ७।४।९। ऋतश्च संयोगादेर्गुणः। ७।
 ४।१०। ऋच्छृत्युताम्। ७।४।११। मृहृमां ह्रस्वोवा। ७।४।१२। के। णः। ७।४।१३। न। कपि। ७।४।१४। आपोऽन्यतरस्याम्। ७।४।१५। ऋहृशोडिः। गुणः।
 ७।४।१६। अस्पते। स्युक्। ७।४।१७। म्वयते। रः। ७।४।१८। पतः। पुम्। ७।४।१९। वचउम्। ७।४।२०। शीडः। सार्धधातुके। गुणः। ७।४।२१। अयङ्। पिङ्गि
 ति। ७।४।२२। उपसर्गाद्विस्व ऊहतेः। ७।४।२३। एते। लिङि। ७।४।२४। अकृत्सार्धधातुकयोर्दीर्घः। ७।४।२५। चोच। ७।४।२६। रीडृत्तः। ७।४।२७
 रिडृशयग्लिङ्। ७।४।२८। गुणोर्त्तिसंयोगाद्योः। ७।४।२९। यडिच। ७।४।३०। ई। घ्राध्रोः। ७।४।३१। अस्पचौ। ७।४।३२। क्यचिच। ७।४।३३। अ
 प्रानोयोदन्यधनायाबुभुक्षापिपासागर्हेषु। ७।४।३४। नच्छन्दस्यपुत्रस्य। ७।४।३५। दुरस्युर्द्रविणस्युर्दृषण्यतिरिषण्यति। ७।४।३६। अश्वा
 घस्यात्। ७।४।३७। देवसुमनयो र्यजुषिकाठके। ७।४।३८। कव्यध्वर एतनस्यर्चिलोपः। ७।४।३९। द्यतिस्यतिमास्यामिति किति। ७।४।४०।
 शास्त्रे। अन्यतरस्याम्। ७।४।४१। दधातेर्हिः। ७।४।४२। जहातेश्चक्ति। ७।४।४३। विभाषाच्छन्दसि। ७।४।४४। सुधितवसुधितनेमधितधिघ
 धिषीयच। ७।४।४५। दौदह्योः। ७।४।४६। अचउपसर्गात्तः। ७।४।४७। अपोभिः। ७।४।४८। सः स्याऽर्द्धधातुके। ७।४।४९। तासस्त्योर्लोपः॥
 ७।४।५०। रिच। ७।४।५१। ह। एति। ७।४।५२। र्मीवर्णयोर्दीर्घोवेव्योः। ७।४।५३। सनिमीमाद्युरभलभशकपतपदामचड्स। ७।४।५४। आप

रा०
 ३५

ज्ञपृथामीत् ॥ ७४५ ॥ ५५ दम्भ इच्च ॥ ७४५ ॥ ५६ मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा ॥ ७४५ ॥ ५७ अत्र लोपोऽभ्यासस्य ॥ ७४५ ॥ ५८ ह्रस्वः ॥ ७४५ ॥ ५९ हलादिः
शेषः ॥ ७४५ ॥ ६० शर्पूर्वास्त्रियः ॥ ७४५ ॥ ६१ कुहोश्च ॥ ७४५ ॥ ६२ न कवते र्यडि ॥ ७४५ ॥ ६३ कृषेच्छुन्दसि ॥ ७४५ ॥ ६४ दोधति दर्द्धति दर्द्धति विवो
भूतुते तिक्तेऽलर्ष्याऽपनीफणत्सं सनिष्यदत्करिक्त्कनिक्त्कदभ्रिभ्रद्विध्व तोद्विद्युतत्तरिन्नतः सरीसृपत्तं वरीहृजन्म मेज्याऽग
नीग नीतिच ॥ ७४५ ॥ ६५ उरत् ॥ ७४५ ॥ ६६ द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम् ॥ ७४५ ॥ ६७ अय्यथोलिटा ॥ ७४५ ॥ ६८ दीर्घद्वयः किति ॥ ७४५ ॥ ६९ अ
त आदेः ॥ ७४५ ॥ ७० तस्मान्नुड्दिहलः ॥ ७४५ ॥ ७१ अश्रोतेश्च ॥ ७४५ ॥ ७२ भवतेरः ॥ ७४५ ॥ ७३ सस्त्वेति निगमे ॥ ७४५ ॥ ७४ निजान्नयाणां गुणः
श्लो ॥ ७४५ ॥ ७५ भ्रजामित् ॥ ७४५ ॥ ७६ अर्तिपिपत्योश्च ॥ ७४५ ॥ ७७ बहुलं छन्दसि ॥ ७४५ ॥ ७८ सन्यतः ॥ ७४५ ॥ ७९ ओः पुमण्यपरो ॥ ७४५ ॥ ८० ॥
स्त्रवतिष्ठणोतिद्रवतिमवतिप्रवतिच्यवतीनां वा ॥ ७४५ ॥ ८१ गुणो यद् लुकोः ॥ ७४५ ॥ ८२ दीर्घो कितः ॥ ७४५ ॥ ८३ नीग्वभ्रुसंसुध्वंसुभ्रं
सुकसपतपदस्कन्दाम् ॥ ७४५ ॥ ८४ नुगतोऽनुनासिकान्तस्य ॥ ७४५ ॥ ८५ जपजभदहदशभञ्जपशाञ्च ॥ ७४५ ॥ ८६ चरफलोश्च ॥ ७४५ ॥
८७ उत्परस्याऽतः ॥ ७४५ ॥ ८८ तिच ॥ ७४५ ॥ ८९ दीरीगृदु पधस्य च ॥ ७४५ ॥ ९० रुषिकौचलुकि ॥ ७४५ ॥ ९१ कृतश्च ॥ ७४५ ॥ ९२ सन्वह्नघुनिच
ङ् परेऽनलोपो ॥ ७४५ ॥ ९३ दीर्घो लघोः ॥ ७४५ ॥ ९४ अत्समृदृत्वरमथम्रदस्तस्य शम् ॥ ७४५ ॥ ९५ विभाषावेष्टिचेष्ट्योः ॥ ७४५ ॥ ९६ द्विगणः
॥ ७४५ ॥ ९७ णौचशीङः शाच्छे शर्पूर्वास्त्रिवतिसप्तदश ॥ ॥ इति श्रीसप्तमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥ इति सप्तमोऽध्यायः ॥ ७॥ सर्व
स्य हे ॥ ८१ ॥ ११ तस्य परमाग्नेहितम् ॥ ८१ ॥ १२ अनुदात्तश्च ॥ ८१ ॥ १३ नित्यवीक्ष्योः ॥ ८१ ॥ १४ परेर्वर्ज्जो नो ८१ ॥ १५ प्रसमुपोदः पादपूर्ण
८१ ॥ १६ उपर्यध्यधसः सामीप्ये ८१ ॥ १७ वाक्यादेरमन्त्रितस्यास्त्यासम्मतिकोपकुत्सनभर्त्सनेषु ८१ ॥ १८ एकम्वहुव्रीहिवत् ॥ ८॥

अ० ॥ ८११८॥ आवाधेचा ॥ ८११९०॥ कर्मधारयवदुत्तरेषु ॥ ८११९१॥ प्रकारेण^{पात्र}वचनस्य ॥ ८११९२॥ अकच्छेप्रियसुखयोरन्यतरस्याम् ॥ ८११९३॥
 ३६ यथास्वेयथायथम् ॥ ८११९४॥ द्वन्द्वरहस्यमर्यादावचनव्युत्क्रमणयज्ञप्रयोगाभिव्यक्तिषु ॥ ८११९५॥ पदस्य ॥ ८११९६॥ पदात् ॥ ८११९७॥
 अनुदात्तं सर्वमपादादौ ॥ ८११९८॥ आमन्त्रितस्य चा ॥ ८११९९॥ युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वान्नावौ ॥ ८१२००॥ बहुवचन
 स्य वस्त्रसो ॥ ८१२०१॥ तेमयावेकवचनस्य ॥ ८१२०२॥ त्वामौ द्वितीयायाः ॥ ८१२०३॥ नचवाहाहैवयुक्ते ॥ ८१२०४॥ पश्यार्थे श्वानालोचने
 ८१२०५॥ सपूर्वायाः प्रथमायाविभाषा ॥ ८१२०६॥ तिङो गोत्रादीनिकुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः ॥ ८१२०७॥ तिङुः तिङः ॥ ८१२०८॥ नलुट् ॥ ८१२०९॥
 निपातैर्यद्यदिहन्तकुविन्नेच्चेचण्कच्चिद्यत्रयुक्तम् ॥ ८१२१०॥ नहप्रसारम्भे ॥ ८१२११॥ सत्यम्रशे ॥ ८१२१२॥ अङ्गत्वातिलोम्ये ॥ ८१२१३॥
 हिवा ॥ ८१२१४॥ छन्दस्यनेकमपिसाकाङ्क्षम् ॥ ८१२१५॥ यावद्यथाभ्याम् ॥ ८१२१६॥ पूजायान्नानन्तरम् ॥ ८१२१७॥ उपसर्गमप्येतच्च ॥ ८१२१८॥
 ३७ तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम् ॥ ८१२१९॥ अहोचा ॥ ८१२२०॥ शेषेविभाषा ॥ ८१२२१॥ पुणचपरीप्सायाम् ॥ ८१२२२॥ नचित्सनुसैषणायाम्
 ८१२२३॥ किङ्किः याप्रश्नेनुपसर्गमप्रतिषिद्धम् ॥ ८१२२४॥ लोपेविभाषा ॥ ८१२२५॥ एहिमन्येमहासेलट् ॥ ८१२२६॥ जात्वपूर्वम् ॥ ८१२२७॥
 किमृत्तञ्चिदुत्तरम् ॥ ८१२२८॥ आहोउताहोचाऽनन्तरम् ॥ ८१२२९॥ शेषेविभाषा ॥ ८१२३०॥ गत्यर्थलोटात्पुनंचेत्कारकंसर्वान्यत् ॥ ८१२३१॥
 ८१२३२॥ लोड् ॥ ८१२३३॥ विभाषितं सोपसर्गमनुत्तमम् ॥ ८१२३४॥ हन्तचा ॥ ८१२३५॥ आमएकान्तरमामन्त्रितमनन्तिके ॥ ८१२३६॥ यद्धि
 तुपरं छन्दसि ॥ ८१२३७॥ चनचिदिवगोत्रादितद्धिताऽम्रेडिते घगतेः ॥ ८१२३८॥ चादिषुचा ॥ ८१२३९॥ चवायोगेप्रथमा ॥ ८१२४०॥ हे
 तिस्रियायाम् ॥ ८१२४१॥ अहेतिविनियोगेचा ॥ ८१२४२॥ चाहलोपएवेत्यवधारणम् ॥ ८१२४३॥ चादिलोपेविभाषा ॥ ८१२४४॥ चैवावेति

रा०
 ३६

चच्छन्दसि। ८। १। ६४। एकान्याभ्यां समर्थाभ्याम्। ८। १। ६५। यद्वृत्तान्नित्यम्। ८। १। ६६। पूजनात्पूजितमनुदात्तं काटादिभ्यः। ८। १। ६७। सग
तिरपितिङ्। ८। १। ६८। कुत्सनेचसुप्यगोत्रादौ। ८। १। ६९। गतिर्गती। ८। १। ७०। तिङि चोदात्तवर्ति। ८। १। ७१। आमन्त्रितम्पूर्वमविद्यमानवत्
। ८। १। ७२। नामन्त्रिते समानाधिकरणे सामान्यवचनम्। ८। १। ७३। विभाषितं विशेषवचने बहुवचनम्। ८। १। ७४। सर्वस्य बहुवचनशेषे
अहेति चतुर्दश॥ इति अष्टमाध्यायस्य प्रथमः पादः॥ १॥ पूर्वत्रासिद्धम्। ८। २। १। नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुर्विधिषु कृति। ८। २। २। नमुने।
। ८। २। ३। उदात्तस्वरितयोर्वर्णः स्वरितो नुदात्तस्य। ८। २। ४। एकादेश उदात्ते नोदात्तः। ८। २। ५। स्वरितो वानुदात्ते पदादौ। ८। २। ६। नलोपः प्रा
तिपदिकान्तस्य। ८। २। ७। नडिः सम्बुद्धौ। ८। २। ८। मादुपधायाश्च मतोर्वो यवादिभ्यः। ८। २। ९। अयः। ८। २। १०। संज्ञायाम्। ८। २। ११। आ
संदीवदृष्टीवच्चक्रीवत्कक्षीवद्रुमण्वच्चर्मण्वती। ८। २। १२। उदन्वानुदधौ च। ८। २। १३। राजन्वान्तो राज्ञ्ये। ८। २। १४। छन्दसीरः। ८। २। १५।
अनो नुटः। ८। २। १६। नाह्वस्य। ८। २। १७। कपोरोलः। ८। २। १८। उपसर्गस्यायतौ। ८। २। १९। ग्रायडिः। ८। २। २०। अचि विभाषा। ८। २। २१। परे
श्च घाङ्गयोः। ८। २। २२। संयोगान्तस्य लोपः। ८। २। २३। रात्सस्य। ८। २। २४। धिचा। ८। २। २५। झलो झलि। ८। २। २६। ह्रस्वादंगात्। ८। २। २७। इ
ट् इटि। ८। २। २८। स्कोः संयोगाद्योरन्ते च। ८। २। २९। चोः कुः। ८। २। ३०। होठः। ८। २। ३१। दादेर्धातोर्धः। ८। २। ३२। वाद्रुहमुहण्युहणिहाम्। ८।
। २। ३३। नहो धः। ८। २। ३४। आहस्यः। ८। २। ३५। त्रश्च भ्रश्च स्रजमजयजराजभ्राज छशां षः। ८। २। ३६। एकाचो वशो भवभूषन्तस्य स्त्वोः।
८। २। ३७। दधस्तथोश्च। ८। २। ३८। झलां जशोन्ते। ८। २। ३९। झवस्तथोर्द्धो धः। ८। २। ४०। षढोः कः सि। ८। २। ४१। रदाभ्यान्निष्ठातो नः पूर्वस्य च
दः। ८। २। ४२। संयोगादेशतो धातोर्वण्वतः। ८। २। ४३। ल्वादिभ्यः। ८। २। ४४। ओदितश्च। ८। २। ४५। क्षियोर्द्धोर्धात्। ८। २। ४६। श्योस्पर्शः॥ ६॥

अ०। ८२। ४७। अञ्चो न पादाने। ८२। ४८। दिवो विजिगीषायाम्। ८२। ४९। निर्वाणोऽवाते। ८२। ५०। सुषः कः। ८२। ५१। पचो वः। ८२। ५२।
 ३७। स्थायो मः। ८२। ५३। प्रस्त्यो न्यतरस्याम्। ८२। ५४। अनुपसर्गात्कुक्षीवृक्षशोह्याघाः। ८२। ५५। नुदविदो न्द्राघ्राहीभ्यो न्यतरस्या
 म्। ८२। ५६। नध्याख्यापृमूर्च्छिमदाम्। ८२। ५७। वित्तो भोगप्रत्यययोः। ८२। ५८। भित्तं शकलम्। ८२। ५९। ऋणमाऽधमय्ये। ८२। ६०।
 नसत्तनिषत्ताऽनुत्तप्रतृत्तस्त्तं गूतीनि छन्दसि। ८२। ६१। कित्यत्ययस्य कुः। ८२। ६२। नशेर्वा। ८२। ६३। मोनोधातोः। ८२। ६४। म्योश्च।
 ८२। ६५। ससजुषोरुः। ८२। ६६। अत्रयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च। ८२। ६७। अहन्। ८२। ६८। रेसुपि। ८२। ६९। अन्नरूधरवरित्पुमयथा छ
 न्दसि। ८२। ७०। भुवश्च महाव्याहते। ८२। ७१। वसुस्वसुध्वं स्वनदुहांदः। ८२। ७२। तिप्पनस्ते। ८२। ७३। सिपिधातो रूर्वा। ८२। ७४। दश्च
 ८२। ७५। रूर्वा रूपधायादीर्घङ्कः। ८२। ७६। हलिचा। ८२। ७७। उपधायाञ्च। ८२। ७८। नभकुर्त्तुगम्। ८२। ७९। अदसोऽसेर्दुदोमः। ८२।
 ८०। एतर्द्धहुवचने। ८२। ८१। वाक्यस्य टेऽपुत उदात्तः। ८२। ८२। प्रत्यभिवादेऽमूद्रे। ८२। ८३। दराहूते च। ८२। ८४। हे हे प्रयोगे हे हयोः
 ८२। ८५। गुणे रन्तो न न्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम्। ८२। ८६। ओमभ्यादाने। ८२। ८७। ये यज्ञकर्मणि। ८२। ८८। प्रणवष्टेः। ८२। ८९। या
 ज्यान्तः। ८२। ९०। बृहिमेष्पश्रोषडौ षडावहानामादेः। ८२। ९१। अग्नीत्येषणे परस्य च। ८२। ९२। विभाषा एष्टप्रतिवचने हो। ८२।
 ९३। निगृह्यानुयोगे च। ८२। ९४। आग्नेडितमर्त्तने। ८२। ९५। अङ्गयुक्तन्तिङाऽकासम्। ८२। ९६। विचार्यमाणानाम्। ८२। ९७।
 पूर्वन्तुभाषायाम्। ८२। ९८। प्रतिश्रवणे च। ८२। ९९। अनुदात्तप्रश्नान्ताभिपूजितयोः। ८२। १००। चिदिति चोपमार्थे प्रयुज्यमा
 ने। ८२। १०१। उपरिस्विदासीदिति च। ८२। १०२। स्वरितमाग्नेडितेऽसूयासम्मतिकोपकुत्सनेषु। ८२। १०३। क्षियाशीः प्रेषेषु तिङा।

रा०
 ३७

काङ्क्षमा ॥ ८२ ॥ १०४ ॥ अनन्त्यस्यापि मन्त्राख्यानयोः ॥ ८२ ॥ १०५ ॥ सुतावैचङ्कितौ ॥ ८२ ॥ १०६ ॥ एचोप्रगृह्यस्यादूराद्वृत्ते पूर्वस्यार्द्धस्याऽदु
त्तरस्येद्वृत्तौ ॥ ८२ ॥ १०७ ॥ तयोर्व्यावचिसंहितायाम् ॥ ८२ ॥ १०८ ॥ पूर्वत्रापि षट्ठोर्नसत्तैतद्विदित्यष्टौ ॥ इति अष्टमोऽध्यायस्य द्वितीयः
पादः ॥ २ ॥ मतुवसोरुः सम्बुद्धौ चन्दसि ॥ ८३ ॥ १ ॥ अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तुवा ॥ ८३ ॥ २ ॥ आतोऽतिनित्यम् ॥ ८३ ॥ ३ ॥ अनुनासिकात्परो
ऽनुस्वारः ॥ ८३ ॥ ४ ॥ समः सुटि ॥ ८३ ॥ ५ ॥ पुमः खय्यमपरे ॥ ८३ ॥ ६ ॥ नष्टुव्यप्रशान् ॥ ८३ ॥ ७ ॥ उभययस्यु ॥ ८३ ॥ ८ ॥ दीर्घादितिसमानपादे ॥ ८३ ॥
३ ॥ ९ ॥ नृन्ये ॥ ८३ ॥ १० ॥ स्वतवान्यायो ॥ ८३ ॥ ११ ॥ कानाम्रेडिते ॥ ८३ ॥ १२ ॥ ढोढेलोपः ॥ ८३ ॥ १३ ॥ रोरि ॥ ८३ ॥ १४ ॥ खरवसानयोर्विसर्जनीयः ॥
८३ ॥ १५ ॥ रोः सुपि ॥ ८३ ॥ १६ ॥ भोभगो अघो अपूर्वस्य योशि ॥ ८३ ॥ १७ ॥ व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्या ८३ ॥ १८ ॥ लोपः शाकल्यस्या
८३ ॥ १९ ॥ ओतो गार्ग्यस्या ८३ ॥ २० ॥ उजिचपदे ॥ ८३ ॥ २१ ॥ हलिसर्वेषाम् ॥ ८३ ॥ २२ ॥ मोनुस्वारः ॥ ८३ ॥ २३ ॥ नश्चापदान्तस्य झलि ॥ ८३ ॥ २४
मोर्गजिसमः कौ ॥ ८३ ॥ २५ ॥ हेमपरेवा ॥ ८३ ॥ २६ ॥ नपरेन ॥ ८३ ॥ २७ ॥ झोः कुक्कुटुक्शरि ॥ ८३ ॥ २८ ॥ डः सिधुट् ॥ ८३ ॥ २९ ॥ नश्चा ८३ ॥ ३० ॥
शितुकु ॥ ८३ ॥ ३१ ॥ डः मोह्रस्वादचिडः मुणित्यम् ॥ ८३ ॥ ३२ ॥ मयउजोवोवा ॥ ८३ ॥ ३३ ॥ विसर्जनीयस्य सः ॥ ८३ ॥ ३४ ॥ शर्ष्य परे विसा
र्जनीयः ॥ ८३ ॥ ३५ ॥ वाशरि ॥ ८३ ॥ ३६ ॥ कुषोऽकऽपौच ॥ ८३ ॥ ३७ ॥ सोपदादौ ॥ ८३ ॥ ३८ ॥ इणः सुः ॥ ८३ ॥ ३९ ॥ नमस्फुरसोर्गत्योः ॥ ८३ ॥
४० ॥ इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य ॥ ८३ ॥ ४१ ॥ तिरसोऽन्यतरस्याम् ॥ ८३ ॥ ४२ ॥ द्विस्त्रिश्चतुरितिकृत्वार्थे ॥ ८३ ॥ ४३ ॥ इसुसोः सामर्थ्ये ॥ ८३ ॥
४४ ॥ नित्यं समासे तुत्तरपदस्य स्य ॥ ८३ ॥ ४५ ॥ अतः कृकमिकं सकुम्भपात्रकुशाकर्णौ घनव्ययस्य ॥ ८३ ॥ ४६ ॥ अधः शिरसी
पदे ॥ ८३ ॥ ४७ ॥ कस्कादिषु च ॥ ८३ ॥ ४८ ॥ चन्दसिवाप्राम्रेडितयोः ॥ ८३ ॥ ४९ ॥ कः करत्करतिकृद्विहते घनदिते ॥ ८३ ॥ ५० ॥ ॥

अ० पञ्चम्याः परवध्यर्थे। ण३। ५१। पातौ च बहुलम्। ण३। ५२। षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्टपारपदपयस्योषेषु। ण३। ५३। ड्डायावा। ण३। ५४। अ०
 ३० पदान्तस्य मृद्वन्यः। ण३। ५५। सहेः साडः सः। ण३। ५६। ड्णकोः। ण३। ५७। नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेपि। ण३। ५८। आदेशप्रत्यययोः
 । ण३। ५९। शासिवसिघसीनाञ्च। ण३। ६०। स्तोति ण्यैरेव षण्यभ्यासात्। ण३। ६१। सः स्विदिस्वदिसहीनाञ्च। ण३। ६२। प्राक्सितादङ्
 व्यवायेपि। ण३। ६३। स्यादिषभ्यासेन चाभ्यासस्य। ण३। ६४। उपसर्गात्सु नोति सुवति स्म तिस्रोति स्तोभति स्यासेन पसेधसि च सञ्जु
 स्वञ्जाम्। ण३। ६५। सदिरप्रतेः। ण३। ६६। स्तभेः। ण३। ६७। अवाचालम्बनाऽविद्वययोः। ण३। ६८। वेऽस्व नोभोजने। ण३। ६९। परिनि
 विभ्यः सेवसितसयसिबुसहसुहसुस्वञ्जाम्। ण३। ७०। सिवादीनां वाङ्मव्यवायेपि। ण३। ७१। अनुविपर्यभिनिभ्यः स्पन्दतेरप्रा
 णिषु। ण३। ७२। वेः स्कन्देरनिष्ठायाम्। ण३। ७३। परेश्च। ण३। ७४। परिस्कन्दः प्राच्यभरतेषु। ण३। ७५। स्फुरति स्फुलल्योर्निर्निविभ्यः। ण३। ७६।
 । ण३। ७७। वेः स्कन्नातेर्नित्यम्। ण३। ७८। ड्णः षोर्ध्वलुङ्घिः षोर्ध्वलुङ्घात्। ण३। ७९। विभाषेतः। ण३। ८०। समासेङ्गुलैः सङ्गुलैः। ण३। ८१। भीरोऽस्या
 नम्। ण३। ८२। अग्नेः स्तुक्तोमसोमाः। ण३। ८३। ज्योतिरयुषः स्तोमः। ण३। ८४। मातृपितृभ्यां स्वसा। ण३। ८५। मातुः पितुर्भ्यामन्यतरस्या
 म्। ण३। ८६। अभिनिसस्तनः शब्दसंज्ञायाम्। ण३। ८७। उपसर्गप्रादुर्भ्यामस्तिर्य्यचपरः। ण३। ८८। सुविनिर्दुर्भ्यः सुपिसूतिसमाः। ण३। ८९।
 । ण३। ९०। निनदीभ्यां स्नातेः कौशले। ण३। ९१। सूत्रप्रतिष्ठातम्। ण३। ९२। कपिष्ठले गोत्रौ। ण३। ९३। प्रष्टोऽग्रगामिनि। ण३। ९४। हृष्टासनयो
 विष्टरः। ण३। ९५। छन्दोनाम्नि च। ण३। ९६। गवियुधिभ्यां स्थिरः। ण३। ९७। विकुशमिपरिभ्यः स्थलम्। ण३। ९८। अम्वाँवगोभूमिस
 व्यापद्वित्रिकुशेकुशकङ्कुमज्जिपुञ्जिपरमेवर्हिर्दिव्यग्निभ्यः स्थः। ण३। ९९। सुषामादिषु च। ण३। १००। एतिसञ्ज्ञायामगात् ॥

रा०
 ३८

॥ ८३॥ ८६॥ नक्षत्राद्वा ॥ ८३॥ १००॥ ह्रस्वात्तादौ तद्धिते ॥ ८३॥ १०१॥ निसस्तपता वनासेवने ॥ ८३॥ १०२॥ युष्मत्तत्तत्तत्तु घंतः पादः ॥ ३॥
य जुष्ये केषाम् ॥ ८३॥ १०४॥ स्तुतस्तोमयो म्मुन्दसि ॥ ८३॥ १०५॥ पूर्वपदात् ॥ ८३॥ १०६॥ सुजः ॥ ८३॥ १०७॥ सनोतेरनः ॥ ८३॥ १०८॥ स
हेः एतनर्ताभ्याञ्च ॥ ८३॥ १०९॥ नरपरसृपिस्तु जित्स्य शित्स्य हिसवनादीनाम् ॥ ८३॥ ११०॥ सात्पदाद्योः ॥ ८३॥ १११॥ सिचोयडि ॥ ८३॥
११२॥ सेधतेर्गतौ ॥ ८३॥ ११३॥ प्रतिस्तब्ध निस्तब्धौ च ॥ ८३॥ ११४॥ सोढः ॥ ८३॥ ११५॥ स्तम्भुसिबुसहोचडि ॥ ८३॥ ११६॥ सुनोतेः स्यस
नोः ॥ ८३॥ ११७॥ सदिसंज्योः परस्य लिटि ॥ ८३॥ ११८॥ निम्बभिभ्योऽव्यवायेवाच्छन्दसि ॥ ८३॥ ११९॥ मतुवसोरुजिचेदुदुपधस्तौति ॥
प्योभीरोर्ह्रस्वादेकोनविंशतिः ॥ इत्यष्टमाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥ ३॥ समाप्तः ॥ रषाभ्यां नोणः समानपदे ॥ ८४॥ १॥ अडुघाडु ॥
म्बवायेपि ॥ ८४॥ २॥ पूर्वपदात्संज्ञायामगः ॥ ८४॥ ३॥ वनम्युरगामिभ्रकासिध्रकासारिकाकोटरग्नेभ्यः ॥ ८४॥ ४॥ अनिरन्तः शरे
सुप्तश्चात्रकार्ष्णखदिरपीयूषाभ्यो संज्ञायामपि ॥ ८४॥ ५॥ विभाषौषधिवनस्यतिभ्यः ॥ ८४॥ ६॥ अहोऽदन्तात् ॥ ८४॥ ७॥ बाहना
माहितात् ॥ ८४॥ ८॥ पानदेशे ॥ ८४॥ ९॥ वाभावकरणयोः ॥ ८४॥ १०॥ प्रातिपदिकान्तनुम्बिभक्तिषु च ॥ ८४॥ ११॥ एकाजुत्तरपदेणः
॥ ८४॥ १२॥ कुमतिच ॥ ८४॥ १३॥ उपसर्गादसमासेपिणोपदेशस्य ॥ ८४॥ १४॥ हिनुमीना ॥ ८४॥ १५॥ अनिलोद्वा ॥ ८४॥ १६॥ नेर्गदन
दपतपदेषुमास्पतिहन्ति यातिवातिद्रातिष्ठातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोतिदेग्धिषु च ॥ ८४॥ १७॥ शेषेविभाषाकरवादा
वषान्तउपदेशो ॥ ८४॥ १८॥ अनितेः ॥ ८४॥ १९॥ अन्तः ॥ ८४॥ २०॥ उभौसाभ्यासस्य ॥ ८४॥ २१॥ हन्तेरत्पूर्वस्य ॥ ८४॥ २२॥ वमोर्वा
८४॥ २३॥ अन्तरदेशो ॥ ८४॥ २४॥ अयनञ्च ॥ ८४॥ २५॥ छन्दस्पदवग्रहात् ॥ ८४॥ २६॥ नञ्धातुस्थोरुषुभ्यः ॥ ८४॥ २७॥ उपसर्गा

अ० दनोत्तरः। ण४। २०। कृत्यचः। ण४। २०। नेर्विभाषा। ण४। ३०। हलश्चेजुपधात्। ण४। ३१। इजादेः सनुमः। ण४। ३२। वानिसनिष्निन्दा
 ३६ मू। ण४। ३३। नभाभूपूकमिगमिप्यायीवेयाम्। ण४। ३४। वात्यदान्तात्। ण४। ३५। नशेः वान्तस्य। ण४। ३६। पदान्तस्य। ण४। ३७।
 पदव्यवायेपि। ण४। ३८। सुभ्रादिषुचा। ण४। ३९। स्तोः शुनाशुः। ण४। ४०। एनाएः। ण४। ४१। नपदान्तादोरनाम्। ण४। ४२।
 तोः पि। ण४। ४३। शात्। ण४। ४४। यरोः शुनासिकेः शुनासिकोवा। ण४। ४५। अचोरहाभ्यां द्वे। ण४। ४६। अनचिचा। ण४। ४७।
 नादिन्याक्रोशेषुत्रस्य। ण४। ४८। शरेचि। ण४। ४९। निप्रभृतिषु शाकदायनस्य। ण४। ५०। सर्वत्र शाकल्यस्य। ण४। ५१। दीर्घा
 दाचार्याणाम्। ण४। ५२। झलंजशझशि। ण४। ५३। अभ्यासेचर्चि। ण४। ५४। खरिचि। ण४। ५५। वावसाने। ण४। ५६। अणो।
 प्रगृह्यस्यानुनासिकः। ण४। ५७। अनुस्वारस्य यपि परसवर्णः। ण४। ५८। वापदान्तस्य। ण४। ५९। तोर्लि। ण४। ६०। उदः स्यात्त
 म्भोः पूर्वस्य। ण४। ६१। झयोहोन्यतस्स्याम्। ण४। ६२। शश्चोदि। ण४। ६३। हलोयमांयमिलोपः। ण४। ६४। झरे झरिसवर्णे
 । ण४। ६५। उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितः। ण४। ६६। नोदात्तः स्वरितोदयमगाग्यकाश्यपगालवानाम्। ण४। ६७। अअइति
 ॥ ण४। ६८। रषाभ्यामुभौ षुनोदोऽष्टौ ॥ ॥ इत्यष्टमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥ ४ ॥ ॥ इत्यष्टमोऽध्यायस्समाप्तः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 शुभम्भूयात् ॥ ॥ श्रीरक्त ॥ ॥ शुभमस्तु ॥ ॥ श्रीसम्बत ॥ ॥ १८३४ ॥ ॥ शाके ॥ ॥ १९८६ ॥ ॥ फाल्गुन कृष्ण ३० सोमवार ॥
 शुभम् ॥ समाप्तः श्रायं ग्रन्थः ॥ तारीख ३ माह मार्च ॥ सन् १८७८ ईशवि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

रा०
 ३६

वाराणसीप्रसादस्वनियोगेनप्रयत्नतः॥काशीसंस्कृतमुद्रायामङ्कितोयंशिक्षाक्षरैः॥१॥
श्रीकाशीजीमेज्ञानवापीकेपूर्वफाटकपरश्रीविश्वनाथजीकेपासमहाराजशिवलालदुबे
जीकेमकानमेकाशीसंस्कृतमुद्रायंत्रमेछपीजिनकोलेनाहोयउनकोइसकार्यकेसंपा
दकश्रीबाबूवाराणसीप्रसादजीकेपासयाकचौरीगलीमेभार्दप्रतापसिंहजीकेदुकानप
रमिलेगी॥ ॥ शुभभूयात् ॥ ॥ ओं नमः शिवाय इति ॥ ॥ श्री ॥

ASHA ARCHIVES 3751

॥ ॥ इति अष्टाध्यायी समाप्ता ॥ ॥